मध्य प्रदेश के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

के लिये

शारीरिक शिक्षा विषय में

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

की

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2004

शोधार्थी :
कु. स्वपना सक्सेना
व्याख्याता शारीरिक शिक्षा
मेजर ध्यानचन्द शारीरिक शिक्षण संस्थान
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

मार्गदर्शक :
डॉ. ए. के. श्रीवास्तव
निदेशक, शारीरिक शिक्षा
दिल्ली इन्जीनियरिंग कॉलेज, दिल्ली-42

शोध केन्द्र

मेजर ध्यानचन्द शारीरिक शिक्षण संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

मार्गदर्शक का प्रमाण–पत्र

डॉ. ए.के. श्रीवास्तव
निदेशक शारीरिक शिक्षा
दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज दिल्ली–42

दिनांक : 09.09.2004

प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत शोध कार्य जिसका शीर्षक **"मध्यप्रदेश के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** (ग्वालियर चम्बल संभाग के विशेष सन्दर्भ में) हैं कु. स्वपना सक्सेना द्वारा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.) की पी–एच.डी. शारीरिक शिक्षा उपाधि हेतु वर्ष 2004 में प्रस्तुत किया गया है। यह शोध कार्य छात्रा ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी (उ.प्र.) द्वारा निर्धारित सभी नियमों का पालन करते हुए स्वयं मेरे निर्देशन एवं निरीक्षण में पूर्ण किया है।

मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

मार्गदर्शक

अ०कु० श्रीवास्तव

शोधकर्ता का घोषणा–पत्र

मैं घोषणा करती हूँ कि **"मध्यप्रदेश के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** शीर्षक पर ग्वालियर चम्बल संभाग के विशेष सन्दर्भ में किया गया कार्य डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव के निरीक्षण व मार्गदशन में मेजर ध्यानचन्द शारीरिक शिक्षण संस्थान बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.) केन्द्र से किया गया व शोध उपाधि समिति द्वारा स्वीकृत स्वयं मेरे द्वारा किया गया मौलिक कार्य है और इसमें जो भी सामग्री विषय को प्रतिपादन हेतु ली गई है उसका उल्लेख टिप्पणी में किया गया है तथा संदर्भ सूची में अंकित है। मैने इस शोध कार्य में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी (उ.प्र.) द्वारा निर्धारित नियमों का पालन किया है।

शोधकर्ता

स्वपना सक्सेना

कु. स्वपना सक्सेना
व्याख्याता शारीरिक शिक्षा
मेजर ध्यानचन्द शारीरिक शिक्षण संस्थान
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी
उत्तर प्रदेश

मार्गदर्शक

अ० कु० श्रीवास्तव

आभार

सर्वप्रथम मैं अपने मार्गदर्शक गुरूश्रेष्ठों के प्रति हार्दिक सम्मान व्यक्त करना चाहूँगी जिन्होंने अपने विद्यतापूर्ण व्याख्यानों से मुझे शोधग्रंथ लेखन में सहायता प्रदान की तथा जिनके साहित्य से शोध प्रबन्ध में सहायता मिली।
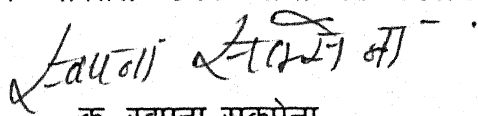
मैं ग्वालियर चम्बल संभाग के उन सभी न्यादर्श, महाविद्यालयों के प्राचार्य, कोच एवं क्रीड़ा अधिकारी तथा कार्यालयीन कर्मचारी जिन्होंने मुझे बहुमूल्य शोध से संबंधित जानकारियाँ प्रदत्त की, उन सभी की हृदय से आभारी हूँ।

शोध कार्य की पूर्णतयाः के लिये मैं आभारी हूँ शोध–प्रबन्ध के मार्गदर्शक परम् आदरणीय डॉ. अभय श्रीवास्तव शारीरिक शिक्षा निदेशक दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग शाहबाद, दौलतपुर बावना रोड, दिल्ली–110042 जिनके शुभाशीष, कृपापूर्ण सहयोग, असीम ज्ञान एवं अपरमित अध्ययन की क्षमताओं ने इस शोध कार्य के प्रथम अक्षर से अंतिम शब्द तक मेरा मार्गदर्शन से ही इस शोध–प्रबन्ध को पूर्ण करने में सफल हो सकीं वस्तुतः उनके प्रति अपने कृतज्ञता के भावों की शब्द अभिव्यक्ति में, मैं स्वयं को असमर्थ पाती हूँ। मैं डॉ. अभय श्रीवास्तव के प्रति सदैव आभारी रहूँगी।

गुरूमाता श्रीमती अनुजा श्रीवास्तव द्वारा प्रदत्त सहयोग के लिये आभारी हूँ जिन्होंने मुझे आशीर्वाद व शुभकामनाएँ देकर कृतज्ञ किया।

मैं अपने पिता डॉ. भगवान सहाय, माता श्रीमती स्वराज सक्सैना, बहिन डॉ. श्रृद्धा सक्सैना एवं भ्राता डॉ. मधुप कुमार एवं डॉ. मृदुल सहाय की कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे गृहकार्य से पूर्णतः मुक्त कर शोधकार्य की पूर्णता में योगदान दिया तथा प्रेरणा के स्त्रोत रहे।

अंततः मैं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के उन सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मुझे यथासमय सहयोग, संवल, प्रोत्साहन, शुभकामनायें अथवा आशीष प्रदान किया, किन्तु मैं व्यक्तिशः उनके नामों का उल्लेख करने में असमर्थ रही।

कु. स्वपना सक्सेना
व्याख्याता शारीरिक शिक्षा
मेजर ध्यानचन्द्र शिक्षा संस्थान ऑफ
फिजीकल एज्यूकेशन
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
झाँसी – उत्तर–प्रदेश

म.प्र. के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (ग्वालियर–चम्बल संभाग के विशेष सन्दर्भ में)

अनुक्रमणिका

शब्दों के संक्षिप्त रूप का प्रयोग

उ.प्र.	:	उत्तरप्रदेश
म.प्र.	:	मध्यप्रदेश
कि.मी.	:	किलो मीटर
मि.मी.	:	मिली मीटर
से.ग्रे.	:	सेन्टी ग्रेड
मी.	:	मीटर
ग्वा.	:	ग्वालियर
पृ.	:	पृष्ठ
क्र.	:	क्रमांक
%	:	प्रतिशत
शा.	:	शासकीय
अशा.	:	अशासकीय
T	:	तापमान
P	:	वर्षा

सारणी सूची

सारणी सूची

सारणी सूची

सारणी सूची

भारत में मध्यप्रदेश राज्य के
ग्वालियर – चम्बल सम्भाग
की स्थिति
N
72°
76°
80°
84°
88°
96°
36°
32°
28°
24°
20°
16°
12°
8°
राजस्थान
उत्तर प्रदेश
गुजरात
मध्य प्रदेश
बिहार
छत्तीसगढ़
महाराष्ट्र
उड़ीसा
अरब सागर
आन्ध्र प्रदेश
बंगाल की खाड़ी
हिन्द
महासागर
86°
92°

N
मध्यप्रदेश में
ग्वालियर – चम्बल सम्भाग
की स्थिति
भिण्ड
मुरैना
ग्वालियर
दतिया
श्योपुर
शिवपुरी
गुना
राजस्थान
उत्तर प्रदेश
गुजरात
छत्तीसगढ़
महाराष्ट्र
KM 100
50
0
100
200 KM
26°
24°
22°
74°E
76°
78°
80°
82°

अध्याय 1

प्रस्तावना

खेल की अवधारणा

खेलों का विकास अथवा इतिहास

खेलो के विशिष्ट लक्षण

अध्यायों का संक्षिप्त विवरण

खेल की अवधारणा :-

खेल मनुष्य के लिए प्रकृति का एक उपहार है। शिशु जन्म लेते ही मुँह से ध्वनि करता है तथा हाथ पैर चलाता है अत: यह उसकी स्वाभाविक इच्छा है। थोड़ा स्वस्थ होते ही खिलौने तथा अन्य वस्तुओं को देखकर पकड़ने को उछलता है। इन सब क्रियाओं से उसे आनन्द प्राप्त होता है। शिशु द्वारा किए गए यह खेल है, उसके इस प्रकार की क्रियाओं से उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। अत: प्राकृतिक रूप से शिशु को खेलने की प्रेरणा मिलती है। शिशु की स्वाभाविक इच्छा से शौव काल से वृद्धावस्था तक अनेक रूपों में खेल के कई परिवर्तन होते रहते है जैसे आरंभ में स्लेट या तख्ती को बल्ला व कागज की गेंद बनाकर खेलता है और बड़े होते ही आन्तरिक खेल बन्द स्पृद्धाओं तथा बाहरी स्पृद्धाओं (खुली स्पृद्धाओं) को खेलने लगता है। यथार्थ में खेल की प्रकृति में विकास, सरंक्षण, सन्तुलन और स्वास्थ्य का रहस्य निहित है अत: सभी माता-पिता चाहते है कि उसका शिशु खेले परन्तु शिशु के बडे होते ही उसके खेल भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं की अनेक विषमताओं के फलस्वरूप नियंत्रित एवं निर्धारित होते है।

"भारत वर्ष में खेल के लिए विशेष रूप से दो शब्द प्रयोग किए जाते है। एक शब्द खेल है तथा दूसरा शब्द क्रीड़ा है। खेल शब्द का यथार्थ है हिलना, जिसका अर्थ विस्तार है "कपिना" और "इधर ऊधर घूमना।" क्रीड़ा का धात्वर्थ है, आत्म विनोद"।[1]

यदि खेल शब्द को संयुक्त धातु माने तो खेल "ख" इल का योग है जिसका अर्थ होगा "आकाश चार" अर्थात् हिलना, उछलना, घूमना। अश्व के क्रीड़ा रूप और उच्छलन का वर्णन मिलता है।"[2]

संसार के विभिन्न देशों में अपने देश की भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के अनुसार खेले जाने वाले खेलों का चयन एवं स्वरूप निश्चित करते है।

आज संसार में खेले जाने वाले खेल एथलेटिक्स प्रतियोगिता (Athlete Events) दौड़ पथ (Track) तीव्रगति की दौड़ (Sprints), मधयम एवं लम्बी दूरी की दौड़े (Middle and Long Distance race), रिले दौड़े (Relleys), बाधा दौड़े (Hurding), लम्बी कूद (Running Long Jump), त्रिकूद (Triple Jump), ऊँची कूद (Running High Jump), बांस कूद (Pole Vaulting), गोला फेंकना (Shot Put) चक्का फेंकना (Discuss Throw), भाला फेंकना (Jaelin Throw), तार गोला फेंकना (Hammer Throw), इसके अतिरिक्त बेडमिन्टन (Badminton) बास्केटवॉल (Basketball), क्रिकेट (Cricket), फुटबाल (Football), वॉलीवाल (Volleyball), हॉकी (Hockey), कबड्डी (Kabaddi), खो-खो (Kho-Kho), कुश्ती (Kushti), तथा आट्या-पाट्या आदि प्रमुख है इनके अतिरिक्त भी अन्य बहुत से खेल खेले जाते है।

भारतवर्ष की भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं से सामंजस्य स्थापित कर भारतीयों ने जिन भारतीय खेलों को खेलने का चयन किया एवं प्राय: खेलते है व प्रमुख खेल कुश्ती, कबड्डी, खो-खो एवं आट्या-पाट्या है। इसके अतिरिक्त हमारे देश में अन्य भारतीय एवं विदेशी खेल भी ओलम्पिक प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से खेले जाते है।

भारतीय खेलों की प्राचीनता वेदों से मिलती है जहां वृक्षों के साथ खेलने का निर्देश मिलता है।[3] खो-खो खेल की चर्चा रामायण एवं महाभारत में भी है।[4] भीम जरासन का युद्ध 15 दिन तक चलाा था यह कुश्ती की प्राचीनता को संबोधित करता है।[5]

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मधय प्रदेश के ग्वालियर-चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में भारतीय खेलों की सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

खेलो का विकास एवं इतिहास

प्रस्तावना -

कबड्डी खेल अत्याधिक प्राचीन है। यह पूर्णतया भारतीय खेल है इसकी उत्पत्ति तथा विकास भारत में ही हुआ है। यह ग्रामीण एवं नगरीय भी क्षेत्रें में खेला जाता रहा है। आरंभ में इसके निश्चित नियम न होने के कारण खिलाड़ियों में आपस में विवाद हो जाता था। अत: इस विवाद से छुटकारा दिलाए जाने हेतु सन् 1921 ई. में सर्व श्री डी.आज.परंजये, यशवन्तराव पाठक, एस. सी.वैधान तथा पूना के. के. विन्द्रे ने कबड्डी खेल के नियमों को तैयार किया।[6]

सन् 1924 मे बडौदा में अखिल भारतीय कबड्डी टूर्नामेन्ट का आयोजन हुआ, इस टूर्नामेन्ट से प्राप्त अनुभव को ध्यान में रखते हुए कबड्डी के नियमों में संशोधन किया गया। इस टूर्नामेन्ट का आयोजन बड़ौदा में हिन्द विजय जिमखाना ने किया था।

सन् 1927 में महाराष्ट्र में भारतीय खेलों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से शारीरिक-शिक्षा मण्डल की स्थापना हुई। इस मण्डल ने अनुभव किया कबड्डी जिसे यहां हू-तु-तू के नाम से पुकारा जाता था सब जगह समान नियम ने होने के फलस्वरूप झगड़ा होना एवं चोट लगना आम बात थी अत: महाराष्ट्र शारीरिक-शिक्षा मण्डल द्वारा एक उपसमिति का गठन किया गया इस उपसमिति द्वारा कबड्डी के संशोधित नियमों को 1934 में प्रकाशित किया गया जिन्हें अधिक मान्यता प्राप्त नहीं हो सकी।

सन् 1928 में जिमखाना संस्था के सर्व श्री भागवत, डॉ. बी. पोतदार, टी. बी. दांडकर आदि ने कबड्डी खेल को लोक प्रिय बनाने के उद्देश्य से कबड्डी के नियमों को प्रकाशित किया जो कि 1938 तक प्रचलन में रहे।

सन् 1928 में अमरावती के हनुमान व्यायाम प्रसारक मण्डल ने बर्लिन ओलम्पिक के समय कबड्डी खिलाड़ियों को भेजकर नुमाइशी खेल के रुप में प्रदर्शित किया।[7]

सन् 1938 में भारतीय ओलम्पिक खेलों में कबड्डी प्रतियोगिता को भी स्थान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् हर दो वर्ष के अन्तराल से राष्ट्रीय स्तर की कबड्डी प्रतियोगिता होने लगी। जिला एवं सम्भाग स्तर व राष्ट्र स्तर टूर्नामेन्ट में महाराष्ट्र शारीरिक शिक्षण मण्डल के नियमों को मान्यता थी। परन्तु अन्तर्राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर श्री "वक" वाई. एम. सी. ए. शारीरिक शिक्षा कॉलेज के संस्थापक के नियमों के अनुसार खेल खेले जाते थे। सन् 1950 तक कबड्डी खेल के नियमों में आवश्यकतानुसार संशोधन होते रहे।

सन् बम्बई ओलम्पिक आयोजन के समय भारतीय कबड्डी संघ की स्थापना की गई, पूना के एल. के. गडबोले को अध्यक्ष, भाई नेवरकर तथा श्री एस. ए. धवन को संयुक्त सचिव चुना गया इसके पश्चात् 1952 से कबड्डी की राष्ट्रीय प्रतियोगिता भी प्रत्येक वर्ष होने लगी। सन् 1952 में मद्रास में राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में निर्णय किया गया कि खेल के बोल, केवल 'कबड्डी' ही हो अन्य शब्द नहीं।

सन् 1935 ई. में महिला कबड्डी प्रतियोगिता का प्रदर्शन हुआ परन्तु सन् 1955 ई. से राष्ट्रीय स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता आरंभ हो गई। सन् 1957 ई. में इस खेल का प्रदर्शन मास्कों में विश्व महोत्सव में किया गया।

सन् 1960 में विजयवाड़ा, 1966 हैदराबाद और 1972 में जयपुर में खेलों के नियमों में संशोधन हुए। 1974 में भारतीय कबड्डी टीम ने बंगलादेश मुं पांच टेस्ट मैच खेले थे।

"राष्ट्रीय विद्यालय खेलों में सन् 1962 ई. में बालकों के लिए तथा सन् 1975 ई. में बालिकाओं के लिए कबड्डी खेल विधिवत् सम्मिलित किया गया।"[8]

खो-खो एक प्रागैतिहासिक खेल है जो कि न किसी रूप में उस आदिम युग में मानव की जीवन चर्चा से उद्भुत हुआ है जितने प्राचीन खेल देखे सब में कही न कही मानव की इस प्रवृति की झलक मिलती है। भले ही आदि मानव बड़े युद्धो में न संलग्न रहा है किन्तु आखेटक तो वह था ही आखेट में वन्य जीवों में रहते संघर्ष करना पड़ता है खो-खो इसी प्रकार का खेल है इसकी प्रागैतिहासिकता इस बात से सिद्ध होती है कि यह शारीरिक अंगों वाला खेल है और किसी अन्य उपकरण की आवश्यकता नहीं पड़ती है सभ्यता के विकास के साथ खेल पउकरणें की वृद्धि होती चली गई। इस दृष्टि से खो-खो एक अति प्राचीन खेल सिद्ध होता है।

खो-खो भारत का खेल है यह पूरे भारत में खेला जाता है। आज तक इस खेल के बारे में किसी को भी इस खेल के अस्तित्व की जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी। खो-खो का खेल Run Chase का भी संशोधित रूप समझा जाता है। खो-खो का खेल पूरे भारत में अलग-अलग विधियों द्वारा खेला जाता है, पर इसके नियम सभी जगह एक सी ही है, सबसे पहले यह खेल भारत के महाराष्ट्र राज्य में शुरू हुआ। महाराष्ट्र के निवासी इस खेल को अपने त्यौहारों पर खेलते थे। शिक्षित लोग इस खेल को ज्यादा अच्छा नहीं समझते थे। उस समय इस खेल के कोई निर्धारित नियम नहीं थे।

"खो-खो शब्द मराठी भाषा से है। जिसका मतलब है जाओ और पकड़ो। यह खेल गतिशील एवं नियंत्रण का है इसके लिए शरीर में स्फूति, तेजी नियंत्रण व स्टेमिना का होन अति आवश्यक है।"

खो-खो शब्द शू-शू शब्द से निर्मित हुआ है शू-शू एक ध्वनि संकेत है, जो किसी को सावधान करता है और आदेशत्मक संकेत देता है "शू-शू" शब्द 'स' के रूप में परिवर्तित हुआ। इस प्रकार 'शू-शू' 'सू-सू' हो गया। और बाद में परिवर्तित होकर खो-खो हो गया। भाषा की दृष्टि से खो-खो का उदय बंगाल व बिहार से होना

चाहिए। यह एक आश्चर्य की बात है कि उत्तर भारत में प्राचीन काल में जो खेल प्रचलित थे वे आज भी किसी न किसी रूप में देश में प्रत्येक प्रान्त, गांवों में परिवर्तन के साथ हैं।

इस खेल की प्राचीनता के सम्बन्ध में सिंह एवं शर्मा ने लिखा है-"इस खेल की चर्चा, रामायण एवं महाभारत में भी कई स्थानों पर हुई है तथा इस खेल का प्रसंग सन्त तुकाराम की कविता अनंग (उमंग) में भी मिलता है।"[९]

20वीं सदी के पूर्व में खान देश इन्दौर, बडौदा, पूना तथा पश्चिमी महाराष्ट्र के कुछ गांवों में खो-खो प्रचलित था।

पश्चिमी महाराष्ट्र में 'शोलापुरी खो-खो' अतिश्य लोकप्रिय थी। आज के खो-खो खेल का मूल प्रेरणा श्रोत उसे ही माना जाता है।

सन् 1918 में डककन जीमखाना ने खो-खो खेल के नियमों को विधवत् रूप से निर्धारण करने का सर्व प्रथम सराहनीय कार्य किया। 1924 में यह नियम संशोध नों के साथ प्रकाशित किए गए।

शारीरिक शिक्षा में रूचि रखने वाले शिक्षाविदों ने सन् 1928 में महाराष्ट्र शारीरिक शिक्षा मंडल नामक संस्था का निर्माण किया। 1933 में इसका चौथा अधि वेशन 'खो-खो' नियमावली निर्मित करने के लिए एक समिति गठित की गई।

1938 में अकोला अधिवेशन में महाराष्ट्र को 6 भागों में विभाजित कर अन्तर संभागीय प्रतियोगितियें आयोजित कराई गई।

1938 में ही सी.पी. एण्ड वराट की खो-खो टीम ने महाराष्ट्र का दौरा किया, जिससे खेल की एक रूपता तथा प्रसार में अधिक सफलता मिली।

सर्वप्रथम 1953 नागपुर विश्वविद्यालय के तत्वाविधान में प्रथम अन्तर विश्वविद्यालय छात्रा खो-खो प्रतियोगिता आयोजित की गई। इससे खो-खो का आर्कषण बढ़ा। इस प्रकार विश्वविद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में इस खेल की लोकप्रियता बढ़ गई।

खो-खो खेल राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हुआ जब सन् 1955 में महाराष्ट्री शारीरिक शिक्षण मण्डल 'नेशनल एसोसियेशन' फार फिजीकल एज्यूकेशन एण्ड रिफ्रेयेशन' से संबंधित हुआ। इसके बाद दो संस्थाऐं आगे आई।

1. अखिल भारतीय खो-खो महामण्डल

2. खो-खो फेडरेशन ऑफ इंडिया

इन दोनों ही संस्थाओं द्वारा खो-खो अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित किया जाने लगाा। बाद में अखिल भारतीय खो-खो मंडल खो-खो फेडरेशन आफॅ इंडिया नाम से जाने जाना लगा। इस संस्था के संस्थापक स्व. भाई नेरूकर थे। सन् 1960 ई. में खो-खो फेडरेशन ऑफ इंडिया का गठन हुआ तथा उसी वर्ष इस संस्था द्वारा 1960 ई. में पुरूषों के लिए पहली राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित की गई। खेल कूद फेडरेशन में अपने कार्यक्रमों में इस खेल को शामिल किया है तथा अन्त: राज्य खो-खो प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

सन् 1977-78 में इस खेल की पढ़ाई के लिए एन. आई. एस. कोच्चिंग सेन्टर बंगलौर में कोर्स शुरू किया गया। सन् 1982 ई. में एशियाई खेलों में इस खेल को प्रदर्शित किया गया।

खो-खो का खेल बहुत अच्छा खेल है ऐसा प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में सारे संसार के लोग इस खेल को अपना लेगें।

इस खेल के खेले जाने का उद्देश्य प्रतिपक्ष को परास्त करना ही है और इस बात को ध्यान में रख कर अपने अस्तित्व की रक्षा कर प्रतिपक्ष को परास्त करना ही खेल एवं खिलाड़ी की सफलता है। यह खेल प्रागैतिहासिक काल से सर्वत्र खेले जाने वाला खेल रहा है। "भारत ही नहीं विश्व के सभी देशों में इस खेल के प्रागैतिहासिक सबूत प्राप्त है। मित्रचित्रों एवं मूर्तियों के माध्यम से यह सिद्ध हो चुका है कि सभ्यता मूल केन्द्र मिश्र, रोम, यूनान, चीन, भारत आदि सभी देशों में यह खेल प्रागैतिहासिक काल से प्रचलित सर्वप्रिय रहा है।''

कुश्ती को भारत वर्ष में सदैव विशेष स्थान रहा है इसे राष्ट्रीय स्तर की क्रीड़ा समझा गया है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि मल्ल क्रीड़ा आनन्द के लिए खेली जाती थी। राम एवं रावण के मल्ल युद्ध के उदाहरण रामायण में मिलते है। लंका में प्रवेश के समय हनुमान जी ने पहलवान को पहलवानी करते देखा। महाभारत काल में कुश्ती को राष्ट्रीय खेल का दर्जा प्राप्त था तथा राज परिवार भी इससे अछूते नहीं थे। श्रीकृष्ण, बलराम, कंस, भीम, अर्जुन, दुर्योधन, जरासंध सभी मल्ल युद्ध के आर्कषक केन्द्र रहे है।

भारतवर्ष में हिन्दू राजाओं, मुसलमान बादशाहों एवं जनता को सदैव कुश्ती अभव्य मल्ल युद्ध प्रिय रहा है। यहां पर तो पशुओं एवं पक्षियों को भी कुश्ती कराके आनन्द लिए जाने का चलन सदैव से रहा है।

आज कुश्ती को ओलम्पिक खेलों में विशेष स्थान प्राप्त है और अन्तर्राष्टीय स्तर पर इस खेल को खेलन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय मान्य नियमावली भी है।

"आट्या-पाट्या एक अति प्राचीन खेल होने के नाते अपना इतिहास खो चुका है, पर इसका इतना इतिहास तो प्रमाणिक ही है कि वह भारतीय ग्रामों में खेले जाने वाला एक प्रचलित खेल था"।

सन् 1938 में अखिल महाराष्ट्र शिक्षा मण्डल द्वारा इसे सार्वजनिक स्वरूप खो चुका था। सम्पूर्ण देश में जहां पर भी यह खेल खेला जाता है उसकी पद्धति, नियम एवं स्वरूप एक समान हैं।

सन् 1938 के पश्चात् इस खेल को भारतीय शिक्षण संस्थाओं में स्थान प्राप्त हो गया तथा अनेक शिक्षण संस्थाओं प्रतियोगिताओं का सहयोग मिल जिसके फलस्वरूप अन्य भारतीय खेलों में समान स्थाई मान्यता एवं लोक प्रियता हासिल हुई। परन्तु यह खेल ग्वालियर - चम्बल सम्भाग में अपनी छाप लगाने में सफल नहीं हो सका।

कबड्डी :-

कबड्डी भारत वर्ष का राष्ट्रीय खेल है। इस खेल में पकड़ना, धकेलना, खींचना, गिराना एवं कूदना पादना आति शरीर को स्वस्थ एवं बलशाली बनाने में योगदान प्रदान करते है। इस खेल में सावधान रहना तथा घात लगाकर विरोधी टीम पर बलपूर्वक प्रहार करना और अपने पाले में वापस आना विशेष चतुराई एवं सतर्कता का कार्य है।

यह खेल सम्पूर्ण भारत वर्ष में भिन्न-भिन्न नामों से खेला जाता है। कर्नाटक व तमिलनाडू में चैडुगुडु कहते है, केरल एवं मालावार में वंडीकाली के नाम से जाना जाता है। कच्छ कठियावाड में भडी-भडी तथा बंगाल में हाडुडी भी कबड्डी के ही नाम है। गुजरात एवं महाराष्ट्र में कबड्डी खेल को हु तु तु के नाम से जाना जाता है। उत्तर-प्रदेश एवं मध्य-प्रदेश में इस खेल को कबड्डी शब्द का प्रयोग किया जाता है पंजाब में कबड्डी जाना जाता है।

कबड्डी के खेल में जब एक दल का खिलाड़ी अपने पाले से दूसरे पाले में जाता है तो एक सांस में ही कबड्डी अथवा अन्य बोल बोलने होते हैं तथा सांस के टूटने से पहले ही बोल बोलते हुए अपने पाले में वापस आना होता है। उसी प्रकार बोले जाने वाले बोल भी भिन्न-भिन्न हैं, जैसे- कबड्डी - कबड्डी, छोटे - छोटे घुंघरू बजाने वाला कौन, धरती माता सो गई जगाने वाला कौन, छल कबड्डी आने दो, तबला बजाने दो आदि।

कबड्डी चोल को निम्न तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. संजीवनी
2. गाविमी
3. अमर

1. संजीवनी :-

जब विरोधी पाली का कोई खिलाड़ी आऊट हो जावें तो आऊट करने वाली पाली का खिलाड़ी पुन: जीवित होकर पुन: खेलने लगता है। यह खेल दो सत्रों में खेला जाता है प्रत्येक सत्र 20 मिनट का होता है और दोनों सत्रों मे मध्य में 65 मिनट का विश्राम होता है यदि किसी पाली के सभी खिलाड़ी आऊट हो जावे तो दूसरी पाली को 2 अंक अतिरिक्त मिलते है।

2. गाविमी :-

इस में आऊट खिलाड़ी पुन: जीवित होकर नहीं खेलता। यदि किसी पाली के सभी खिलाड़ी आऊट हो जावें तो उस पाली को पराजित माना जाता है।

3. अमर :-

इसमें किसी भी पाली के खिलाड़ी आऊट नहीं हो तो जिस पाली का भी खिलाड़ी सफलता प्राप्त करता है उसे उसकी सफलता पर एक अंक दे दिया जाता है। इस प्रकार से कबड्डी खेल में भी दो सत्र होते हैं प्रत्येक सत्र 20 मिनट का होता है और दोनों सत्रों के मध्य पांच मिनट का विश्राम रहता है। इस पाली में खिलाड़ियों की संख्या नौ तक होती है।

वर्तमान में संजीवनी शैली की कबड्डी के लिए ही मान्यता प्राप्त है।

खो-खो :-

खो-खो खेल में दो टोलियां होती है प्रत्येक टोली में 9 खिलाड़ी तथा 3 अतिरिक्त खिलाड़ी स्थापनापन्न के लिए होते है। निर्णायक दोनों टोलियों को खो-खो खेल के मैदान में बुलाकर सिक्का उछालकर टॉस करता है। टॉस जीतने वाली टोली का कप्तान अपने स्वयं के विकल्प के चेजर या अनुसार पीछा करने वाला धावक के रूप में खेलने की सूचना निर्णायक को दे देगा। एक पीछा करने वाले (Chaser)

के अलावा सभी खिलाड़ी खेल मैदान पर बने वर्गो में इस प्रकार बैठेगें कि साथ-साथ बैठे खिलाड़ियों के मुंह एक ही दिशा में न हो एक नौवा खिलाड़ी जो सक्रिय दौड़ने वाला Active Chaser होगा जो स्तम्भ के पास धावक (Runner) के पीछे दौड़कर उसे पकड़ने के लिए खडा होगा, निर्णायक की सीटी बजजे ही खेल आरम्भ हो जावेगा।

क्रियाशील पकड़ने वाला खिलाड़ी खेल के मैदान की केन्द्रीय गली के किसी भी भाग को नहीं छुएंगा और न इसे पार ही कर सकेगा।

क्रियाशील पकड़ने वाला खिलाड़ी पीछे "खो" नहीं दे सकेगा।

"खो" बैंठे हुए खिलाड़ी के पीछे समीप जाकर स्पष्ट एवं ऊँची ध्वनि में "खो" देनी चाहिए। बैठा हुआ खिलाड़ी बिना "खो" मिले नहीं उठ सकता और न ही वह भुजा फेलाकर दौड़ने वाले खिलाड़ी को स्पर्श करने का प्रयत्न करेगा।

खो देने के पश्चात् सक्रिय खिलाड़ी के वर्ग में बैठ जावेगा जिस बैठे हुए खिलाड़ी को उस ने खो दी थी।

जिस खिलाड़ी को "खो" प्राप्त हुई है वह खिलाड़ी पीछा करने के लिए वही दिशा अपनाएगा जिस दिशा में वह मुँह किए बैठा था जब तक कि वह आयत तक न पहुँच जाये या खिलाड़ी को खो न दे दे।

जब कोई भी फाउल होता है, इस पर सक्रिय अनुधावक उस दिशा के विपरीत जाने के लिए बाध्य किया जावेगा जिस दिशा में वह जा रहा/रही थी निर्णायक की सीटी के साथ सक्रिय अनुधावक संकेतिक दिशा की ओर चल देगा। यदि इस प्रकार रनर आउट हो जाता है तो उसे आउट नहीं मान जाता है।

यदि सक्रिय चेजर बिना किसी नियम का उल्लघंन किए रनर को छू ले तो रनर आऊट हो जाता है।

पारी के दौरान सक्रिय चेजर परिधि से बाहर जा सकता है परन्तु उसे दिशा और मुँह मोड़ने के नियम का पालन करना होता है।

खो-खो खेल का मैदान 29 मीटर लम्बे तथा 16 मीटर चौड़े आयताकार का होता है।

खिलाड़ी के शरीर में स्फूर्ति आती है एवं शारीरिक क्षमता बढ़ती है। शरीर लोचदार बनता है तथा सन्तुलित रहने की आदत विकसित होती है। रक्तचाप ठीक रहने के साथ ही खिलाड़ी की मांस पेशियां तथा नाड़ी जाल मजबूत बनता है। खिलाड़ी में सजग एवं सतर्क रहने का गुण आता है। हृदय एवं मस्तिष्क को शक्ति प्राप्त होती है। खिलाड़ी में आत्मविश्वास में वृद्धि करना समय का सदपयो करना तथा समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने की धारणा विकसित होती है। यह खेल चरित्र एवं व्यक्तित्व में सहायक होता है। अन्य और भी लाभ है।

यह खेल आज अत्याधिक लोक प्रिय होता जा रहा है। ग्राम, नगर, स्कूल एवं महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों में स्थान प्राप्त कर राष्ट्र से आगे बढ़ अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रतिस्पर्धा कर रहा है।

कुश्ती :-

कुश्ती एक ऐसा खेल है जो देश एवं विदेश में लोक प्रिय हो रहा है अन्तर यह है कि भारतीय शैली की कुश्ती के अपने दांव पेच है जिनको आधार मानकर पहलवान अखाड़े में कुश्ती लड़ते हैं जबकि ओलम्पिक कुश्ती सर्वथा इस से भिन्न है जैसे इसे अखाड़े में न लड़कर गद्दों पर लड़ाते हैं और भी विषमतायें है जो भारतीय कुश्ती के विपरीत हैं।

दांव पेच के आधार पर भारतीय शैली की कुश्ती का विभाजन :-

1. हनुमन्ती कुश्ती
2. भीमसेनी कुश्ती
3. जमवन्ती कुश्ती
4. जरासन्धी कुश्ती

1. हनुमन्ती कुश्ती में पहलवाल अपने प्रतिद्वन्दी को टांग में टांग फसाकर या टांग पकड़ कर फेंक देता है।

2. भीमसेनी कुश्ती में पहलवान अपने प्रतिद्वन्दी को उठाकर कन्धे की सीध तक ले जाकर फेंक देता है। उसकी गर्दन अथवा कमर पर खड़ा होकर उसे बेवश कर देता है।

3. जमवन्ती कुश्ती में पहलवान अपने प्रतिद्वन्दी की कलाई उसकी पीठ के पीछे मरोड़ना, हाथ खींचना, गर्दन पकड़कर पछाड़ना जिसे धोबी पछाड़ कहते है आदि हैं।

भारतीय कुश्ती के प्रमुख तथ्य :-

1. भारतीय कुश्ती अखाड़े में लड़ी जाती है।
2. भारतीय कुश्ती के अखाड़े की कोई लम्बाई - चौड़ाई निश्चित नहीं होती है।
3. पहलवान अपने शरीर पर लंगोट अथवा लंगोट एवं जांघिया दोनों पहन सकता है।
4. पहलवानों के लड़ते समय लंगोट एवं जांघिया पकड़ने की छूट है।
5. पहलवान अंगूठी अथवा कड़ा नहीं पहन सकते, ताबीज पहनने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है।
6. कुश्ती कब तक चलती रहेगी इसकी समय सीमा निर्धारित नहीं है।
7. भारतीय कुश्ती में नियम का कोइ्र बन्धन नहीं है।

ओलम्पिक कुश्ती 9 मीटर व्यास के गद्दे पर जूते एवं मौजे पहनकर होती है। समय नियत एवं नियम निश्चित रहते हैं। जांघिया पकड़ने अथवा धातु की वस्तु पहनने पर प्रतिबन्ध है।

कुश्ती की प्रतियोगिता भारतीय शैली पर आयोजित न हो ओलम्पिक शैली पर हो रही है। अतः भारतीय शैली के कुश्ती पहलवानों को भारतीय कुश्ती शैली एवं ओलम्पिक शैली दोनों के लिए अपने आप को तैयार रखना होता है।

आधुनिक समय में अनेक सामाजिक संगठनों द्वारा भारतीय कुश्ती की ओर ध्यान आकर्षित किया है तथा इसे रुचिकर बनाने की ओर अग्रसर हैं। भारत वर्ष के नगरों में तो सदैव से भारतीय कुश्ती के अखाड़े तो थे ही परन्तु अब गाँव-गाँव भारतीय कुश्ती के अखाड़े बनते जा रहे हैं।

सरकारी स्तर पर भी इसमें विशेष रुचि ली जा रही है। शिक्षण संसथाओं में इसे प्रोत्साहन दिया जा रहा है तथा जिला स्तर, संभाग स्तर-विश्व विद्यालय स्तर तथा राष्ट्रहय स्तर पर भारतीय कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा है।

मेला दशहरा इत्यादि के अवसर पर भारतीय कुश्ती को विशेष महत्व दिया जाता है और नागरिक एवं आंगतुक इसे विशेष रुचि से देखते हैं। पहलवान पुरूषकृत एवं संभावित होते हैं।

भारतीय कुश्ती से पहलवानों को अनेक लाभ होते हैं, उनकी शारीरिक सन्तुलन एवं आत्मविश्वास का विकास होता है। इससे रक्त संचार एवं हृदय सदैव ठीक रहता है तथा शारीरिक कुशलता प्राप्त होती है। पहलवानों को आर्थिक लाभ एवं समाज में ख्याति प्राप्त होती है। कुश्ती के फलस्वरुप हड्डी मजबूत, सहनशक्ति, निर्णय लेने एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। उनके हृदय में विजय की सफलता का दृढ़ निश्चय बना रहता है जिसके फलस्वरूप वैचारिक गरिमा बनाये रखना तथा नैतिक गुणों को अपने में समाविष्ट करना उनका ध्यये रहता है। शरीर की मांस पेशियों को विशेष लाभ होता है। पहलवानों को निर्णय लेने की शक्ति का विकास एवं आनन्द प्राप्त होता है।

''इस देश की मिट्टी एवं भूमि में कुश्ती के विकास की सम्पूर्ण सम्भावनाएं विद्यमान हैं, इसके लिए आवश्यकता है निष्ठा एवं लग्न की। तथा भारत की जलवायु एवं यहां की प्रकृति सब इस खेल के भविष्य को मंगलमय बनाने के लिए सक्षम अपादान है।'' [10]

आट्या-पाट्या :-

आट्या-पाट्या अत्यधिक प्राचीन खेल है यह हमारे देश में प्रागैतिहासिक काल से खेला गया है। यह खेल भारत वर्ष में अनेक भागों में विशेष रूप से ग्रामीण अंचलों में प्रचलित रहा है। दक्षिणी, पश्चिमी एवं भारतवर्ष के मध्य भाग में इसके खेले जाने के प्रमाण है परन्तु मध्य प्रदेश के ग्वालियर-चम्बल सम्भाग में यह खेल नाम मात्र को भी नहीं खेला जाता है। विभिन्न स्थानों पर इसके अलग-अलग नाम हैं जैसे- डोरिया बंधा, मावी, डपपू, पट्टी इत्यादि। यह खेल विशेष सतर्कता एवं चतुराई पूर्वक खेला जाता है। इस खेल के खेल जाने में पीछे क्या उद्देश्य रहा होगा कुछ निश्चित तथ्य उपलब्ध नही हैं।

अध्यायों का संक्षिप्त विवरण :-

अध्याय प्रथम में सर्वप्रथम खेल की अवधारणा का उल्लेख है इसके पश्चात् खेलों का विकास तथा इतिहास का वृतान्त है, इसमें प्रमुख भारतीय खेल जैसे- कबड्डी, खो-खो, कुश्ती एवं आट्या-पाट्या खेलों का परिचयात्मक लक्षणों का उल्लेख है, इसके पश्चात् शोध प्रबन्ध के समस्त अध्यायों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

अध्याय द्वितीय में इस शोध प्रबन्ध के शोध कार्य का वर्णन किया गया है इसके अन्तर्गत अध्ययन का विषय तथा उसके चयन का उद्देश्य एवं अध्ययन क्षेत्र का उल्लेचा किया गया है। उपकल्पना एवं उपकल्पना निर्धारण दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त इस शोध कार्य की अध्ययन पद्धतियां एवं प्रविधियां वर्णित की गई है जिसमें अध्ययन पद्धति सर्वेक्षण, संग्रह कार्य, साक्षात्कार, अनुसूची, सामग्री का सारणीयन, आंकड़ो का विश्लेषण, निर्वचन एवं निष्कर्ष, क्षेत्र डायरी, पूर्व परीक्षण तथा द्वितीय समंक, निर्देशन का चयन को सविस्तार समझाकर अनुसरण कर अध्ययन पद्धति वर्णित की है।

अध्याय तृतीय में साहित्य का पुनरावलोकन लिखा गया है। इसमें उन ग्रन्थों एवं साहित्यकारों का उल्लेख है जा शोध विषय से संबंधित हैं इसके अतिरिक्त जिन

विद्वानों द्वारा सम्बन्धित विषय पर ग्रन्थ एवं पुस्तकें लिखी हैं उनकी चर्चा है तथा आई. सी. एस. आर. नई दिल्ली से प्राप्त सन्दर्भो का भी विवरण लिखा गया है।

अध्याय चतुर्थ में ग्वालियर चम्बल सम्भाग की भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं का क्रमशः विवरण है। भौगोलिक दशाओं का उल्लेख करते समय ग्वालियर-चम्बल संभाग की भौगोलिक दशांए, जैसे- जलवायु, ग्रीष्म, वर्षा एवं शीत ऋतु की दशांए, वर्षा की विशेषतायें, भू-वैज्ञानिक संरचना, मृदांए तथा मिट्टी के प्रकार का उल्लेख है।

सामाजिक दशाओं के अध्ययन में ग्वालियर-चम्बल सम्भाग की जनसंख्या, शिक्षा, निवासी, भाषा आदि का वर्णन किया गया है। आर्थिक दशाओं की दृष्टि से वनस्पति, खनिज उद्योग एवं यातायात तक सीमित रखा है।

अध्याय पंचम में चयन दाताओं द्वारा प्राप्त जानकारी के आंकड़ों पर बनी सारणियों का विश्लेषणात्मक व्याख्या की है उनसे प्राप्त जानकारी के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किया है महाविद्यालयों में मिलने वाली खेल सुविधाओं का सविस्तार उल्लेख है।

अध्याय षष्टम में ग्वालियर - चम्बल सम्भाग में खेले जाने वाले प्रमुख खेलों की चर्चा है।

अध्याय सप्तम् में निष्कर्ष एवं सुझाव दिए गए है इनमें म. प्र. के ग्वालियर - चम्बल सम्भाग के प्रमुख खेलों के विकास के उपाय भी सुझाए गए हैं। इसके पश्चात् परिशिष्ट, अनुसूची तथा सन्दर्भ ग्रन्थ सूची संलग्न की गई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 पाण्डेय लक्ष्मी कान्त भारतीय खेलों की मीमांसा, पृष्ट 1

2 ऋक 9/86/26

3 अथर्व 20/135/1-2

4 शर्मा देव व्यास प्रायोगिक शारीरिक शिक्षा, पृष्ट 184

5 पाण्डेय लक्ष्मीकान्त भारतीय खेलों की मीमांसा पृष्ट 17

6 मल्ला अभय राष्ट्रीय खेल कबड्डी पृष्ट 14

7 मल्ला अभय राष्ट्रीय खेल कबड्डी पृष्ट 15

8 शर्मा बी.डी. एवं प्रायोगिक शारीरिक शिक्षा पृष्ट 173 सिंह ग्रन्थ

9 शर्मा बी.डी. एवं प्रायोगिक शारीरिक शिक्षा पृष्ट 183 सिंह ग्रन्थ

10 पाण्डेय लक्ष्मी कान्त भारतीय खेलों की मीमांसा पृष्ट 150

अध्याय 2

अध्ययन विधि

(अ) अध्ययन का विषय

(ब) अध्ययन का क्षेत्र का चयन

(स) अध्ययन का उद्देश्य

(द) अध्ययन की पद्धतियां तथा प्रविधियां

(इ) निर्देशन का चयन :

उद्देश्य पूर्ण निर्देशन विधि

अ-अध्ययन का विषय:-

मध्य प्रदेश राज्य के ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों पर आधारित है तथा भारतीय खेलों का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

इस विश्व विद्यालय में आज तक जो कार्य प्रस्तावित पृष्ठ भूमि में लिये गए है। उनमें अभी तक किसी ने भी शारीरिक में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन नहीं किया है। इसके अतिरिक्त इस विश्व विद्यालय में भारतीय प्रमुख खेलों के सन्दर्भ में भी कोई अध्ययन नहीं किया गया है।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यायल के अतिरिक्त अन्य किसी विश्वविद्यालय में भी इस विषय पर कोई कार्य किया गया हो, यह शोधार्थिनी को चाह कर भी पता नहीं चल सका है।

अत: शोधार्थिनी मध्य प्रदेश राज्य के ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालियों में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेगी, इस अध्ययन में आरम्भ से अब तक के प्रमुख भारतीय खेलों का अध्ययन किया जावेगा।

ब-अध्ययन क्षेत्र का चयन

ग्वालियर चम्बल संभाग पर कार्य करने के लिए निम्न कारण उत्तरदाई है:-

1. शोध समिति का निर्णय है कि ग्वालियर चम्बल सम्माभ पर कार्य किया जायेगा।

2. ग्वालियर चम्बल सम्भाग एक प्राकृतिक इकाई है जिसकी भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विषमता है जिनसे भारतीय प्रभावित होतें।

3. मैं इस क्षेत्र में आरंभ से रही हूँ। ग्वालियर एवं चम्बल सम्भाग दोनों में लम्बे समय तक रहने का अवसर मिला हैं अत: यहां की स्थिति एवं खेलें जाने वाले भारतीय खेलों के बारे में भली भांति परिचित हूँ।

4. भारतीय खेल मुझे अधिक रुचिकर हैं विशेष रुप से खो-खो एवं कबड्डी इनमें मैंने पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

5. ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालय में भारतीय खेलों की सुविधाओं का अध्ययन करने की जिज्ञासा है।

6. ग्वालियर चम्बल संभाग के महा विद्यालयों में भारतीय खेलों के विकास के लिए ऐसे उपाय सुझाना। जो स्वास्थ्य की दृष्टि से हितकर हैं।

अध्ययन क्षेत्र-

ग्वालियर चम्बल संभाग मध्य प्रदेश राज्य के उत्तरी भाग में स्थित है, इसका अक्षांशीय विस्तार 240 उत्तर से 26° - 40′ पूर्व देशान्तर रेखा के मध्य है। राजनैतिक सीमाओं की दृष्टि से उत्तर में यह दो पडोसी राज्यों से अलग होता है। इसके पश्चिम में राजस्थान तथा उत्तर एवं उत्तर - पूर्व में उत्तर प्रदेश है।

मध्य प्रदेश के अन्य सम्भागों की तुलना में ग्वालियर चम्बल सम्भाग स्पष्ट तथा महत्वपूर्ण प्राकृतिक सीमाओं द्वारा पृथक है। चंबल नदी क्षेत्र के उत्तरी तथा उत्तरी पश्चिमी सीमा बनाती है तथा मालवा का उत्तरी भाग इसकी दक्षिणी सीमा बनाता है दक्षिण पूर्व में बेतवा नदी इसे उत्तर प्रदेश के निकले संकरे भाग से अलग करती है।

ग्वालियर सम्भाग में ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, दतिया तथा चम्बल संभाग में श्योपुर, मुरैना, भिण्ड जिले है। इसका क्षेत्रभल 44737.36 वर्ग किलामीटर है।

ग्वालियर चम्बल सम्भाग में 120 महाविद्यालिय हैं। इनमें 47 शासकी महाविद्यालय है तथा 73 अशासकीय महाविद्यालय हैं।

सारणी - 2.1

अध्ययन क्षेत्र एवं महाविद्यालय ग्वालियर चम्बल सम्भाग

राज्य का नाम	सम्भाग	जिला	क्षेत्र वर्ग किमी.	महाविद्यालयों की संख्या
मध्यप्रदेश	ग्वालियर	ग्वालियर	5224.00	50
		शिवपुरी	10278.00	11
		गुना	11065.00	16
		दतिया	2038.00	07
	चम्बल	श्योपुर	6666.50	02
		मुरैना	5016.86	15
		भिण्ड	4459.00	19
योग ग्वालियर चम्बल सम्भाग			44737.36	120

ग्वालियर चम्बल सम्भाग में शिक्षा के क्षेत्र में ग्वालियर महानगर महत्वपूर्ण है। यहां पर ग्वालियर चम्बल संभाग का पहला विश्व विद्यालय जीवाजी विश्व विद्यालय ग्वालियर है। जिसके अन्तर्गत वर्तमान में ग्वालियर एवं चम्बल संभाग कि महाविद्यालय आते है।

इसी प्रकार ग्वालियर स्थित लक्ष्मीबाई नेशनल इंस्टीटयूट आफ फिजीकल एजुकेशन (एल. एन. आई.पी.ई.) को शारीरिक प्रशिक्षण में मध्य-प्रदेश के एक मात्र विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त है।

कभी जो ग्वालियर का कृषि महाविद्यालय था, आज उसे कृषि विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त है।

सारणी - 2.2

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों का ब्यौरा

जिला	शासकीय	अशासकीय
ग्वालियर	12	39
शिवपुरी	07	05
गुना	09	07
दतिया	04	03
श्योपुर	01	-
मुरैना	06	08
भिण्ड	08	11
	47	73

सारणी - 2.3

ग्वालियर चम्बल सम्भाग जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से सम्बद्ध शासकीय महाविद्यालयों की सूची

1. शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर
2. शासकीय कन्या महाविद्यालयो, मुरार, ग्वालियर
3. शास. श्यामलाल पाण्डवीया महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर
4. शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड़ ग्वालियर
5. डॉ. भगवत सहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड़, ग्वालियर
6. गजराजा चिकित्सा महाविद्यालय, लश्कर, ग्वालियर
7. नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर
8. वृन्दासहाय शासकीय महाविद्यालय, डबरा ग्वालियर
9. यास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर
10. शास. महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वउणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर
11. शास. कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर
12. शास. आदर्शविज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर
13. शास एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड
14. शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड
15. शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, बालाजी, मिहोना भिण्ड
16. शास. महाविद्यालय, मेहगांव, भिण्ड
17. शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड
18. शास. महाविद्यालय, अटेर, भिण्ड
19. शास. महाविद्यालय, लहार, भिण्ड
20. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना
21. शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना
22. शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना
23. शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी गुना
24. शास. महाविद्यालय, चाचौडा, बीनागंज, गुना
25. शास. कन्या महाविद्यालय, चाचौडा, बीनागंज, गुना
26. शास. महाविद्यालय, मुंगावनी, गुना
27. शास. महाविद्यालय, राधोगढ़, गुना
28. शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना
29. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना

30. शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना
31. शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना
32. शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना
33. शास. महाविद्यालय, पोरसा, मुरैना
34. शास. विधि महाविद्यालय, मुरैना
35. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुर कलां
36. शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया
37. शास. गोविन्द स्नातक महाविद्यालय, सेवढ़ा, दतिया
38. शास. व्ही.आर.एस.स्नातक महाविद्यालय, भाण्डोर, दतिया
39. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया
40. शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी महाविद्यालय, पिछोर, ग्वालियर
41. शास. तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय, शिवपुरी
42. शास. छत्रसाल महाविद्यालय, शिवपुरी
43. शास. महाविद्यालय, करैरा, शिवपुरी
44. शास.एल.एस.जी.के. महाविद्यालय, पोहरी, शिवपुरी
45. शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी
46. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी
47. शास. महर्षि अरविन्द स्नातक महाविद्यालय, गोहद, भिण्ड

सारणी - 2.4

ग्वालियर-चम्बल संभाग के जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से सम्बद्ध अशासकीय महाविद्यालयों की सूची

1. माधव महाविद्यालय, नई सड़क, ग्वालियर
2. पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर
3. जे.सी.मिल्स कन्या महाविद्यालय बिरलानगर, ग्वालियर
4. वसुन्धराराजे होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, चिरवाई नाका, ग्वालियर
5. महाराजा मानसिहं महाविद्यालय, चार शहर का नाका, ग्वालियर
6. माधव इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी एण्ड सांइस, ग्वालियर
7. कॉलेज ऑफ नर्सिग, 'कैंसर चिकित्सालय), कैंसर हिल्स, ग्वालियर
8. कॉलेज ऑफ लाईफ साइंस, (कैंसर चिकित्सालय), कैंसर हिल्स, ग्वालियर
9. महाराणा प्रताप टेक्नोलॉजी, शारदा बलग्राम के पीछे, ग्वालियर

10. मौलान आजाद इंस्टी. ऑफ प्रोफेशनल स्टडी, किरार भवन, गांधी रोड, ग्वा.

11. लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सुरेशनगर तिकोनिया, ठाटीपुर, ग्वालियर

12. बोस्टन व्यावसायिक महाविद्यालय, शारदा बलग्राम के पीछे, ग्वालियर

13. प्रेस्टीज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, 93, मानिक विलास कॉलोनी, ग्वालियर

14. सुभाषचन्द बोस महाविद्यालय, बी-82/83 गोविन्दपुरी, विश्वविद्यालय रोड, ग्वा.

15. जी.आई.सी.टी. लक्ष्मीबाई कॉलोनी, ग्वालियर

16. बी.एस.एफ.इंस्टी.ऑफ कम्पयूटर एजूकेशन, टेकनपुर, ग्वालियर

17. महात्मा गांधी कॉलेज ऑफ लॉ ए.जी. ऑफिस के पास, ग्वालियर

18. राजीव गांधी व्यावसायिक शिक्षण महाविद्यालय, दरवाई गेट, ग्वालियर

19. नेशनल इंस्टी. ऑफ इंजी. एण्ड मैनेजमेंट ठाटीपुर चौहान प्याऊ के पास, ग्वालियर

20. अपेक्स इंस्टी. ऑफ मैनेजमेंट, बानमोर, मुरैना

21. जैन कालेज, नया बाजार, ग्वालियर

22. भृगु कन्या महाविद्यालय, जवाहर कालोनी, कम्पू, ग्वालियर

23. बी.आई.एम.आर. कॉलेज ऑफ लाइफ साइंस, सूर्य मंदिर रोड, रेंजी, मार्ग, ग्वालियर

24. सोफिया कॉलेज, सी-42/43, गोविन्दपुरी, ग्वालियर

25. इंस्टी. ऑफ टेक्नोलाजी एण्ड मैनेजमेंट (आई.टी.एम) सिथौली रेल्वे स्टेशन, ग्वालियर

26. युवा व्यावसायिक शिक्षण महाविद्यालय, सुरेशनगर, मुरार ग्वालियर

27. आर.जे.आई.टी (रूस्तम टेक्नोलॉजी), बी. एस. एफ, टेकनपुर

28. आशा इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशन स्टडीज, डॉ चांडक अस्पताल परिसर हॉस्पीटल रोड, ग्वालियर

29. संत कवरराम कन्या महाविद्यालय, डबरा

30. ग्रीनवुड महाविद्यालय, दीनदयाल नगर, ग्वालियर

31. भगवान झूलेलाल महाविद्यालय, समाधिया कालोनी के पास, तारागंज ग्वालियर

32. इंस्टीट्यूट ऑफ एलाइड सांइसेज एण्ड कम्प्यूटर एप्लीकेशन आई.टी.एम परिसर सिथौली रेल्वे स्टेशन, ग्वालियर

33. महर्षि वेदव्यास महाविद्यालय, रॉयल अस्पताल के सामने, राक्सी टॉकीज, कम्पू ग्वालियर

34. प्रेस्टीज महाविद्यालय, ठाकुर बाबा रोड, स्टेशन के सामने, मार्केटिंग भवन, डबरा

35. ग्वालियर नर्सिगं इंस्टीट्यूट, साक्षी परिसर, उरवई, ग्वालियर

36. भारतीय विद्या मन्दिर, यमुना नगर, दर्पण कालोनी, ठाटीपुर ग्वालियर

37. महर्षि वेदव्यास महाविद्यालय, जंगीपुरा, डबरा
38. जैन महाविद्यालय, भिण्ड
39. कुसुम बाई जैन कन्या महाविद्यालय, भिण्ड
40. चौधरी दिलीपसिहं कन्या महाविद्यालय, भिण्ड
41. एस.व्ही.आर.एस. महाविद्यालय, अढ़ोखर, भिण्ड
42. ऋषिश्वर महाविद्यालय, फूप, भिण्ड
43. चौधरी कमलसिहं महाविद्यालय, मौ, भिण्ड
44. दुर्गा प्रसाद सर्राफ महाविद्यालय, दमोह, भिण्ड
45. चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड
46. माता प्रसाद महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड
47. श्रीरामनाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड
48. रामनाथ सिंह होम्योपैथिक महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड
49. इंस्टी. ऑफ इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस कालेज, गुना
50. पंकज सोमानी महाविद्यालय, सोमानी केन्ट, गुना
51. वर्द्धमान कन्या महाविद्यालय, अशोकनगर, गुना
52. गांधी वोकेशनल महाविद्यालय, बी.डी. रोड, गुना
53. वाय.व्ही.एस. महाविद्यालय, ए.बी. रोड, गुना
54. इंडियन कॉलेज ऑफ साइन्स एण्ड मैनेजमेंट, अशोक नगर, गुना
55. नवीन अशासकीय इंदिरा गांधी प्रोफेशनल महाविद्यालय, चन्देरी, गुना
56. जयहिन्द महाविद्यालय, शिक्षानगर, गर्ल्स कॉलेज के सामने, मुरैना
57. ऋषि गालव महाविद्यालय, मुरैना
58. गेंदालाल महाविद्यालय, बानमोर, मुरैना
59. सम्भरसिंह सामाजिक विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मुरैना
60. आचार्य नरेन्द्र महाविद्यालय, कैलारस, मुरैना
61. अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना
62. शिवशंकर महाविद्यालय, सुमावली, मुरैना
63. जयहिन्द बिस्मिल महाविद्यालय, एडवोकेट कालोनी, अम्बाह, मुरैना
64. कुन्दन सिंह स्मृति महाविद्यालय, इन्दरगढ़, दतिया
65. कॉलेज आफ नर्सिगं, रावतपुरा सरकार, दतिया
66. पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया
67. कन्हैया तिवारी महाविद्यालय, शिवपुरी
68. लोढ़ी माता महाविद्यालय, नरवर, शिवपुरी
69. शिवपुरी डिग्री कॉलेज, सरक्यूलर रोड, शिवपुरी
70. सेठ रमेश चन्द्र महाविद्यालय, शिवपुरी
71. श्री गणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर
72. इंस्टीट्यूट ऑफ डेन्टल साईन्सेज एण्ड रिसर्च ग्वालियर
73. दन्त चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर

(स) अध्ययन का उद्देश्य :-

शोध प्रक्रिया का यह महत्वपूर्ण चरण है। किसी व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले अथवा कार्य पूर्व निर्धारित उद्देश्य से निदर्शित होते है। इसलिए स्वभाविक रूप से शोध कार्य भी निरूद्देश्य नहीं हो सकते। जैसा कि हम जानते है कि बिना किसी लक्ष्य के हमारी स्थिति दिशाहीन हो जायेगी। बिना उद्देश्य के किसी अध्ययन की कोई उपयोगिता नहीं रह जाती है। सामान्यत: प्रत्येक शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य अज्ञात तथ्यों का पता लगाना ज्ञान प्राप्त करना और नये सिद्धातों को प्रतिपादन करना आदि होता है। कोई भी शोधार्थी शोध करने के लिए इस कारण से भी प्रेरित होता है कि वह सामाजिक जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं, तथ्यों तथा सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को ठीक प्रकार समझा सके। इसके अतिरिक्त शोध कार्य के दौरान नये सिद्धान्तों को खोजना तथा उन्हें पुराने सिद्धान्तों के समायोजित करना भी आवश्यक होता है। अत: शोध कार्य के उद्देश्य के सम्बन्ध के राबर्ट वैसेल एवं एडवर्ट ने अपने विचार व्यक्त किए है "शोध कार्य का उद्देश्य यथा सम्भव शुद्ध रुप से स्पष्ट किया जाना चाहिए इससे उचित सुचना का संकलन, सुनिश्चित हो जायेगा और प्रसंगहीन आंकड़ो के संकलन व प्रहस्तन के खर्च से छुटकारा मिल जायेगा।[8]

शोधार्थिनी के अध्ययन का उद्देश्य यह है कि ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में कौन-कौन से भारतीय खेल खेले जाते है और क्या उन पर भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारण ने किस प्रकार खेलों को प्रभावित किया है इस क्षेत्र के खेल के विकास के लिए कुछ उपाय सम्भव हैं या नहीं। अच्छे स्वस्थ के दृष्टिकोण से किस प्रकार के खेल उपयोगी रहेंगे।

परिकल्पना का निर्धारण :-

उपकल्पना अनुसंधान कार्य का मार्गदर्शन करती है, अध्ययनकर्ता को यह इधर-उधर भटकने से रोकती है तथा अध्ययन के अन्त में यह उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करने तथा पूर्व निष्कर्षो का सत्यापन करने में सहायता देती है।

अतः शोध कार्य के आरम्भ मे उपकल्पना का सृजन अनिवार्य है। अर्थात् शोध विषय के आधार पर आरंभिक ज्ञान एवं पूर्व अनुमान ही उपकल्पना है।

अध्ययन की परिकल्पना :-

1. इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से शोधार्थिनी यह जानने का प्रयास करेगी कि ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में कौन कौन से भारतीय खेल खेले जाते हैं। और उन पर भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारण ने किस प्रकार प्रभावित किया है।

2. ग्वालियर चम्बल संभाग में के महाविद्यालयों में खेले जाने वाले भारतीय खेलों के विकास के लिए क्या उपाय संभव हो सकते हैं।

3. भारतीय खेल स्वास्थ्य की दृष्टि से हित है या नहीं।

(द) अध्ययन की पद्धतियां तथा प्रविधियां :-

किसी भी विषय का अध्ययन करने के लिए एक व्यवस्थित पद्धति की आवश्यकता होती है तथा बिना व्यवस्थित अध्ययन पद्धति के किया गया अध्ययन वैज्ञानिक अध्ययन नहीं हो सकता। प्रस्तुत विषय का अध्ययन करने के लिए भी व्यवस्थित अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

जार्ज लण्डवर्ग का कथन है कि "व्यापक अर्थो में वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ तथ्यों का अवलोकन, वर्गीकरण और व्याख्या करना है।

अध्ययन पद्धति सर्वेक्षण :-

अनुसंधान की प्रक्रिया को व्यवहारिक दृष्टि से सरल और उपयोगी बनाने हेतु एक अनुसंधान योजना का निर्माण भी आवश्यक होता है क्योंकि बिना अनुसंधान योजना के शोध कार्य करना इधर-उधर भटकना है जिसमें सफलता की आशा लेशमात्र होती है, मध्य प्रदेश के महाविद्यालयों में खेल की सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन ग्वालियर चम्बल संभाग के विशेष सन्दर्भ में शीषर्क

प्रस्तुत अध्ययन हेते चयन किया गया है। वह अध्ययन प्रमुख भारतीय खेलों के सन्दर्भ में है।

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है। सर्वेक्षण के अन्तर्गत शोध कर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में साक्षात्कार अनुसूची, बनाकर प्राथमिक तथ्य, सर्वेक्षण के माध्यम से संकलित किए हैं। इसके अतिरिक्त द्वितीय समकों का भी उपयोग किया गया है।

संग्रह कार्य :-

यह शोध प्रक्रिया का प्रथम चरण है, इसके अन्तर्गत तथ्यों का संग्रहण, साक्षात्कार, निरीक्षण, अनुसूची एवं प्रश्नावली आदि विधियों के माध्यम से किया जाता है। वास्तव में सही सूचनाऐं प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत सप्पर्क की भी आवश्यकता होती है जिससे सूचनादाता बिना किसी संशय के निष्पक्ष एवं सही सूचना देने के लिए तैयार हो जाये तथा वे किसी तथ्य को छिपायें बगैर समय-समय पर आवश्यक सूचनाऐं उपलब्ध कराते रहें। यह जानने के लिए कि सूचना दाताओं से प्राप्त की गई सूचनाऐं शुद्ध एवं निष्पक्ष हैं, समय-समय पर इनकी जांच करना भी आवश्यक है। सूचनादाताओं से जानकारी एकत्रित करने के अलावा सम्बन्धित सरकारी अर्द्ध सरकारी तथा संस्थागत प्रकाशित अभिलेखों, पुस्तकों एवं फाइलों से भी तथ्य एकत्रित करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय निश्चित करने के बाद शोधार्थिनी ने राज्य सरकार के प्रमुख कार्यालयों में उपस्थित होकर सम्पर्क स्थापित किया एवं उन्हें अपने शोध प्रबन्ध के उद्देश्य से परिचित कराया जिससे वे जानकारी देने के लिए तैयार हुए तथा जानकारी प्राप्त की।

साक्षात्कार :-

एक मनमाना व्यवहार न होकर एक व्यवस्थित प्रणाली है, इसके द्वारा सूचनांए संकलित कर ली जाती है। संस्था में प्रवेश, नौकरी, किसी अधिकारी या

नेता से मिलने के लिए साक्षात्कार की जिस प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है और साक्षात्कार का अर्थ जो दैनिक जीवन में समझा जाता है वह शोध की प्रविधि में किए जाने वाले साक्षात्कार से भिन्न है।[10] अध्ययन के संदर्भ में साक्षात्कार का अभिप्राय किसी से सम्पर्क कर विचारों के आदान प्रदान तक सीमित नहीं है, इसमें साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग प्राथमिक तथ्यों का संकलन करके उसके आध ार पर महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त करना है। डॉ. श्रीमती वी.पी. यंग ने साक्षात्कार को स्पष्ट करते हुए लिखा है "साक्षात्कार को ऐसी क्रमबद्ध पद्धति के रुप में माना जा सकता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आन्तरिक जीवन में थोड़ा बहुत कल्पनात्मक रुप से प्रवेश करता है जोकि उसके लिए सामान्यत: तुलनात्मक रूप से अपरिचित है।''[11]

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि साक्षात्कार प्रविधि एक उपयोगी विधि है जिसके माध्यम से सांख्यकीय विवेचना संभव है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इन्हीं तथ्यों को ध्ययन में रखकर साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया गया है। शोधार्थिनी ने साक्षात्कार अनुसूची बनाकर चयनित 50 न्यादर्शो से सम्पर्क किया। साक्षात्कार में प्रश्न पूछे गए तथा उनके उत्तर भरे गए। साक्षात्कार में क्रमबद्ध लाने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया।

अनुसूची :-

अनुसूची प्रश्नों की वह सूची है जिसे अनुसंधानकर्ता शोध विषय की प्रकृति व उद्देश्य को ध्ययन में रखकर तैयार करता है जिसके माध्यम से इस सूची के प्रश्नों के उत्तर संबंधित व्यक्ति से मिलकर उनसे बात चीत करके प्राप्त करता है अर्थात् वह प्राथमिक सूचनाओं से सम्बन्धित तथ्यों को संकलित करने की एक प्रविधि है। गुड़े एवं हॉट के अनुसार "अनुसूची उन प्रश्नों के एक समूह का नाम है जो साक्षात्कारकर्ता द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति से आमने सामने की स्थिति में पूछे और भरे जाते है।''[12] डॉ. गोपाल ने लिखा है कि अनुसूची का

मुख्य उद्देश्य विभिन्न श्रोतों से प्रत्यक्ष रूप से निश्चित परिणत्मक और वस्तुनिष्ठ तथ्यों को प्राप्त करना है।[13]

शोध छात्रा ने प्राथमिक तथ्यों को अपने चयनित उत्तरदाताओं से वास्तविक व यथार्थ तथ्य करने के लिए प्रश्नों की एक सूची तैयार की। प्रश्नों की इस सूची को पूर्वगामी परीक्षण द्वारा व्यवस्थित किया गया। अनावश्यक व निरर्थक प्रश्नों को बाहर कर व्यवस्थित व आवश्यक किया गया। अनावश्यक व निरर्थक प्रश्नों को बाहर कर व्यवस्थित व आवश्यक प्रश्न अनुसूची के साक्षात्कार अनुसूची के रूप में अध्ययन के दौरान प्रयुक्त किया गया है। अनुसूची में इस बात का विशेष ध्ययन रखा गया है कि बहुत लम्बी तथा उबाऊ न हो और सूचनादाताओं से उत्तर प्राप्त करने में सहयोग हो। सभी प्रश्न इस प्रकार के हैं कि उत्तरदाताओं को समझने में कठिनाई न आवे तथा निसंकोच उत्तर दे सकें। प्रश्नों को क्रमबद्ध और संक्षिप्त रखा गया है ताकि व्यवस्थित वर्गीकरण तथा सारणीयन भी आसान हो सके।

साक्षात्कार अनुसूची दो भागों में विभक्त है प्रथम भाग में सामान्य जानकारी तथा द्वितीय भाग में वित्त, खर्च तथ सुविधा आदि की जानकारी एकत्रित करने हेतु प्रश्न है।

संकलन सामग्री का सम्पादन कार्य :-

जिन तथ्यों को संग्रह किया जाता है उनमें कुछ ऐसे भी तथ्य हो सकते हैं जो अनुपयोगी अथवा अशुद्ध हो। विश्लेषण के द्वारा अशुद्धियां एवं त्रुटियों को दूर किया जा सकता है। अनुपयोगी तथ्यों को अलग कर दिया जाता है। एकत्रित तथ्यों को विश्लेषण योग्य बनाने, उनकी कमियों को दूर करने, अनुपयोगी तथ्यों को हटाने एवं उन्हें क्रमबद्ध करने के कार्य को ही सम्पादन कार्य कहते हे।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधार्थिनी द्वारा संग्रहित किए गए तथ्यों का निरीक्षण किया गया है। त्रुटिपूर्ण, अपूर्ण तथा अस्पष्ट तथ्यों को व्यक्तिगत सम्पर्क के माध्यम से पूर्ण तथा स्पष्ट बनाने का यथा संभव प्रयास किया गया है एवं एकत्रित तथ्यों को विश्लेषण योग्य बनाने के लिए उन्हें व्यवस्थित ढंग से रखा गया है जिससे उनके विश्लेषण से शुद्ध परिणाम ज्ञात हो सकें।

सामग्री का वर्गीकरण :-

एकत्रित सामग्री में से उपयोगी सूचनाओं को पृथक करने के पश्चात् ही उन्हें संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करने हेतु उनका वर्गीकरण किया जाता है जिससे संकलित एवं अव्यवस्थित सामग्री की समानताओं एवं विभिन्नताओं के आधार पर पर कुछ निश्चित वर्गीकरण किया जाता है जिससे संकलित एवं अव्यवस्थित सामग्री की समानताओं एवं विभिन्नताओं के आधार पर कुछ निश्चित वर्गो में प्रस्तुत किया जा सके। निश्चित वर्गो में विभाजित कर लेने से सूचनाओं का स्वरूप सरल एवं छोटा हो जाता है और उन्हें समझना तथा आगामी चरणों में प्रयोग कर सकना सरल हो जाता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने जिन सूचनाओं को एकत्रित किया है उन्हें उनकी प्रकृति के आधार पर विभिन्न सारणियों में अपने शोध प्रबन्ध में यथा स्थान प्रस्तुत किया है।

सामग्री का सारणीयन :-

संकलित सामग्री का वर्गीकरण करने के बाद उसे अधिक तुलनीय स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाने के लिए सारणीयन करना भी आवश्यक है। सारणीयन तथ्यों को संक्षिप्त एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने की क्रिया है जिससे उनका विश्लेषण एवं निर्वचन सरलतापूर्वक किया जा सके।

''किसी विचाराधीन समस्या को स्पष्ट करने के उददे्श्य से किया जाने वाला संख्यात्मक तथ्यों का क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रस्तीकरण है।[14] कोनर

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधार्थिनी ने महत्वपूर्ण संमकों को सम्बन्धित अध्यायों में सारणियों के रूप में प्रस्तुत कर इस अध्ययन को संक्षिप्त एवं पूर्ण बनाने का प्रयास किया है। तथ्यों को स्मरणीय एवं आकर्षक बनाने के दृष्टि से विभन्न सारणियों को आवश्यकता के अनुरूप चित्रों एवं रेखा चित्र द्वारा भी प्रदर्शित किया गया है।

शोधार्थिनी के अध्ययन का विषय संख्यात्मक होने के कारण सारणियों की संख्या अधिक होना निश्चित है इसलिए अध्ययन को पूर्ण बनाने की दृष्टि से सम्बन्धित अध्यायों के तथ्यों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

(5) विश्लेषण, निर्वचन एवं निष्कर्ष :-

समस्त सामग्री को सारणी के रूप में प्रस्तुत करने के बाद उसका विभन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण करना सम्भव हो जाता है। जब तक अध्ययन सामग्री का विश्लेषण नहीं किया जाता है तब तक उसमें निहित विभिन्न तथ्यों की प्रवृतियां एवं कारणों का ज्ञान नहीं हो पाता है। अध्ययन के दौरान कुछ सूचनाएं आवश्यक एवं सम्बन्धित होते हुए भी बहुअर्थक हो सकती है। इसलिए इनका निवर्चन एवं स्पष्टीकरण आवश्यक है। विश्लेषण एवं निवर्चन उपयोगी सिद्ध होगा जबकि इनके आधार पर सामान्य निष्कर्ष निकाले जाये क्योंकि बिना निष्कर्ष गए अध्ययन को अपूर्ण माना जाता है। इन निष्कर्षो के आधार पर ही नवीन तथ्यों एवं ज्ञान की प्राप्ति होने के साथ-साथ अध्ययन के व्यवहारिक पहलुओं की भी पूर्ति होती है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत की गई सारणियों का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण के प्रतिशतों की गणन की गई है। अध्ययन के दौरान जहां जहां बहुअर्थक सूचनाएं मिली है उनका निवर्चन किया गया है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में अध्यायों से संबंधित सूचनाओं, समंकों एवं सारणियों के निष्कर्ष निकाले गए है तथा अन्तिम अध्याय में विभिन्न समस्याओं एवं उनके निदान के लिए उपाय ज्ञात किए गए है। निष्कर्षो का भी निर्वचन किया गया है।

क्षेत्र डायरी :-

शोध अध्ययन में सर्वेक्षण करते समय फील्ड डायरी अत्यन्त आवश्यक है, यह सर्वेक्षण के उपकरणों में एक महत्वपूर्ण उपकरण है। जब शोधकर्ता अनुसूची के अतिरिक्त अनेक सूचरांए एवं तथ्य प्राप्त होते हैं जिन्हें साक्षात्कारकर्ता अनुसूची में अंकित करने में असमर्थ होता है तो इन सूचनाओं को अंकित करने के लिए फील्ड डायरी होना आवश्यक है। शोधार्थिनी ने अपने इस शोध अध्ययन में फील्ड डायरी का प्रयोग किया है। ग्वालियर-चम्बल सम्भाग के चयनित उत्तरदाताओं से सम्पर्क करते समय यह अनुभव हुआ कि कुछ ऐसे उत्तर भी साक्षात्कार दाता के दिमाग में आये तो अनुसूची में नही थे। अतः ऐसे उत्तर फील्ड डायरी में अंकित किये। वर्गीकरण व सारणीयन में इनकी मद्द ली गई। फील्ड डायरी में अंकित कथित तथ्य भी विवेचना करते समय सहसा सिद्ध हुए।

पूर्व परीक्षण :-

पूर्व परीक्षण का शोध कार्य में अत्याधिक महत्वपूर्ण है। इससे सर्वेक्षण के समय आने वाले इस बात का पता चल जाता है कि साक्षात्कार अनुसूची में कोई महत्वपूर्ण पक्ष छूट तो नहीं गया है तथा अनुसूची सन्तुलित बनी है या नहीं।

आर. एल. एफाक ने पूर्ण परीक्षण के सन्दर्भ में लिखा है कि "पूर्व परीक्षण शोध योजनाओं का एक नियंत्रित अध्ययन है जिसका उद्देश्य यह निध ारित करना है कि कौन सा विकल्प सर्वाधिक उपयुक्त है।"[15]

शोधार्थिनी ने इस शोध कार्य में पूर्व परीक्षण हेतु बनाई गई साक्षात्कार अनुसूची को 5 : उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया के आधार पर साक्षात्कार अनुसूची में पूर्व निर्मित प्रश्नों में आवश्यक संशोधन कर साक्षात्कार अनुसूची को उपयोगी बनाया।

द्वितीयक समंक (Secondary data)

द्विती संमक उन समंको को कहते है जो पहले ही अन्य व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा एकत्रित एवं प्रकाशित किए जा चुके है। और शोधकर्ता केवल अपने शोध कार्य के लिए ही प्रयोग करता है। वास्तव में शोधकर्ता द्वारा इन समंको का संकलन स्वयं नहीं किया जाता बल्कि उसके द्वारा उनका प्रयोग होता है। द्वितीय समंको को प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोतों से प्राप्त किया जाता है।

रावर्टस एवं राइट के अनुसार - "वे संमक जिनका किसी अध्ययन हेतु पहले ही लेखन कर लिया गया है। लेकिन अब किसी अनुसन्धान कार्यक्रम में प्रयोग किया जा रहा है, द्वितीय संमक होते हैं।"[16]

किसी शोध कार्य में इन संमको के प्रयोग से मौलिकपन की समस्या उत्पन्न नहीं होती है, द्वितीयक समंको को विश्लेषण योग्य बनाने के लिए उनका उचित रीति द्वारा संपादन करना अनिवार्य होता है। इसका मुख्य कारण यह होता है कि इसमें पायी जाने वाली अशुद्धियों को दूर किया जाता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में द्वितीय संमकों का भी प्रयोग किया गया है। द्वितीय स्त्रोतो के अन्तर्गत विद्वानों द्वारा ग्रन्थ, सर्वेक्षा रिपोर्ट, संस्मरण, एतिहासिक प्रलेख सरकारी आंकड़े तथा रिकार्ड एवं अन्य अप्रकाशित रिकार्ड सम्मिलित हैं।

(ई) निर्देशन का चयन :-

अनुसंधान कार्य में अध्ययन करने की दो पद्धतियां है :-

1. संगणना विधि
2. निर्देशन विधि

संगणना विधि में अध्ययन क्षेत्र की समस्त इकाईयों अथवा व्यक्तियों से सम्बन्धित सूचनाओं को संकलित कर निष्कर्ष निकाला जाता है। निर्दशन विधि का प्रयोग करते समय हम समग्र में से चुने गए ऐसे कुछ को, जो समग्र का उचित प्रतिनिधित्व करते, संकलित कर निष्कर्ष निकालते है।

अतः समग्र में से कुछ इकाईयों को अध्ययन हेतु प्रतिनिधि के रूप में चुनना या छांटना निर्देशन कहलाता है। निदर्शन द्वारा अनुमानों की शुद्धता की परीक्षा भी कर सकते हैं।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ए.एल.बाउले (A.L. Bowle) ने इस पद्धति का प्रयोग करके तथ्यों के अध्ययन को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयत्न किया।[17] इस विधि द्वारा न केवल बहुत अधिक समय और धन की बचत होती है बल्कि विश्वसनीयता और उपयोगिता में भी कोई कमी नहीं आती। आज निदर्शन पद्धति शोध अध्ययन में अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी विधि का स्थान प्राप्त है।

आज कल गहन विश्लेषण एवं मिव्ययिता की दृष्टि से निदर्शन अनुसन्धान विधि का हीं अत्याधिक प्रयोग किया जाता है क्योंकि संगणना अनुसंधान न तो प्रत्येक परिस्थिति में संभव ही है और न आवश्यक होता है। निदर्शन अनुसंधान के द्वारा प्राप्त होने वाले परिणाम वास्तविकता के निकट होते हैं इसके साथ अपेक्षाकृत अधिक वैज्ञानिक भी इसीलिए है। इसीलिए इस विधि का प्रयोग अनुसंधान या शोध कार्य के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इस पद्धति में समग्र की सभी इकाईयों का अध्ययन न करके समग्र में से कुछ ऐसे पदों को कुशलता एवं सावधानी से नमूने के रूप में चुन लिया जाता है जो समग्र का प्रतिनिधित्व करते है और इन प्रतिनिधि इकाईयों का अध्ययन किया जाता है तथा इन्हीं से सम्बन्धित सूचनाएं एकत्रित की जाती हैं इनके आधार पर जो परिणाम ज्ञात किए जाते है उन्हें समग्र पर लागू किया जाता है।

गुडे एव हॉट ने निदर्शन की अत्यधिक संक्षिप्त परिभाषा देते हुए कहा है "एक निदर्शन जैसा कि नाम से स्पष्अ है किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है"[18]

श्री यंग के अनुसार "एक सांख्यिकीय निदर्शन उस सम्पूर्ण समूह अथवा योग का एक अति लघु चित्र है जिसमें से कि निदर्शन लिया गया है।"[19]

सिम्पसन एवं कॉफका के मतानुसार निदर्शन समग्र का वह अंश है जिसका चयन हम अनुसंधान के उद्देश्य के लिए करते है।''[20]

समग्र निदर्शन चुनने के कई प्रकार है। यह सभी वैज्ञानिक प्रणालियां है:-

1. दैव निदर्शन

2. उद्देश्य पूर्ण अथवा सविचार निदर्शन

3. संस्तरित अथवा वर्गीकृत निदर्शन एवं

4. अन्य प्रकार के निदर्शन

शोधार्थी अनुसंधान कार्य आरम्भ करते समय निर्णय करता है कि वह तथ्यों का संकलन संगणना विधि से समग्र इकाईयों से करे या निदर्शन विधि से। यदि वह निदर्शन विधि अपनाना चाहता है अर्थात् वह समग्र में से चयनित इकाईयों द्वारा तथ्यों का संकलन करना चाहता है तो उसको यह निर्णय लेना होता है कि निदर्शन की किस विधि को अपनायें ?

उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि :-

"शोधकर्ता किसी विशेष उद्देश्य को सामने रखकर जानबूझकर समग्र में से कुछ इकाईयों का चुनाव करता है तो उसे उद्देश्य पूर्ण निदर्शन कहते है।''[21]

उद्देश्यपूर्ण निदर्शन में चुनाव का आधार अध्ययन का उद्देश्य होता है तथा अपने उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उसी के अनुरूप अनुसन्धानकर्ता सम्पूर्ण क्षेत्र सर्वाधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण इकाईयों का चयन करता है। इस प्रकार अध्ययन के उद्देश्यों को अपना मार्गदर्शन मानते हुए उद्देश्य की पूर्ति के उपयुक्त निदर्शनों का विचार पूर्वक चुनाव करने के कारण ही इसे उद्देश्य पूर्ण निदर्शन कहते हैं।

श्री एडोलफ जेन्सन ने लिखा है ''ग्वालियर निदर्शन से अर्थ है इकाईयों के समूह की एक संख्या को इस प्रकार चुनना कि चुने हुए समूह मिलकर उन विशेषताओं के सम्बन्ध में यथा सम्भव वही औसत अथवा अनुपात प्रदान करें जो कि समग्र में है और जिनकी सांख्यिकीय जानकारी पहले से ही है।''[22]

इस प्रस्तुत शोध कार्य में उद्देश्य पूर्ण निदर्शन को अपनाया गया। अपने उद्देश्य को ध्ययन में रखकर सम्पूर्ण क्षेत्र को सर्वाधिक प्रनिनिधित्वपूर्ण इकाईयों का चयन किया है। अतः सम्पूर्ण क्षेत्र में से 50 महाविद्यालय को इकाईयों के रूप में चयन किया है।

सारणी - 2.5
चयनित महाविद्यालय
ग्वालियर - चम्बल संभाग

जिला	कुल महाविद्यालय	चयनित महाविद्यालय
ग्वालियर	50	20
शिवपुरी	11	04
गुना	16	07
दतिया	07	03
श्योपुर	02	02
मरैना	15	06
भिण्ड	19	08
	120	50

सारणी - 2.6
चयनित महाविद्यालय
ग्वालियर - चम्बल समभाग
शासकीय एवं अशासकीय

जिला - ग्वालियर शासकीय महाविद्यालय :-

1. शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर
2. शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर
3. शास. श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर,
4. शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर
5. डा. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर
6. गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर
7. नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर
8. वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा
9. शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर
10. शास. महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर
11. शास. कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर
12. शास. आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर

जिला-ग्वालियर अशासकीय महाविद्यालय :-

13. माधव महाविद्यालय, नई सड़क, ग्वालियर
14. जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय, बिरलानगर, ग्वालियर
15. महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, चार शहर का नाका, ग्वालियर
16. का लेज आफ नर्सिंग, (कैंसर चिकित्सालय) कैंसर हिल्स, ग्वालियर

17. पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर

18. वसुन्धरा राजे होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, गिरवाई नाक, ग्वालियर

19. माधव इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी एण्ड सांइस मेलो ग्रांउड रोड, ग्वालियर

20. कॉलेज आफ लाईफ सांइस (कैंसर चिकित्सालय) कैंसर हिल्स, ग्वालियर

जिला-शिवपुरी शासकीय महाविद्यालय :-

21. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी

22. शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी

23. शास. तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय, शिवपुरी

24. शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी

जिला-गुना शासकीय महाविद्यालय :-

25. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना

26. शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, अशोक नगर, गुना

27. शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना

28. शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना

29. शास. महाविद्यालय, राधोगढ़, गुना

30. शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना

31. शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा, बीनगंज, गुना

जिला-दतिया शासकीय महाविद्यालय

32. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया

33. शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया

जिला-दतिया अशासकीय महाविद्यालय :-

34. पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया

जिला-श्योपुर कलां शासकीय महाविद्यालय :-

35. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां

जिला-श्योपुर कलां अशासकीय महाविद्यालय :-

36. श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, भयोपुर कलां

जिला-मुरैना शासकीय महाविद्यालय :-

37. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना
38. शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना
39. शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना
40. शास. महाविद्यालय, जौरा मुरैना

जिला-मुरैना अशासकीय महाविद्यालय :-

41. अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना
42. ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना

जिला-भिण्ड शासकीय महाविद्यालय :-

43. शास. एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड
44. शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड
45. शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, भिण्ड
46. शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड
47. शास. महाविद्यालय, भिण्ड

जिला-भिण्ड अशासकीय महाविद्यालय :-

48. चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड
49. चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड
50. श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड

अध्ययन पद्धति :-

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अध्ययन हेतु ग्वालियर चम्बल-सम्भाग के 120 महाविद्यालय में से उद्देश्य पूर्ण निदर्शन पद्धति से 50 महाविद्यालयों का चयन किया। चयल करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा कि ग्वालियर चम्बल-सम्भाग के प्रत्येक जिले के महाविद्यालयों के कम से कम 40 प्रतिशत महाविद्यालयों का चयन हो। क्षेत्र का न्याय पूर्ण प्रतिनिधित्व के उद्देश्य से श्योपुर एवं मुरैना में एक-एक महाविद्यालय अधिक सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार कुल चयनित महाविद्यालयों की संख्या 48 + 2 = 50 हो गई। इनमें 35 महाविद्यालय शासकीय हैं तथा 15 महाविद्यालय अशासकीय हैं। ऐसे महाविद्यालय जो हाल ही में अथवा कुछ वर्षो पूर्व खुले हैं और जो सुविधा विहीन हैं उन्हें इसमें शामिल नहीं किया गया है।

प्रस्तावित शोध कार्य वर्णनात्मक प्ररचना पर आधारित है। सर्वेक्षण पद्धति से तथ्यों का संकलन कर उनका विश्लेषण शोध प्रबन्ध में किया गया है। अतः सर्वेक्षण पद्धति तथ्य संकलन का मूलाधार है। तथ्यों के व्यवस्थित संकलन एवं सर्वेक्षण को वैज्ञानिक रूप प्रदान करने के लिए उपकल्पनाओं एवं उद्देश्य को ध्ययन में रखकर साक्षात्कार अनुसूची का सृजन किया तथा पूर्वगामी सर्वेक्षण में उसकी प्रमाणिकता को परखने के पश्चात् उसे अंतिम रूप प्रदान किया। तत्पश्चात् ग्वालियर चम्बल सम्भाग के चयनित 50 महाविद्यालयों के कोच, क्रीड़ा अधिकारी (निर्देशक) एवं अन्य न्यायदर्शो के पास शोधकर्ता साक्षात्कार अनुसूची लेकर व्यक्तिगत सम्पर्क से तथ्य संकलित किए। प्राथमिक तथ्यों के साथ द्वैतीयक तथ्यों का भी आवश्यकतानुसार संकलन कर वर्गीकरण व सारणीयन करने के उपरान्त प्राथमिक व द्वैतीयक तथ्यों का विश्लेषण शोध में किया। प्राप्त तथ्यों के आधार पर ही निष्कर्ष प्रतिपाति किए। आवश्यकतानुसार मानचित्र एवं आरेख बनाये गये है।

1. कई महाविद्यालयों तक जाने के लिए सड़क यातायात ही उपलब्ध है अत: बस से जाना संभव हो सका और उसी दिन वापसी संभव नहीं थी अत: रूकना वा रूककर सूचनाएं प्राप्त की।

2. कई महाविद्यालय में उत्तरदाता नहीं मिले अत: पुन: जाकर सूचनाएं प्राप्त की।

3. कुछ उत्तरदाता ऐसे थे जो महाविद्यालय में तो मिले परन्तु समयाभाव अथवा व्यवस्ता का बहाना कर फिर कभी आने को कहा अत: उनकी सुविधानुसार उनसे सम्पर्क कर सूचनाएं प्राप्त की।

4. शोधार्थिनी प्रत्येक सूचनादाता से साक्षात्कार एकान्त में ही लेना चाहती थी परन्तु कई बार अन्य लोगों के उपस्थित हो जाने से उत्तरदाता सही उत्तर देने से कतराते थे अत: ऐसे स्थानों पर शोधार्थी ने पुन: सम्पर्क कर सही जानकारी प्राप्त की।

5. अशासकीय में छात्र-छात्राओं से प्राप्त धन का कितना भाग खेलों पर खर्च किया जात है, यह वास्तविकता विशेष कठिनाई से उपलब्ध हो सकी।

6. कुछ उत्तरदाता सेसे थे जो अपनी वास्तविक आमदनी बताने में कतरा रहे थे कि कहीं कोई आयकर का चक्कर न पड़ जाये अत: उन्हें सन्तुष्ट कर सूचनाएं प्राप्त की।

7. पुस्तकें उपलब्ध होने में कठिनाई आई क्योंकि महाविद्यालयों में भारतीय खेल सम्बन्धी पुस्तकों का अभाव है। तथा विश्वविद्यालयीन पुस्तकालय में भी जर्नल एवं शोध ग्रन्थ तो पर्याप्त हैं परन्तु खेल सम्बन्धी जर्नल एवं पुस्तकों का अभाव है।

सन्दर्भ सूची

1 संचालक भू अभिलेख, ग्वालियर

2 जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

3 जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

4 भारत की जनगणना 2001 मध्य प्रदेश श्रखंला 24 निदेशक जनगणना मध्य प्रदेश एवं संचालक भूअभिलेख, ग्वालियर

5 जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

6 जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

7 जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

8 सुधा गुप्ता — अप्रकाशित शोध प्रबन्ध जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर 1995-पृष्ठ 23

9 लुण्डबर्ग, जार्ज ए. — सोशल रिसर्च 1951 पृष्ट 1

10 अग्रवाल जे.के. एवं — सामाजिक शोध 1998 पृष्ठ 333-334

11 यंग पी.वी. — साइन्टीफिक सोशल सर्वेज एण्ड रिसर्च 1960, पृष्ट 242

12 गुडे एण्ड हॉट — मैथड्स इन सोशल रिसर्च 1951 पृष्ठ 133

13 गोपाल एम. एच. — एन इन्ट्रोडक्स टू रिसर्च प्रोक्योर इन सोशल साईन्स पृष्ठ 142

14 सुधा गुप्ता — अप्रकाशित शोध प्रबन्ध जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर 1995-पृष्ठ 29

15 एफोक आर. एल. — डिजाइन आफ सोशल रिसर्च पृष्ठ 340

16 शुक्ला एवं सहाय — 1984 सांख्यिकी के सिद्धान्त साहित्य भवन आगरा

17 अग्रवाल जे.के. एवं पाण्डे एस. एस. — सामाजिक शोध पृष्ठ 202

18 जोहाद एण्ड कुक — रिसर्च मैथडस इन सोशल रिसर्च पृष्ठ 39

19. यंग पी.बी. — साइन्टीफिक सोशल रिसर्च 1960 पृष्ठ 302

20 सिम्पसन काफका — बेसिक स्टैटिस्टिक्स 1966 पृष्ठ 383

21 मुखर्जी रविन्द्रनाथ — सोशल रिसर्च एण्ड स्टैटिस्टिक्स 1998 पृष्ठ 296

22. सोशल रिसर्च एण्ड स्टैटिस्टिक्स 1998 पृष्ठ 296

23. जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

24. जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

अध्याय 3

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

मध्य-प्रदेश के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं के विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय पर इसी रूप में अध्ययन कार्य किया गया हो, यह तो तमाम अध्ययन के पश्चात् भी शोधार्थिनी को ज्ञात नहीं हो सका किन्तु भारतीय खेलों पर कुछ अध्ययन अवश्य हुए हैं। श्री अजय भल्ला ने राष्ट्रीय खेलों का वर्णन करते हुए भारत में राष्ट्रीय खेल कबड्डी खेल की मूल निपुणताओं को समझाया है।[1]

श्री लक्ष्मी कान्त पाण्डे ने प्रमुख भारतीय खेलों का सविस्तार उल्लेख किया है जो शोध कर्ता के मूल आधार रहे हैं उन्होंने अपने ग्रन्थ भारतीय खेलों की मीमांसा में कबड्डी, खो-खो, कुश्ती एवं आट्या-पाट्या पर प्रकाश डाला है तथा एक स्थान पर उन्होंने कुश्ती की परम्परा, महत्व एवं प्राचीनता का उदाहरण देते हुए लिखा है कि भीम-जरासन्ध का मल्ल युद्ध पन्द्रह दिन तक चला था।[2]

डॉ. एम. एल. कमलेश ने खेलों के सिद्धान्त एवं खिलाड़ियों के व्यक्तितव का वर्णन करते समय एक स्थान पर लिखा है कि कुछ खिलाड़ी खेल में इस प्रकार रच जाते हैं कि वे यथार्थ से बहुत दूर निकल जाते हैं तथा खेल को अभौतिक (Meta Physical) स्तर तक लाकर आत्म-श्लाघा (Self Praie) प्राप्त करते हैं।[3]

श्री ग्रन्थ सिंह एवं व्यास देव शर्मा ने अपने शारीरिक शिक्षा ग्रन्थ में भारतीय एवं विदेशी अनेक खेलों की चर्चा की है एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि खो-खो खेल की चर्चा रामायण एवं महाभारत में कई स्थानों पर की गई है।[4]

बालमीकि रामायण और महाभारत में सुन्दर विशाल क्रीड़ा क्षेत्रों, सभा भवनों, क्रीड़ा भूमियों एवं रंग भूमियों का जिक्र है।[5]

राजपुत्रों को स्वयं अखाड़ों में जाकर मल्ल विधा का अभ्यास करने का वर्णन महाभारत में है। अन्तर यह है कि उस समय अखाड़े को रंग (arenou) कहते थे।[7]

सन्दर्भ - ग्रन्थ

भल्ला अजय	राष्ट्रीय खेल कबड्डी
पाण्डे लक्ष्मी कान्त	भारतीय खेलों की मीमांसा
कमलेश एम. एल.	क्रीड़ा मनोविज्ञान
सिंह एवं व्यास	प्रयोगात्मक शारीरिक शिक्षा
रामा. 1/17	धनुष यज्ञ की रंग भूमि
महा, सभापर्व 2/47	सभा भवन
महा. आदि पर्व 1/133	

डॉ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा तथा जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर में भी अनेक शोध कार्य किए गए हैं जिनका अध्ययन शोध-कर्ता ने किया। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में ऐसे ग्रन्थों की चर्चा करना समीचीन है। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय में शारीरिक-शिक्षा विषय पर किए जाने वाला यह मेरा प्रथम शोध प्रबन्ध है, अतः इस विश्वविद्यालय के अन्य विषयों के शोध प्रबन्धों का भी अवलोकन किया एवं सहायता प्राप्त की।

शोधार्थिनी द्वारा अध्ययन किए गए उपरोक्त समस्त ग्रन्थ किसी न किसी रूप में मध्य-प्रदेश के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं के विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु अपने ढंग से व्याख्या एवं विवेचना करते है तथा किसी न किसी प्रकार से शोध कार्य में सहायक हैं।

शोधार्थिनी ने मध्य प्रदेश के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं के विश्लेषणात्मक को सुक्ष्म अध्ययन पद्धति से, अध्ययन कर सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त प्राथमिक तथ्यों के आधार पर महाविद्यालयों में प्राप्त होने वाली सुविधाओं को वर्णित किया है। इस रूप से प्राथमिक तथ्यों पर किया गया यह अध्ययन मौलिक अध्ययन है। इसमें कोई भी पुनरावृत्ति नहीं हुई है।

मौलिक एवं विशिष्ट अध्ययन होने से यह अपने आप में महत्व रखता है। शोधकर्ता अपने ज्ञान एवं विश्वास के आधार पर यह कह सकता है कि मध्य-प्रदेश के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक विषय अध्ययन की दृष्टि से अछूता था, इसलिए अपनी अज्ञानता को दूर करने के लिए व ज्ञान की पिपासा को बुझाने के लिए शोधार्थिनी द्वारा किया गया यह अल्प प्रयास है।

अनुसंधान कार्य सफलता पूर्वक करने के लिए उस समस्या से सम्बन्धित साहित्य की जानकारी अनुसंधान कर्ता के लिए बहुत ही आवश्यक है। अनुसंधान कार्यो को पूर्ण करने के लिए बहुत ही आवश्यक़ है। अनुसंधान कार्य में किसी भी समस्या का हल, व निष्कर्ष निकाले जाते है।

अनुसंधान कार्यो को पूर्ण करने के लिए अनंसधानकर्ता विभिन्न पूर्ण किये हुये शोधकार्यो तथा विभिन्न ग्रन्थालय में उपलब्ध किताबो, पत्र-पत्रिकाओ तथा शोध साहित्यों का उपयोग अपने अध्ययन के लिए किया है। पूर्व अनुसंधान कार्यो से अनुसंध ान कर्ता अपने अध्ययन से अधिक सफलता और सरलता से कार्य कर सकता है क्योंकि यह रह गयी कमियों को जान कर उन्हे पूर्ण कर सकता है साथ ही समस्या की पुनरावृत्ती की भी सम्भावना नहीं रहेगी।

सम्बन्धित साहित्य के अभाव में अनुसंधान कार्य कठिन बन गया उस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य द्वारा बडे पैमाने पर उन्नति होती है।

शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में जो भी कार्य किये गये हैं उनसे सम्बन्धित साहित्यों का अध्ययन किया गया है। अभी तक विद्यालयों से सम्बन्धित लडकों एवं लडकियों की शारीरिक क्षमता के मूल्यांकन किये गये और निष्कर्ष भी निकाले गये इनमें से कुछ परिक्षणों का प्रस्तुतीकरण जो हमारे अध्ययन से सम्बन्धित है वह इस प्रकार है।

शारीरिक क्षमता[1] के क्षेत्र में जो भी कार्य किये है उन परिक्षणों में अहंपर युथ फिटनेस टेस्ट सन् 1954 में किया गया जिसका उद्‌देश्य अमेरिकी नव युवको की शारीरिक क्षमता का पता लगाना था।

---

[1]*आफसेट पृष्ठ 178*

समिती ने 1956-57 में छात्रों का परिक्षण किया। सन् 1960 मानक डिराइडेट किये गये विद्यालयों के लिए मानक तैयार किये गये जो कि विभिन्न संस्थाओं के 2200 विद्यार्थियों तक आधारित है।

बून ने[2] सन् 1967 में अर्बन और रूरल छात्रो की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। इसके अध्ययन हेतू उन्होने 100 अर्बन और 100 रूरल छात्रों का चयन किया। उन्होंने अपने निष्कर्ष में अर्बन छात्रों की सुविधा रूरल छात्रों से अधिक थी।

बैरिट ने[3] 1963 में सैन डिआरगो स्कूल में खेल सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया इसके लिए इन्होने केलोफोर्निया प्रश्नावली का उपयोग किया 1900 सीनियर लडके जिन्होने 3 साल का शारीरिक शिक्षा का कोर्स पूण्र किया था। तथा 125 लडकें जिन्होंने 3 साल का मीलिर्टी साइन्स का कोर्स पूरा किया था। इस अध्ययन के लिए चुने निष्कर्ष में बताया कि शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थी मीलिर्टी साइन्स के विद्यार्थियों से अच्छे थे।

केलिहर[4] ने 1960 पूर्वी पाकिस्तानी लडकों तथा लडकियों सक सुविधाओं का अध्ययन किया। इसके लिए उन्होने प्रश्नावली का उपयोग किया। परिणाम में उन्होने बताया कि पाकिस्तानी लडकों, लडकियों की सुविधाएँ, यूरोपीय देशों के लडके, लडकियों से कम है।

---

[2]बून हरमन ''अर्बन तथा रूरल छात्रों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन'' कम्पलीटेड रिसर्च इन हैल्थ फिजीकल एज्यूकेशन एण्ड रिक्रिएशन, वॉ. 10, 1967, पृष्ठ 86

[3]बैरेन बैरिट, ''सैन डियारगो सिटी स्कूल के छात्रों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन कॅलिफोर्निया'' (कम्प्लीटेड् रिसर्च इन हैल्थ फिजिकल एज्यूकेशन एण्ड रिक्रीएशन वाल्यूम-6), 1963, पृष्ठ 52.

[4]केलिहर एम. एस., ''पूर्वी पाकिस्तानी छात्रों की सुविधाओं के ऊपर एक रिपोर्ट, रिसर्च क्वाटरली-31, 1960 पृष्ठ 34.

चार्ल्स[5] ने अप्रैल में समान प्रयोग होने वाले खेल और बिना साहित्य के खेल के खिलाडियों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। बास्केट बॉल, फूटबॉल, हाकी, कबड्डी तथा खो-खो के खिलाड़ियों, जिनकी आयु 18-20 थी। उनका परीक्षण किया गया। कबड्डी के खिलाडियों से अधिक थी। कबड्डी के खिलाडियों में खो-खो, बास्केटबॉल, फुटबॉल और हाकी के खिलाडियों की अपेक्षा "ताकत" अधिक थी।

मार्गरिट[6] ने सुविधाओं के अध्ययन के लिए 45 युनिवर्सिटी के खिलाडियों में से प्रशिक्षार्थीओं की रेडम, प्रणाली से चुना गया। इसी प्रकार नियन्त्रण समूह भी चुना गया। समूह को सप्ताह में तीन दिन से 5 घन्टे तक बास्केटबॉल का अभ्यास दिया गया। और 10 इण्टर कोलिनीएट खेल इन्होंने खेले प्रशिक्षण के पूर्व तथा पश्चात् दोनों समूह का परिक्षण किया गया, जिनमें सिटप्स, बटिग्कल जम्पस, 600 गज दौड, गडीसन बाल थ्रो, हाथ की पकड, स्काट रिच एबीलिटी का समावेश था।

तरूण कुमार[7] ने 1982 में फुटबॉल और हाकी के खिलाडियों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। जीवाजी विश्वविद्यालय की वर्तमान टीमों में से 15-15 खिलाडियों का परिक्षण किया गया। खिलाडियों की औसत आयु 20 वर्ष थी। इनके सांख्यिकी विश्लेषण से अहंफर युथ फिटनेस टेस्ट से परिक्षण किये गये। हॉकी खिलाडियों का पुलअपस अच्छा था। फुटबॉल खिलाडियों को ड्रैश अच्छा था।

5चार्ल्स जोसलेट, साहित्य प्रयोग होनेवाली और साहित्य प्रयोग न होनेवाली खेल के खिलाडियों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन एल. एन. पी. ई. ग्वालियर।

6ए. मार्गरिट अरांधी, "इफेक्ट ऑफ बास्केटबॉल, आनमीटर, आफीसिएन्सी, आफ कालेज वुमेन, एस. मभी वाय सिलेक्ट एजूकेशन एवं रिक्रेशन वाल्यूम 7, 1963, पृ. 53.

7तरूण कुमार चट्टोपाध्याय, "फुटबॉल और हॉकी अध्ययन", जीवाजी विश्वविद्यालय की स्नाकोत्तर की उपाधि हेतू, (अप्रकाशित) 1982.

क्रेज[8] ने कनेडियन तथा दक्षिण अफ्रीका के स्कूल के बच्चो की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। इसके लिए उन्होने प्रश्नावली का उपयोग किया। इन्होने अपने अध्ययन का परिणाम निकाला कि दक्षिण अफ्रीका की बच्चों की सुविधाऐं कनेडा के स्कूल के बच्चों से कम है।

वैरिट[9] ने सेन डिपान्गो स्कूल में शारीरिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया इसके लिए उन्होंने कैलोफोर्निया फिजीकल परिक्षण का उपयोग किया। 1900 सीनियर लडको जिन्होने 3 वर्ष का शारीरिक शिक्षा कोर्स किया था। अध्ययन के लिये चुना। 125 सीनियर लडके जिन्होंने साल का मिलीट्री साइन्स का कोर्स पूर्ण किया था अध्ययन के लिये चुनाव किया। परिणाम से इन्होने पाया कि शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थी मिल्ट्री सांइन्स के विद्यार्थीयों से ज्यादा क्षमता युक्त थे।

डिगीयोवानना[10] ने अपना परिक्षण कालेज के 17-24 वर्ष के एथ्लीटो पर किया। उन्होंने अपने परिक्षण में बताया है कि शरीर रचना, मांसपेशियों की ताकत व विस्फोटक शक्ति एथलाटों की सफलता कि लिए महत्वपूर्ण है।

नाथिको आइकोवा[11] ने 1963 में शारीरिक क्षमता पर एक परिक्षण किया इसके अध्ययन के लिए आइजोवा के 355 तथा टोकियो के 355 बच्चों का चुनाव किया जिनकी आयु 9-12 वर्ष थी। इनकी शारीरिक बनावट को देखेने पर आइजोवा

---

[8]*क्रेज वैरी, "कनेडियन और दक्षिण अफ्रीकी छात्रो की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन", रिसर्च क्वाटरजी, वाल्यूम 34, 1963, पृ. 244।*

[9]*वरेन वैरिट, "सेन डिपान्गों में सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन", सेन डिपान्गो स्टेट कॉलिज कैलीफोर्निया, रिसर्च क्वाटरली, वाल्यूम 6, 1963, पृ. 133.*

[10]*डिगीयोवानना विनसेट, "दि रिलेशन आफ सलेक्टेड इस्ट्रेक्चरल एण्ड फंसनल मेजर टू सेक्सीस इन एथलेटिक्स" रिसर्च क्वाटरली, वाल्यूम 13, 1983, पृ. 199.*

[11]*नायिको आइकोवा, "आइकोवा तथा टोकियों के बच्चों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन", रिसर्च क्वाटरली, वाल्यूम 33, 1963, पृ. 542.*

की बालको की सुविधाएँ अच्छी थी लेकिन टोकियों के बच्चों की शारीरिक क्षमता अधिक थी।

पेनीर[12] ने जून 1984 में क्रोडा विद्यालय और सामान्य विद्यालय के 120 छात्रों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें क्रीडा विद्यालय के 120 और सामान्य विद्यालय के 120 को चुना गया। अहफर यूथ टेस्ट प्रयोग मे लाया गया परिणाम में क्रीडा विद्यालय के छात्रों की शारीरिक क्षमता सामान्य विद्यालय के छात्रों की शारीरिक, क्षमता से अधिक थी।

फिलोरेन्स[13] ने 1963 में जूनियर हाईस्कूल के छात्रों की शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिये 4 पद्धतियों की तुलना की केलेस्थेनिक, आयसोमैट्रीक, व्यायाम रस्सीकूद और शारीरिक शिक्षा प्रोग्राम का चार पद्धतियों में परिक्षण किया। 3 माह बाद मोटर फिटनेस टेस दोहराया गया। जिसमें पाया गया कि सभी समूहों का अच्छा परिणाम पाया गया।

प्रकाश[14] ने मार्च 1984 में फुटबॉल व क्रिकेट के खिलाडियों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन ग्वालियर में किया। अध्ययन के लिए दो खेलों से 15-15 खिलाडियों को चुना गया। जिसमें प्रश्नावली का उपयोग किया गया। पाया गया कि

---

[12]सेकमन ए. पेनीर, ''क्रीडा विद्यालय और सामान्य विद्यालयों मे सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन'', स्नाकोत्तर की उपाधि हेतू समर्पित, एल. एन. सी. पी. ई., ग्वालियर, 1984 (अप्रकाशित)।

[13]बाल जे. फेलोरेन्स, ''जूनियर हाईस्कूल की छात्रों की सुविधाओ का तुलनात्मक अध्ययन'', मास्टर आफ स्पोर्टस् हेतू मर्कनासेस स्टेट कॉलेज अर्कनासस 1986 में जमा किया गया (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) कम्पीटिड रिसर्च इन हेल्थ एण्ड फिजीकल एजूकेशन रिक्रेशन, वाल्यूम 9, 1986, पृ. 192.

[14]गजैन्द्र प्रकाश, ''फुटबॉल और क्रिकेट के खिलाडियों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन'', स्नातकोत्तर उपाधि की हेतू समर्पित लघुशोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), जिवाजी, ग्वालियर, 1984.

फुटबॉल खिलाडियों की पेशिये शक्ति क्रिकेट के खिलाडियों की तुलना में अधिक पायी गयी। क्रिकेट के खिलाडियों की कन्धो की शक्ति ज्यादा थी।

राय[15] ने 1966 में आजमगढ जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के पहलवानों की शारीरिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया इस अध्ययन के द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के पहलवानों की शारीरिक क्षमता में कोई विशेष अन्तर नहीं है। शहरी क्षेत्रों के पहलवानों की गति ग्रामीण क्षेत्र के पहलवानो से ज्यादा थी।

तनेजा[16] ने 1978 में 14-17 वर्ष वक के दिल्ली क्षेत्र के 100 शहरी तथा 100 ग्रामीण स्कूली छात्रों की शारीरिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसमें अहंफर युथ फिटनेस् टेस्ट तथा एम. पी. ई. डी. का प्रयोग किया गया। अहफंर की मध्यांक से शहरी तथा ग्रामीण स्कूलों के छात्रों की सुविधाओं में बहुत कम अन्तर पाया गया। इसी प्रकार एम. पी. ई. डी. परिक्षण में भी शहरी व ग्रामीण छात्रों के मध्यांक में बहुत कम अन्तर पाया गया और 0.5 स्तर पर जो मध्यांक का अन्तर मिला वह समान कारक रहा।

बुन[17] ने 1962 में सेकेण्डरी स्कूल के छात्रों की योग्यता एवं शारीरिक क्षमता का मुल्यांकन किया। याकोहामा और वाशिंगटन के कक्षा 7 - 8 के छात्रो के ऊपर यह परिक्षण किया गया तथा अहंफर परिक्षण प्रयोग किया गया। याकोहामा के मुकाबले वाशिंगटन के छात्रों में सामान्य प्रगति दिखाई दी।

---

[15]अजय नाथ राय, ''1986 में आजमगढ जिले के शहरी व ग्रामीण पहलवानों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन'', लघुशोध प्रबन्ध अमरावती विश्वविद्यालय की उपाधि की हेतू समर्पित (अप्रकाशित), अमरावती, 1960.

[16]गिरीश कुमार तनेजा, ''शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन जीजीबाई विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर की उपाधि हेतू लघू शोध प्रबन्ध (अ. प्र.) 1978.

[17]जेम्स बानर बुन, ''सेकेण्डरी स्कूल के छात्रों की योग्यता एवं शारीरिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन स्वास्थ शिक्षा शारीरिक शिक्षा व मनोरंजन में अनुसंधान संस्करण 4, 1962 पृ. 8.

सुरे[18] ने 1988 में हॉकी, बास्केट बॉल तथा वालीबॉल पर शारीरिक क्षमता का अध्ययन किया अध्ययन के लिए महिला खिलाडियों जो अमरावती विश्वविद्यालय की थी को लिया प्रत्येक समूह में 30-30 खिलाडियों को चुना। इसमें सुविधा मापन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया। जिसमें प्रत्येक खेल के शारीरिक क्षमता स्तर भिन्न-भिन्न था। गति तीनों खेलों के खिलाडियों में समान्तरथी। बास्केटबॉल के खिलाडियों में चपलता और वालबॉल खिलाडियों में पेशिय शक्ति पायी गयी।

पाण्डे[19] ने 1987 में बिलासपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक छात्रों पर अध्ययन किया अध्ययन के लिये अहंफर परिक्षण तैयार किया गया। अध्ययन में इन्होने पाया कि शटल रन तथा 50 Yard dash में समानता है। पूलप्स, सिटप्स तथा 50 यार्ड डेश में समानता है। पूलप्स, सिटप्स तथा 50 यार्ड रन एण्ड वाक में आदिवासी बच्चे अच्छें है इस प्रकार आदिवासी छात्रों की क्षमता गैरआदिवासी छात्रों से अधिक है।

रे[20] ने त्रिपुरा की 60 आदिवासी व 60 शहरी छात्रों की शारीरिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन अहंफर युथ टेस्ट के माध्यम से किया। ये छात्र एल.वी.वी. कॉलेज के थे जिनकी आयु 16-18 वर्ष थी। परिणाम पाया कि शहरी लडके पुलप्स और साफ्ट बाल थ्रो में अच्छे थे। इन दोनों घटकों में सांख्यिकी अन्तर .04 पाया गया। अन्य घटकों में दोनो समुहों की निष्पादन क्षमता में विशेष अन्तर नही पाया गया।

---

[18]*माधुरी सुरे, ''हॉकी, बास्केटबाल तथा वालीबॉल खिलाडियों की सुविधाओ का तुलनात्मक अध्ययन'' स्नातकोत्तर उपाधि हेतू समर्पित लघु शोधप्रबन्ध (अप्रकाशित), अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती, 1980.*

[19]*मनीष पाण्डे, ''बिलासपुर जिले के आदिवासी तथा गैरआदिवासी छात्रों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन'', स्नातकोत्तर उपाधि हेतू समर्पित लघु शोधप्रबन्ध (अप्रकाशित), अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती, 1988.*

[20]*कृष्णकुमार रे, ''त्रिपुरा राज्य के आदिवासी तथा शहरी छात्रों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन'' स्नातकोत्तर उपाधि हेतु सादर लघुशोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर 1989.*

शर्मा[21] ने अमरावती जिले के अनतर्गत आनेवाले माध्यमिक विद्यालय के आदिवासी तथा गैरआदिवासी छात्रों की शारीरिक क्षमता का पता लगाने के लिए 1988 में परिक्षण लिया। उन्होने अहंफर यूथ फिटनेस टेस्ट का प्रयोग किया। उन्होने पाया कि आदिवासी छात्रों की शारीरिक क्षमता अधिक है। शटल नर व 50 यार्ड में समानता थी। आदिवासी छात्रों की पेट की मांसपेशी व पैरो की ताकत सहनशक्ति गैरआदिवासी छात्रों से ज्यादा थी।

सम्बन्धित साहित्य एवं निष्कर्ष :

उपरोक्त सीाी साहित्य का अध्ययन करने से पूर्व ऐसा पता चलता है कि शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में हमारे देश में इस क्षेत्र के अनुसंधान बहुत कम संख्या में उपलब्ध है। अन्य क्षेत्रों में वे अनुसंधानों की तुलना में नहीं के बराबर है।

अपने देश के अन्दर शोधप्रबन्ध इससे सम्बन्धित है ताि मिलते है जोभी अनुसंधान कर्ता को उपलब्ध हो सके है उनके आधार पर आदिवासी तथा गैरआदिवासी छात्रों की सुविधा पर हुए अनुसंधान को देखने का प्रयास उन साहित्यों को देखने से पता चलता है कि आदिवासी छात्रों का स्तर पुर्णतय: भिन्न रहता हैं।

[21]*एस.जी. शर्मा, ''अमरावती जिले के अन्तर्गत आनेवाले माध्यमिक विद्यालयों के आदिवासी तथा गैरआदिवासी छात्रों की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन'', 1988.*

अध्याय 4

अध्ययन क्षेत्र की मानचित्रीय प्रस्तुतीकरण

(अ) भौगोलिक दशाएं

(ब) सामाजिक दशाएं

(स) आर्थिक दशाएं

(अ) भौगोलिक दशांए :-

खेले जाने वाले खेल किसी क्षेत्र में तथा उनके खेलने का समय, उस क्षेत्र की भोगोलिक दशाओं पर ही निर्भर होता है अतः शोधकर्ता को अध्ययन करना भी उचित प्रतीी होता है। स्थानीय धरातल का भी यहां की जलवायु पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

जलवायु :-

जलवायु का मानव जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि मनुष्य की सभ्यता एवं विकास जलवायु पर ही निर्भर है। किसी क्षेत्र की जलवायु उस क्षेत्र के निवासियों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से अपना प्रभाव अवश्य डालती है। शारीरिक संरचना, खान-पान" रहन-सहन अधिवास, प्रवृत्ति विचारधार आदि जलवायु से ही नियंत्रित होते हैं,

जे. पापाडिकिस के अनुसार "जलवायु भौतिक पर्यावरण का सर्वाधि क प्रभावकारी तथा महत्त्वपूर्ण अवयव है।"[2]

एल्सवर्थ हंटिगटन के मतानुसार "मनुष्य के साधारण गुण जैसे ईमानदारीण फुर्तीलापन जलवायु का ही परिणाम हैं, अनेक देशों में फेली हुई सुस्ती, बेईमानी, अनैतिकता , मूर्खता और इच्छाशक्ति की निर्बलता का कारण जलवायु है।"[3]

यही कारण है कि इस क्षेत्र के एथलेटिक खिलाड़ियों को इस क्षेत्र की जलवायु ने प्रभावित किया है।

ग्वालियर-चम्बल संभाग भारत वर्ष उपमहाद्वीप के मध्य में स्थित है अतः पूर्व (East) से बंगला की खाड़ी से उठने वाली मानसून से प्रभावित जलवायु तथा पश्चिम में उष्ण मरूस्थलीय जलवायु की मिश्रित विशेषताओं

वाला क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त स्थानीय धरातल का भी जलवायु पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है।

यह क्षेत्र समुद्र से दूर होने के कारण शीत ऋतु में सूर्य के दक्षिणायन होने से इस क्षेत्र में सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती है अतः दिन छोटे हो जाते हैं।

ग्वालियर - चम्बल सम्भाग में भी भारत वर्ष के अन्य भागों की ऋतुओं के समान वर्ष में तीन ऋतुंए होती हैं।

(क) शीत ऋतु (नवम्बर से फरवरी)

(ख) ग्रीष्म ऋतु (मार्च से जून)

(ग) वर्षा ऋतु (जुलाई से अक्टूबर)

शीत ऋतु :-

शीत काल में सूर्य दक्षिणायन होने के कारण दिन छोटे और रातें लम्बी होती हैं शीतकालीन और रातें लम्बी होती हैं शीतकालीन औसत तापमान 17.38 से.ग्रे. रहता है। वायु दबाव सर्वत्र रहता है। शीत ऋतु की औसत वर्षा 34.49 मि.मी. होती है। डब्ल्यू जी. केन्ड्रूय के अनुसार "स्वच्छ आकाश, सुहावना मौसम, तापमान नीचा, मंदगति से चलने वाली पवनें आद्रता की न्यूनता आदि विशेताएं इस ऋतु के समय उल्लेखनीय है।[4]

शीताकलीन वर्षा की मात्र नगण्य है, इसे माहोट कहते है, इस ऋतु की वर्षा का सम्बन्ध मध्य अक्षांशीय चक्रवातों में हैं।''[5] ग्वालियर सम्भाग में 25 दिसम्बर 1945 को न्यूनतम तापमान 00° सेंटीग्रेट (32° फारेनहाइट) ग्वालियर नगर का अंकित किया गया है।''[6]

सारणी - 4.1

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग की शीतकालीन तापमान एवं वर्षा

जिला		माह				कुल	औसत
		नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	वर्षा	तापमान
ग्वालियर	T	2.35	15.73	16.68	17.64	–	17.1
	P	9.48	7.20	8.75	12.49	37.92	–
शिवपुरी	T	19.5	15.28	14.89	17.61	–	16.8
	P	8.12	8.12	9.89	8.12	34.25	–
गुना	T	19.75	16.6	16.5	19.0	–	17.53
	P	10.00	5.7	24.78	16.5	55.20	–
दतिया	T	21.5	15.89	15.60	18.39	–	17.84
	P	8.63	5.33	10.41	9.90	34.27	–
मुरैना	T	19.93	15.80	13.92	16.44	–	16.52
	P	5.00	4.69	3.69	4.42	17.80	–
भिण्ड	T	19.4	16.78	15.72	18.0	–	17.70
	P	1.1	8.29	18.68	5.35	33.42	–
श्योपुर	T	20.2	17.20	16.15	19.15	–	18.17
	P	4.40	3.40	15.30	5.50	28.60	–
स्त्रोत					AV	34.49	–

ग्रीष्म ऋतु :-

मार्च के आरम्भ से ही तापमान में वृद्धि होने लगती है और तापमान मई में अपनी चर्म सीमा पर पहुंच जाता है औसत तापक्रम लगभग 30^0 से 35^0 से.ग्रे. तक पहुंच जाता है। इस माह में ऊंचा तापमान, न्यूनतम सापेक्षित आद्रता तथा शुष्क हवाओं का प्रकोप होता है और धूल भरी आंधियां चलती हैं जिन्हें "लू" के नाम से जाना जाता है। इस ऋतु की सामान्य वर्षा 84.03 मिमी. है। तीव्र गर्मी खेलने में बाधक बनती है अतः खेल खेलना रात्रि के समय या प्रातकाल: ही संभव है अतः स्पष्ट है कि खेल एवं खिलाड़िया पर गर्मी का प्रभाव पड़ता है।

सारणी - 4.2

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग की ग्रीष्मकालीन तापमान एवं वर्षा

जिला		माह				कुल	औसत
		मार्च	अप्रैल	मई	जून	वर्षा	तापमान
ग्वालियर	T	23.27	29.47	33.98	34.46	–	30.9
	P	4.68	6.45	11.28	65.74	88.25	–
शिवपुरी	T	22.78	30.67	30.11	30.78	–	29.33
	P	5.08	2.54	5.58	90.61	103.81	–
गुना	T	24.00	29.15	33.65	32.53	–	29.83
	P	8.4	2.3	6.8	40.4	57.90	–
दतिया	T	23.16	32.00	37.27	31.72	–	31.03
	P	8.12	3.55	4.35	68.53	88.55	–
मुरैना	T	23.05	29.45	33.62	33.64	–	29.91
	P	1.43	2.72	6.44	58.14	68.73	–
भिण्ड	T	21.50	23.15	32.34	34.25	–	27.81
	P	4.96	8.30	3.94	72.81	90.01	–
श्योपुर	T	25.10	30.05	34.60	34.50	–	31.12
	P	8.80	1.60	10.00	70.60	–	–
स्त्रोत		Metrological Data Nagpur.			AV	84.09	

वर्षा ऋतु :-

वर्षा ऋतु का समय जुलाई से अक्टूबर तक का है। इस ऋतु में औसत तापमान 37⁰ से.ग्रे. रहता है। अधिकतम वर्षा के माह जुलाई एवं अगस्त में है। वर्षा ऋतु की औसत सामान्य वर्षा 728.83 मि.मी. है कभी-कभी वर्षा के साथ ओले भी पड़ते हैं। बिजली कड़कती है और गर्जना होती है सापेक्षिक आद्रता 70 से 80 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। ''सितम्बर के अन्त तक मानसून समाप्त हो जाते है और अक्टूबर के आरम्भ सप्ताह तक तो यह सम्पूर्ण प्रदेश से ही लौट जाते हैं''।[१]

सारणी - 4.3

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग की वर्षा ऋतु का तापमान एवं वर्षा

जिला		माह				कुल	औसत
		जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	वर्षा	तापमान
ग्वालियर	T	30.20	28.84	28.72	26.04	–	28.32
	P	231.84	274.89	157.65	28.86	693.24	–
शिवपुरी	T	26.44	26.44	25.99	23.94	–	26.35
	P	309.64	278.17	132.99	15.23	736.12	–
गुना	T	27.55	26.30	26.4	24.53	–	26.14
	P	260.16	340.10	168.8	29.9	798.96	–
दतिया	T	29.30	27.28	27.50	26.89	–	27.76
	P	250.76	261.93	146.95	24.87	684.57	–
मुरैना	T	29.83	28.83	28.14	25.48	–	27.92
	P	255.89	244.09	93.79	19.91	613.68	–
भिण्ड	T	33.32	30.37	28.03	25.95	–	29.41
	P	232.17	291.20	166.16	48.59	738.12	–
श्योपुर	T	29.85	28.00	28.00	25.65	–	17.87
	P	305.50	380.00	112.00	39.3	837.20	–
स्त्रोत					AV	728.83	

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग की वर्षा की विशेषताए :-

1. वर्षा मुख्यतः चार माह जुलाई, अगस्त, सितम्बर व अक्टूबर तक ही सीमित है।
2. वर्षा मसूलाधार एव तेज होती है।
3. वर्षा की मात्रा अनिश्चित है।
4. वर्षा का समय अनिश्चित है।
5. भीषण गर्मी के पश्चात् भारी वर्षा होने से अनेक बीमारियां फेल जाती हैं।
6. अनेक निचले स्थानों पर जल भर जाता है।
7. पिछले कुछ समय में वर्षा के लक्षणों में बदलाव आया है जैसे वर्षा की मात्रा कम हुई है।

भू वैज्ञानिक संरचना :-

भू वैज्ञानिक संरचना किसी भी क्षेत्र के भौतिक पाये जाने वाले शैल, मिट्टी, खनिज पदार्थ आदि पर दृश्टिगोचर होता है तथा मानव जीवन को प्रभावित करता है ग्वालियर-चम्बल सम्भाग की भू वैज्ञानिक अर्थात् भूगर्भिक संरचना प्रत्यक्ष रूप से प्राकृतिक तत्वों पर अपना प्रभाव डालती है तथा अप्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र के मानव जीवन के स्वरूपों का निध रिण करती है। इसका प्रभाव इस क्षेत्र के खेल एवं खिलाड़ियों पर पूर्णतः परिलक्षित होता है।

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग में तीन प्रकार के भूगर्भिक संरचना क्रम देखने को मिलते हैं।

1. नवी विक्षेप
2. बिन्ध्यन शैल
3. कुडप्पा क्रम

विन्ध्यन क्रम प्राचीन अरावली चट्टानों से एक सीमान्त भ्रंश द्वारा मिलती है जो कि लगभग 500 मील लम्बी दरार है व 5000 फीट तक धंसी है।[11] कुडप्पा क्रम के शैल समूह भी किसी एक क्रम के न होकर कई समानान्तर क्रम से मिलकर बने हैं।[12]

मृदाएं :-

मृदा व मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जलवायु के पश्चात् मिट्टी का ही सबसे अधिाक प्रभाव मानव पर पड़ता है।

भूपर्पटी का वह भाग मिटटी कहलाता है जिसका विकास यांत्रिक एवं रासायनिक ऋतु अपक्षय अथवा अपरदन प्रक्रियाओं द्वारा उत्पन्न किसी चट्टान चूर्ण एवं विभिन्न प्रकार के जीवन जन्तुओं एवं वनस्पति के क्षय से निर्मित पदार्थ एवं जलवायु के विभिन्न तत्वओं विशेषत: जल एवं तापक्रम के भिन्न भिन्न रूपों में संयोजित होने पर होता है। इस क्षेत्र में निम्न प्रकार की मिट्टयां मिलती हैं।[13]

1. कांप या जलोड़ मिट्टी
2. मध्यम काली मिट्टी
3. मिश्रित लाल व काली मिट्टी

मिट्टी की विषमता से इस क्षेत्र के निवासियों का प्रभावित होना स्वाभाविक है।

कांप या जलोड़ मिट्टी :-

यह मिट्टी सम्भाग के उत्तर में ग्वालियर, भिण्ड तथा मुरैना जिलों में पाई जाती है इसकी संरचना में बलुआ, दोमट तथा चीका मिट्टियां की प्रधानता पाई जाती है।

मध्यम काली मिट्टी :-

यह मिट्टी गुना जिले के पश्चिमी क्षेत्र में फैली है। इसमें चीका तथा दोमट मिट्टी की प्रधानता है। रंगों के अनुसार भूरी, गहरी भूरी तथा सिलेटी से लेकर मध्यम काली तक पाई जाती है।

लाल तथा काली मिश्रित मिट्टी :-

यह मिट्टियां प्रमुख रूप से गुना, शिवपुरी तथ दतिया जिलों में फेली हुई हैं।

मिट्टी का कटाव :-

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग में मिट्टी के कटाव ने मानव जीवन पर अत्याधिाक प्रभाव डाला है। यह कटाव खड़ा कटाव है। अत्यधिाक कटाव वाले क्षेत्र चम्बल नदी, सिंध नदी तथा दक्षिण में बेतवा नदी का प्रवाह क्षेत्र है जल द्वारा कटाव से अनेक क्षेत्र ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र में परिवर्तित हो गए हैं जिस से आवागमन अधिवास समस्या एवं खेलों में बाधा उत्पन्न हुई है।

चम्बल सम्भाग में खड्ड क्षेत्र 3605 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है। 1968-69 में संचालक भूअभिलेख द्वारा नदी के बीहड़ क्षेत्रों के आध ार पर एकत्रि किए गए आंकड़े निम्न सारिणी में दर्शाए गए हैं।

(ब) सामाजिक दशांए :-

खेल एवं खिलाड़ियों के अध्ययन के लिए ग्वालियर-चम्बल सम्भाग की सांस्कृति स्थिति का गहन अध्ययन आवश्यक है। इस संदर्भ में यहां की जनसंख्या का विवरण जानना अत्यधिाक महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि कोई क्षेत्र जनसंख्या विहीन है तो वहां पर खेल प्रभावित होगें। इसके अतिरिक्त किस धर्म के लोग निवास करते हैं, शिक्षा की स्थिति क्या है, क्षेत्र के लोग बालक-बालिकाओं को पढ़ाने एवं खेलों में भाग लेने में रूचि लेते हैं या नही। क्या लड़कि-यों का बाहर जाना एवं खेल खेलना पसन्द है या नहीं। यह सभी सामाजिक दशांए खेलों पर प्रभाव डालती हैं।

ग्वालियर एवं चम्बल सम्भाग की जनसंख्या :-

2001 की जनगणना के अनुसार-

ग्वालियर एवं चम्बल सम्भाग की जनसंख्या 8937798 व्यक्ति है यह भारत वर्ष की जनसंख्या का 87 प्रतिशत एवं मध्य प्रदेश की जनसंख्या का 14.80 प्रतिशत है। इसमें पुरूष अधिक एवं महिलाओं की संख्या कम है पुरूष 53.99 प्रतिशत (4826001) एवं महिलांए 46.01 (4111797) है।

सारणी - 4.5

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग की जनसंख्या

जनसंख्या	पुरूष	महिला	योग	प्रतिशत
ग्वालियर	882258	747623	1629881	18.24
शिवपुरी	775473	665193	1440666	16.12
गुना	883433	782070	1665503	18.63
दतिया	337842	289976	0627818	7.02
श्योपूर	295630	264085	0559715	6.28
मुरैना	871243	716021	1587264	17.76
भिण्ड	780122	646829	1426951	15.97
योग	4826001	4111797	8937798	100

ग्वालियर जनसंख्या की कुल जनसंख्या का सबसे कम प्रतिशत 6.28 श्योपुर जिले का है इससे अधिक 7.02 प्रतिशत दतिया जिले में है। गुना में 18.63 प्रतिशत, ग्वालियर में 18.24 प्रतिशत, मुरैना में 17. 76 प्रतिशत, शिवपुरी मे 16.12 प्रतिशत, तथा भिण्ड में 15.97 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। सभी जिलों में महिला पुरूषों से कम है।

ग्रामीण जनसंख्या :-

क्षेत्र ग्रामीण या नगरीय। जनसंख्या ग्रामीण अधिक है या नगरीय इन बातों का भी खेलों पर प्रभाव पड़ता है इसी के आधार पर उनके खेल खेलने एवं चयन निर्भर है। लगभग तीन प्रति दाई (72.19 प्रतिशत) जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है।

तालिका - 4.6

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग में ग्रामीण जनसंख्या 2001

जनसंख्या	पुरूष	महिला	योग
ग्वालियर	352668	293882	646550
शिवपुरी	647596	553398	1200994
गुना	969443	614325	1310768
दतिया	264301	225972	490273
श्योपुर	248464	222671	0471135
मुरैना	684877	559188	1244065
भिण्ड	596586	492212	1088798
योग	3490935	2961648	6452583
प्रतिशत	54.10	49.90	100

ग्रामीण जनसंख्या का 54.10 प्रतिशत पुरूष एवं 45.90 प्रतिशत महिलायें हैं। ग्रामीण जनसंख्या मात्र 7.30 प्रतिशत श्योपुर जिले में है तथा दतिया जिले में 7.59 प्रतिशत है और ग्रामीण जनसंख्या का अधिकतम प्रतिशत गुना जिले में 20.31 प्रतिशत है।

नगरीय जनसंख्या :-

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग में ग्वालियर चम्बल-सम्भाग की जनसंख्या का मात्रा 27.81 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या है कुल नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत श्योपुर में 3.56 प्रतिशत, दतिया में 5.54 प्रतिशत, मुरैना में 13. 81 प्रतिशत, गुना में 14.27 प्रतिशत, भिण्ड में 13.60 प्रतिशत, शिवपुरी में 9.65 प्रतिशत तथा ग्वालियर में सबसे अधिक अर्थात् 39.57 प्रतिशत जनसंख्या लगरीय जनसंख्या है। अत: ग्वालियर में खेलों को अधिक प्रोत्साहन के अवसर हैं।

सारणी - 4.7

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग में नगरीय जनसंख्या

200 प्रतिशत

जनसंख्या	पुरूष	महिला	योग	प्रतिशत
ग्वालियर	529590	453741	983331	39.57
शिवपुरी	127877	111795	239672	9.65
गुना	186990	167745	354735	14.27
दतिया	073541	064004	137545	5.54
श्योपुर	047166	041414	088560	3.56
मुरैना	186366	156833	343199	13.81
भिण्ड	183536	154617	338153	13.60
योग	1335066	1150149	2485215	
प्रतिशत	53.72	46.28		100

ग्वालियर-चम्बल संभाग की नगरीय जनसंख्या का 53.72 प्रतिशत पुरूष एवं 46.28 प्रतिशत महिलायें हैं।

ग्वालियर-चम्बल संभाग में नगरीय जनसंख्या कम होने का प्रमुख कारण यह है कि ग्वालियर-चम्बल संभाग की अधिकांश जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय कृषि है अतः अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है।

वर्तमान समय में ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में नगरीय जनसंख्या में तीव्रगति से वृद्धि हो रही है। इस वृद्धि के कई कारण हैं जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं।

1. नगरीय क्षेत्रों में व्यवसाय की विभिन्नताओं एवं औद्योगीकरण के कारण जनसंख्या नगरों की ओर आकृषित हो रही है।

2. ग्रामीण क्षेत्रों में जन्मदर की अधिकता तथा चिकित्सा सुविधाओं के विकास के फल स्वरुप मृत्यु दर में ह्रास से जनसंख्या में तीव्रगति से वृद्धि हो रही है। अतः बड़े जनसंख्या आकार वाले गांवों को नगरीय क्षेत्रों के अन्तर्गत सम्मिलित कर दिया गया है।

साक्षरता :-

खेल तो समाज के प्रत्येक प्राणी के प्रिय होते हैं परन्तु खेलों का विकास एवं प्रोत्साहन शिक्षित समाज को अधिक मिलता है। अतः ग्वालियर-चम्बल के निवासियों के शिक्षा एवं साक्षरता का अध्ययन आवश्यक है।

ग्वालियर एवं चम्बल सम्भाग में मात्र 4745763 व्यक्ति शिक्षित हैं यह कुल ग्वालियर-चम्बल संम्भाग की जनसंख्या का 73.55 प्रतिशत व्यक्ति शिक्षित है। यह पुरूषों का प्रतिशत 48.22 प्रतिशत तथा महिलाएं मात्र 25.33 प्रतिशत हैं।

कुल शिक्षित जनसंख्या पुरूष 65.66 प्रतिशत तथा महिलाएं 34. 43 प्रतिशत शिक्षित हैं। ग्वालियर-चम्बल संभाग में शिक्षित ग्वालियर जिले में 964234 (20.31 प्रतिशत) हैं।

सारणी - 4.8

ग्वालियर-चम्बल सम्भाग में साक्षरता 200 प्रतिशत

जिला	पुरूष	महिला	योग
ग्वालियर	604587	359647	964234
शिवपुरी	471584	221644	693228
गुना	535722	270198	805920
दतिया	232957	150032	382989
श्योपुर	148278	061107	209385
मुरैना	576809	273511	850320
भिण्ड	541802	297885	839387
योग	3111739	1634024	4745763
प्रतिशत	48.22	25.33	73.55

अतः स्पष्ट है कि महिलाओं का योगदान खेलों में कम होगा।

सारणी - 4.9

धर्म के अनुसार जनसंख्या वितरण

ग्वालियर-चम्बल संभाग

धर्म	जनसंख्या	प्रतिशत
हिन्दु	6715816	93.51
मुस्लिम	0306299	4.26
जैन	0070586	0.98
क्रिश्चियन	0004067	0.07
बौद्ध	0027378	0.38
सिख	0038982	0.54
अन्य	0000844	0.01
अप्राप्त	0017823	0.25
कुलयोग	7181795	100 प्रतिशत

1991 की स्थिति में ग्वालियर-चम्बल संभाग में हिन्दु 93.51 प्रतिशत मुस्लिम 4.26 प्रतिशत तथा शेष अन्य 2.23 प्रतिशत हैं। इसके पश्चात् धर्म के अनुसार कोई गणन नहीं हुई है। यह आंकड़े डायरेक्टर ऑफ सेन्सस-मध्य प्रदेश भोपाल डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ पापुलेशन-1991 पृष्ठ 4-7 पर आधारित हैं।

शिक्षा :-

शिक्षा के क्षेत्र में ग्वालियर-चम्बल संभाग का मध्य प्रदेश में महत्वपूर्ण स्थान है ग्वालियर-चम्बल संभाग में जिला स्तर एंव तहसील स्तर पर शासकीय महाविद्यालय तो है ही। इसके अतिरिक्त ग्रामीण अंचल में कई महाविद्यालय खुल गए है। इसके अतिरिक्त अनेक अशासकीय महाविद्यालय

भी इस क्षेत्र में हैं। आधुनिक तकनीक के महाविद्यालय सर्वत्र खलते जा रहे है। ग्वालियर संभाग का पहला विश्वविद्यालय जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर है जिसके अन्तर्गत वर्तमान में ग्वालियर एवं चम्बल संभाग के महाविद्यालय आते है। इस समय जीवाली विश्वविद्यालय क्षेत्रन्तर्गत 120 महाविद्यालय हैं।

उल्लेखनीय है कि ग्वालियर-चम्बल संभाग के आदर्श एवं पुराने महाविद्यालय, ग्वालियर महानगर में ही है। ग्वालियर महानगर में ही 50 महाविद्यालय है। जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर महानगर में ही है। समस्त ग्वालियर चम्बल संभाग के मध्य है अर्थात् इस क्षेत्र का ''हृदय स्थल'' है।

जीवाजी विश्वविद्यालय में अनेक अध्ययन शालांए हैं जिनमें एक शारीरिक शिक्षा की नई प्रमुख अध्ययनशाला है।

ग्वालियर नगर में स्थित लक्ष्मीबाई नेशनल इंस्टीट्यूट आफ फिजीकल एजूकेशन (एल. एन. आई. पी. ई.) को शारीरिक प्रशिक्षण में मध्य प्रदेश के एक मात्र विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त है।

कभी जो ग्वालियर का कृषि महाविद्यालय था, आज उसे कृषि विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त है।

इस क्षेत्र के अन्य प्रमुख महाविद्यालय ग्वालियर महानगर में ही स्थित हैं जैसे- माधव इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड सांइस, माधवराव सिंधिया आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, श्यामलाल (एस.एल.पी.) पाण्डवीय महाविद्यालय, महारानी लक्ष्मीबाई (एम.एल.बी.) स्वशासी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कमलाराजा स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय लश्कर, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरार, नूतन कन्या महाविद्यालयण जे0 सी. मिल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हजीरा ग्वालियर में है। पी. जी. व्ही. कालेज, मानसिंह महाविद्यालय, माधव महाविद्यालय आदि हैं।

ग्वालियर-चम्बल संभाग के कुछ अन्य प्रमुख महाविद्यालय भीा ग्वालियर में ही है जैसे- गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, आयुर्वेद महाविद्यालय, वसुन्धराराजे होम्योपैथिक महाविद्यालय, बी. एड. कालेज, फाईन आर्ट्स एवं संगीत महाविद्यालय एवं वीमेन कालेज ऑफ एन. सी. सी. ग्वालियर। हाल ही के आधुनिक तकनीकी के कई महाविद्यालय ग्वालियर-चम्बल सम्भाग के विभिन्न भागों में खुल गए हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से ग्वालियर-चम्बल संभाग में ग्वालियर का विशेष महत्व है। यहां कैंसर चिकित्सालय तथा शोध संस्थान, जय आरोग्य चिकित्सालय, मानसिक आरोग्यशाला, कमलाराजा चिकित्सालय, आयुर्वेदिक चिकित्सालय, बिरला स्वास्थ्य संस्थान तथा भगवत सहाय न्यूरोलॉजी एवं न्यूरोसर्जरी चिकित्सालय, चिकित्सा सेवायें देने वाले प्रमुख संस्थायें हैं।

निवासी :-

भारत में रहने वाले सभी धर्मो के लोग ग्वालियर-चम्बल संभाग में सौंहाद्रपूर्ण वातावरण में रहते हैं। विशेष महत्व की बात यह है कि मजहबी झगड़े बिलकुल नही होते ''मजहब नहीं सिखता आपस में बैर रखना'' यर्थात् में यह कथन ग्वालियर-चम्बल संभाग में पूर्णतया सत्य है।

ग्वालियर-चम्बल संभाग के लोगों ने शांति सौहाद्र की अनुकरणीय मिसाल यहां रहने वाले लोगों ने प्रस्तुत की है। इस क्षेत्र में हिन्दु, मुस्लिम, सिख और ईसाई धर्म के लोग एक साथ रहकर एक दूसरे के सुख दुख में शरीक होते देखे जाते है। चम्बल संभाग में पारिवारिक कलह एवं जातिवाद, आलम सम्मान को लगने वाली ठेस उद्देश्य पूर्ति ने दस्यु समस्या को जन्म दिया है।

भाषा :-

ग्वालियर-चम्बल संभाग के निवासियों की मुख्य भाषा हिन्दी है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी, उर्दू, मराठी, गुजराती, सिंधी एवं पंजाबी आदि भाषांए भी बोली जाती है। यहां बोले जाने वाली भाषा में बुन्देलखण्डी तथा खड़ी बोली की झलक दिखाई देती है।

(स) आर्थिक दशांए :

आर्थिक दशाओं का खेलों से गहन सम्बन्ध है। खेल सम्बन्धी सामग्री क्रय करने को धन की आवश्यकता होती है और विशेषकर आज के युग में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खेल तरह-तरह के नवीन प्रणाली से चल रहे हैं उन्हें खेलने हेतु खेल सामग्री क्रय करना जन साधारण के बस की बात नहीं हैं इन खेलों को जब ही खेला जा सकता है जबकि खिलाड़ियों को पर्याप्त धन की सुविधा उपलब्ध हो।

ग्वालियर चम्बल सम्भाग में यहां के निवासियों का प्रमुख धन्धा कृषि है। कृषि के लिये इन्हें शासन ने सिचाई की पर्यापत सुविधायें प्रदान की है फि भी इन्हें वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है। प्रमुख फसलें सरसों, चावल, गेहूं एवं सोयाबीन आदि की पैदावार है। अतः इस क्षेत्र के लोगण कृषि कार्य, पशुपालक, लकड़ी काटना, खदानों से पत्थर निकालना तथा वनों से प्राप्त वस्तुओं को एकत्रित करते हैं।

ग्वालियर चम्बल सम्भाग में ग्वालियर कपड़ा उद्योग के लिय प्रसिद्ध रहा है वर्तमान में यह उद्योग बन्द हो गये हैं जिससे श्रमिकों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा है और उनके परिवार प्रभावित हुये हैं।

वर्तमान में ग्वालियर चम्बल सम्भाग में लघु उद्योग ही अधिक है जैसे साबुन बनाना, बीड़ी बनाना, अगर बत्ती, पापड़ी इत्यादि।

ग्वालियर में सिथौली में स्प्रिंग फैक्ट्री है, आंतरी में सिलीपर फैक्ट्री तथा डबरा में चीनी उद्योग है। जिला मुरैना में बानमोर में सीमेन्ट उद्योग तथा मुरैना में ऑयल मिल है। भिण्ड जिले में मालनपुर में गोदरेज साबुन सीइट टाइर का धागा, रंगी पिक्चर ट्यूब, कैडवरी चाकलेट तथा गोहद में चावल मिल है। गुना जिले मे हाल ही में एक खाद का कारखाना खुला है। श्योपुर में स्थानीय लकड़ी से खिलौने एवं लकड़ी के अन्य सामान बनाये जाते हैं। ऑयल मिल तो करीब-करीब हर जिले में है।

ऐसा कोई उद्योग यहां के लोगों को उपलब्ध नहीं है जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नशाली बन सके। यहां के उद्योग लोगों के केवल जीवन निर्वाह के साधन मात्र हैं।

आन्तरिक क्षेत्र के निवासियों के लिये यातायात के साधन बाध क है तथा बाजार की कमी है अर्थात् अपने सामान का उचित मूल्य इन्हें प्राप्त नहीं होता।

इन परिस्थितियों में इनका ध्यान खेलों को प्रोत्साहन देने में नहीं है। इनका ध्येय यह रहता है कि बच्चे भी धन अर्जित करने में सहयोग करें तथा कृषि में हाथ बहायें।

ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों के खिलाड़ियों पर उनका आर्थिक स्थिति का पूर्ण प्रभाव पड़ा है। इन खिलाड़ियों के पास आधुनिक खेल सामग्री खरीदने, खेल मैदान एवं उनके रख-रखाव पर पारिवारिक आर्थिक स्थिति नियंत्रित करती है। ग्वालियर चम्बल सम्भाग के लोगों की आर्थिक स्थिति सामान्य ही है। अतः ऐसे खेल जिनमें अधिक धन की आवश्यकता होती है, इस क्षेत्र के खिलाड़ी उन खेलों को खेलने से वंचित रहते हैं और जिन खेलों में धन की अधिक आवश्यकता न हो उन्ही खेलों को प्रोत्साहन देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. मेहरोत्रा श्रीनाथ एवं सक्सेना जे.पी. : मानव भूगोल 1960 पृष्ठ 65
2. पापडाकिंस, जे. : क्लाइमट ऑफ वर्ल्ड एण्ड दअर पोटेंसियलिटी 1975 पृष्ठ 3
3. शिवकुमार तिवारी : मानव भूगोल 1971 पृष्ठ 177
4. प्रमिला कुमार : मध्यप्रदेश का प्रादेशिक भूगोल म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल प्रथम संस्करण–1987 पृष्ठ 20
5. लाल, डी.एस. : जलवायु विज्ञान–चेतन्य पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद 1979, पृष्ठ 157
6. कृष्णन व्ही.एस. : ग्वालियर गजटियर 1965 पृष्ठ 14
7. : मैट्रीयोलीजकल डाटा
8. : मैट्रीयोलीजकल डाटा
9. दुबे आर.एस. : भारत का भूगोल
10. : मैट्रीयोलीजकल डाटा
11. Wadra D.N. : Geology of India Maemillan & Co. Ltd., London 1966 Page 133
12. Wadra D.N. : Geology of India Maemillan & Co. Ltd., London 1966 Page 118
13. N.C.A.E.R. : Techno Economic Survey of Madhya Pradesh, Asia Publishing House, Bombay
14. Thornbury W.D. : Priciples of Geomorphology New York, 1961 Page 74
15. : भारत की जनगणना 2001 मध्यप्रदेश श्रृंखला 24 निर्देशक, जनगणना कार्य मध्यप्रदेश
16. : भारत की जनगणना 2001 मध्यप्रदेश श्रृंखला 24 निर्देशक, जनगणना कार्य मध्यप्रदेश
17. : भारत की जनगणना 2001 मध्यप्रदेश श्रृंखला 24 निर्देशक, जनगणना कार्य मध्यप्रदेश
18. : भारत की जनगणना 2001 मध्यप्रदेश श्रृंखला 24 निर्देशक, जनगणना कार्य मध्यप्रदेश
19. : डयरेक्ट्रेट ऑफ सेन्सस मध्यप्रदेश भोपाल टेविल डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ पापुलेशन 1991 पृष्ठ 4–7

अध्याय 5

उत्तरदाताओं का परिचयात्मक विवरण एवं पारिवारिक पृष्ठ भूमि

उत्तरदाताओं का परिचयात्मक विवरण एवं पारिवारिक पृष्ठ भूमि

उत्तरदाताओं से सम्पर्क कर प्राप्त जानकारी निम्न प्रकार है उनका कथन है कि शिक्षा का विकास कम है अतः खेलों का भी विकास कम है यदि ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का विकास अधिक हो तो महाविद्यालय के छात्रें को खेलने का अवसर बढ़ सकता है।

वर्तमान में अनेक महाविद्यालय ऐसे हैं जिनके पास उनका स्वयं का भवन भी नहीं है। अनेक महाविद्यालयों में खेल मैदान की सुविधा नहीं है, महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षकों का अभाव है। महाविद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। प्रशिक्षित शिक्षिकायें तो हैं ही नहीं। महाविद्यालयों में महिला शिक्षिकायें नहीं के बराबर हैं। प्रत्येक महाविद्यालय में जहां सह शिक्षा है कम से कम एक महिला शारीरिक शिक्षिका होना ही चाहिए। महाविद्यालयों में छात्र-छात्राओं को खेलने की सुविधा नहीं है अतः खेलों का विकास अवरूद्ध है। खेलों पर भौगोलिक आर्थिक एवं सामाजिक कारणों का प्रभाव है।

(1) भौगोलिक दृष्टिकोण:

भौगोलिक दृष्टि से भारतीय खेल खेलने की सुविधा सर्वत्र है अतः इन्हीं खेलों को खेलने में रुचि है। यह भारतीय खेल सभी महाविद्यालयों एवं अन्य क्षेत्रों में खेले जा रहे हैं।

(2) आर्थिक दृष्टिकोण:

अधिकांश परिवार मध्यम वर्ग के हैं अतः आर्थिक स्थिति मध्यम है अतः खेलों पर अपना धन व्यय करने में अरुचि रखते हैं केवल धनी

परिवार के लोग ही ऐसे खेल खेलते हैं जिनमें धन की आवश्यकता होती है तथा वे विदशी खेलों में रुचि लेते हैं।

(3) सामाजिक दृष्टिकोण:

सामाजिक दृष्टि से 70 प्रतिशत लोगों का मत यह रहता है कि लड़के-लड़कियां खेलों की अपेक्षा पढ़ाई में अधिक ध्यान दें और अगर समय बचता है तो घर के कार्यों में हाथ बटायें। लड़कियों को खेलो में भाग लेना अरुचिकर समझते हैं।

ग्वालियर चम्बल सम्भाग की धर्मानुसार स्थिति

खेल जाति एवं धर्म से जुड़े हुये हैं उनके धर्म के अनुसार अपने खेल भी चुन लेते हैं अत: धर्मानुसार उल्लेख आवश्यक है।

सारणी - 5.1

ग्वालियर चम्बल सम्भाग की धर्मानुसार स्थिति

धर्म		प्रतिशत
हिन्दु	:	88.73%
मुस्लिम	:	8.54%
जैन	:	1.49%
ईसाई	:	0.29%
बौद्ध	:	0.15%
सिक्ख	:	0.65%
अन्य	:	0.15%
योग	:	100%

सारणी क्रमांक 5.1

ग्वालियर चम्बल सम्भाग की धर्मानुसार स्थिति
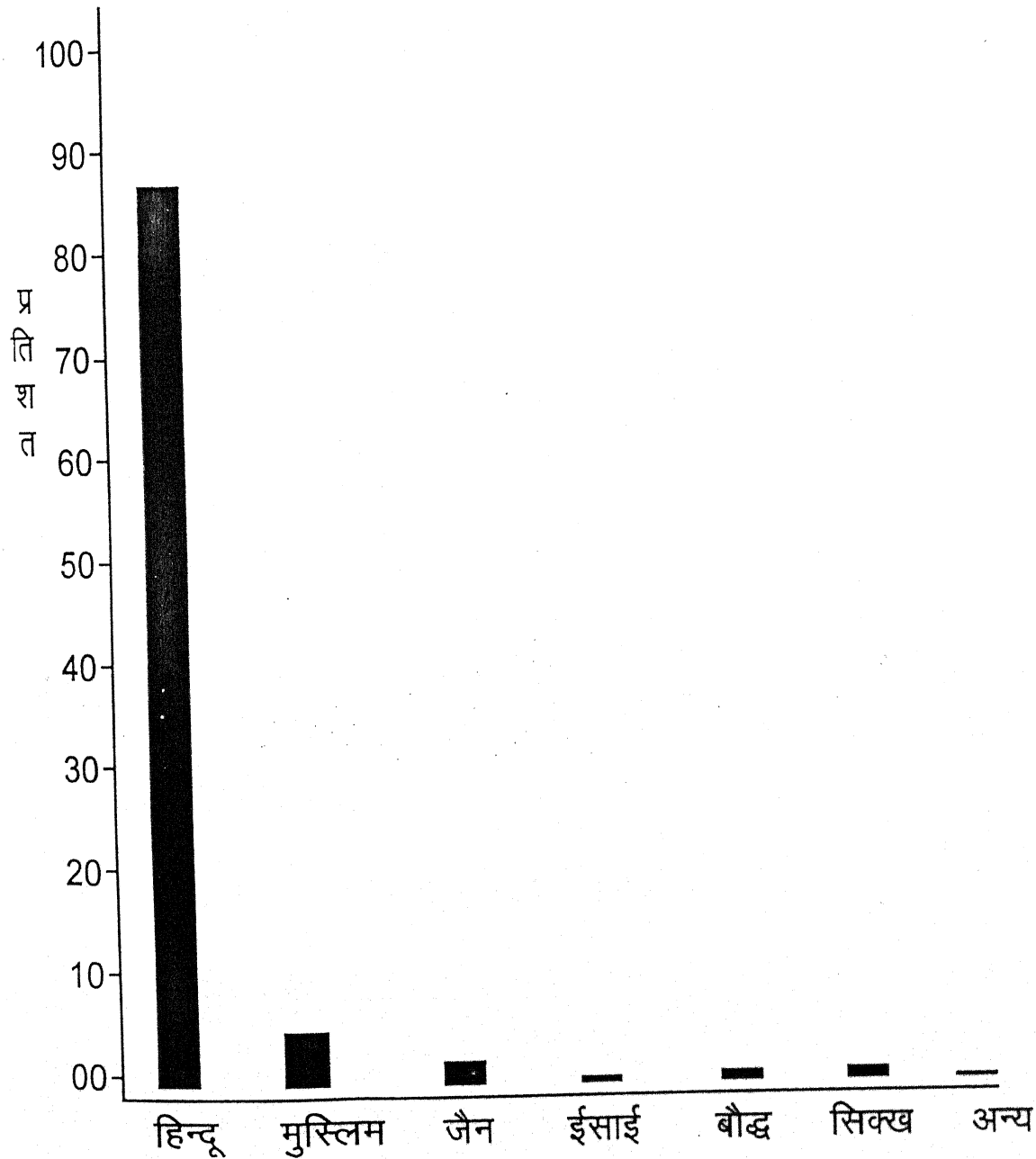
अतः हिन्दु बहुतायत से है और वे भारतीय खेल पसन्द करते है एवं खेलते हैं।

उत्तरदाताओं का खेल के सम्बन्ध में मत

ग्वालियर चम्बल सम्भाग में 81.33 प्रतिशत लोगों का मत है कि खेल जीवन के लिय आवश्यक है अतः स्वस्थ शरीर रखने एवं मनोरंजन की दृष्टि से खेलन आवश्यक है जबकि 12.33 प्रतिशत उत्तरदाता खेल खेलने में असहमत है तथ केवल 6.34 प्रतिशत उत्तरदाता तटस्थ हैं।

सारणी - 5.2

उत्तरदाताओं का खेल सम्बन्धी मत

उत्तरदाताओं का मत	उत्तरआताओं संख्या	प्रतिशत
सहमत	244	81.33%
असहमत	37	12.33%
तटस्थ	19	6.34%
योग	300	100%

तीन चौथाई उत्तरदाता इस पक्ष में है कि खेल खेलने का प्रोत्साहन दिया जावे।

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति

शैक्षणिक स्थिति का महाविद्यालय में खेले जाने वाले खेलों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है यदि उस क्षेत्र के लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं तब ही उन्हें महाविद्यालयों में खेलने का शुभ अवसर मिलेगा। ग्वालियर चम्बल सम्भाग में उत्तरदाताओं के अनुसार शैक्षणिक स्थिति निम्नुसार है :-

सारणी - 5.3

उत्तरदाताओं की शैक्षिणिक स्थिति

शिक्षा का स्तर	परिवार	प्रतिशत
शिक्षित	246	82%
अशिक्षित	54	18%
योग:	300	100%

82 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं अत: महाविद्यालय के खेलों से इनका सम्बन्ध स्पष्ट है।

शिक्षा सम्बन्धी स्तर:

शिक्षित होने के पश्चात् भी यदि छात्र-छात्रायें महाविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त करें तब ही उन्हें महाविद्यालयों में खेलने का अवसर मिलेगा अत: शिक्षा सम्बन्धी स्तर जानन आवश्यक है।

सारणी - 5.4

शिक्षा सम्बन्धी स्तर

स्तर	शिक्षित परिवार	प्रतिशत
प्रायमरी	09	3.66%
मिडिल	15	6.1%
हायर सेकेण्डरी	39	15.86%
स्नातक	92	37.4%
स्नातकोत्तर	88	35.77%
अन्य तकनीकी शिक्षा	03	0
योग:	246	98.79%

73.17 प्रतिशत छात्र-छात्रायें महाविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं अतः इनमें से अधिकांश का सम्बन्ध खेल से है।

उत्तरदाताओं की व्यवसायिक स्थिति

बड़े-बड़े व्यवसायिक खेलों का प्रोत्साहन करने हेतु धन देते हैं अतः व्यवसायिक स्थिति की जानकारी आवश्यक है :-

सारणी - 5.5

उत्तरदाताओं की व्यवसायिक स्थिति

व्यवसाय	उत्तरदाता	प्रतिशत
कृषि	139	46.33%
व्यवसाय (व्यापार)	54	18.00%
नौकरी	90	30.00%
अन्य कार्य	17	5.67%
योग:	300	100%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 46.33 प्रतिशत कृषक है अतः व्यवसायिक प्रोत्साहन इस क्षेत्र में नहीं के बराबर हैं। व्यापारी वर्ग केवल 18 प्रतिशत हैं।

उत्तरदाताओं की आय सम्बन्धी जानकारी

खेलों का उनके परिवार की आय से गहरा सम्बन्ध है यदि आय अच्छी होगी तब ही माता-पिता बच्चों को दिल खोलकर बच्चों को खेलने की सुविधा प्रदान करेगा।

सारणी - 5.6

उत्तरदाताओं की आय सम्बन्धी जानकारी

M	F	MF	
1000-3000	30	2000	60000
3000-5000	38	4000	152000
5000-7000	70	6000	420000
7000-9000	90	8000	720000
9000-11000	72	10000	720000
Total:	300		2072000

$$a\frac{Smf}{n} = \frac{2072000}{300} = \text{Rs. } 6906$$

प्रति व्यक्ति औसत आय 6906/- रुपये मासिक है।

खेलों पर प्रभाव डालने वाले कारणों का विवरण

खेलों पर आर्थिक, भौगोलिक एवं सामाजिक कारणों का प्रभाव पड़ता है अत: इस सम्बन्ध में प्राप्त मत निम्नानुसार है :-

सारणी - 5.7

खेलों पर प्रभाव डालने वाले कारणों का विवरण

कारण	उत्तरदाता	प्रतिशत
भौगोलिक कारण	76	25.33%
आर्थिक कारण	159	53%
सामाजिक कारण	65	21.67%

सारणी क्रमांक 5.7

खेलों पर प्रभाव डालने वाले कारण
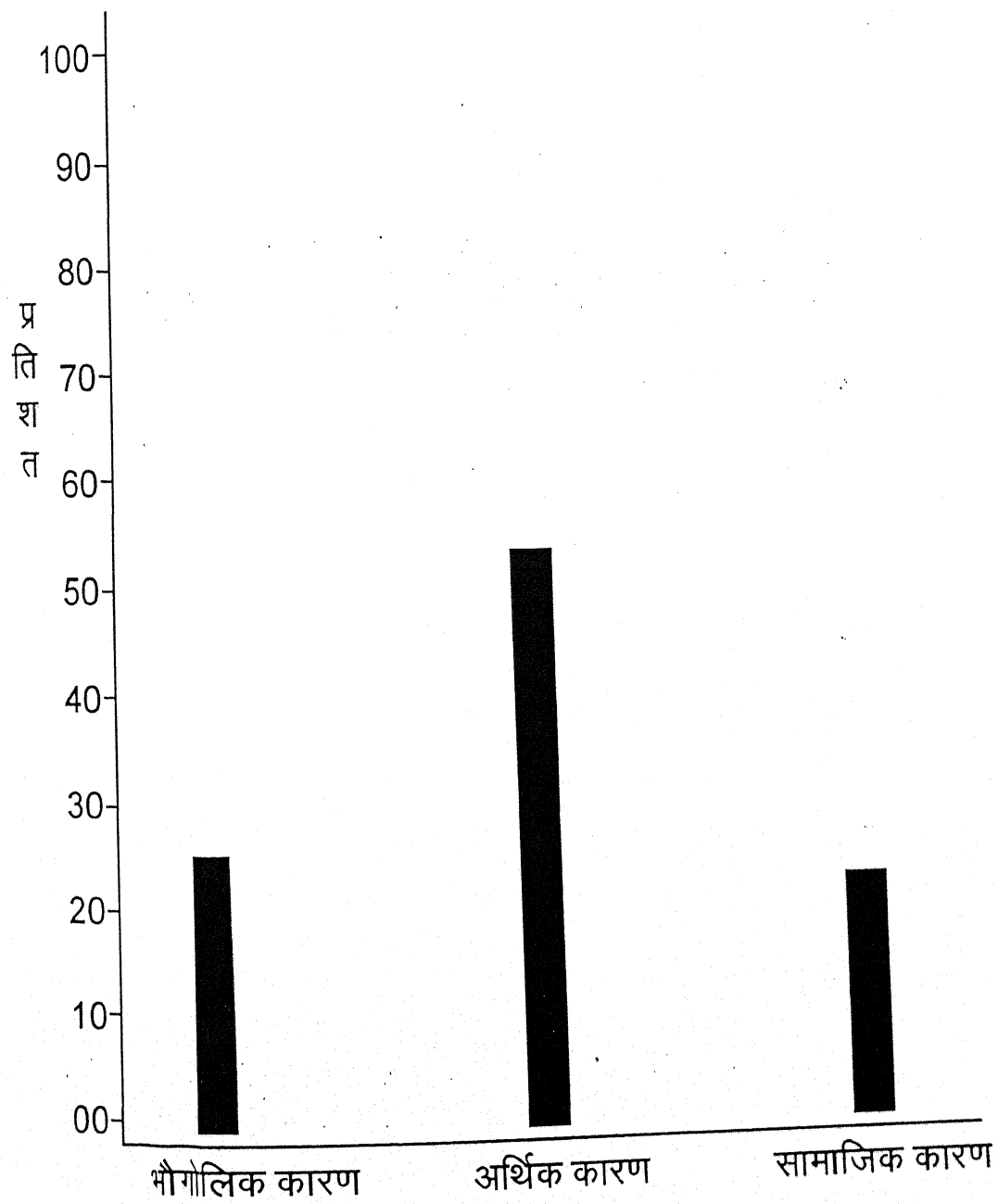
25.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि खेल भौगोलिक कारण से प्रभावित होते है तथा 53 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि खेल आर्थिक कारण से प्रभावित होते हैं जबकि 21.67 प्रतिशत उत्तरदाता खेलों पर सामाजिक कारणों के प्रभाव को उत्तरदायी बताया है।

अध्याय 6

अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख खेल

अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख खेल :-

इस अध्याय में आंकड़ों को विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण है। इसके आधार पर ही यह निर्धारण हो सकेगा। कि ग्वालियर-चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में किस प्रकार के खेलों को प्रोत्साहन प्राप्त है, यह खेल भारतीय है या विदेशी, इन खेलों के प्रोत्साहन का करण भौगोलिक, सामाजिक अथवा आर्थिक हे या यह सभी है। इन खेलों को पर्यापत सुविधा प्राप्त है या नही। क्या कुछ और सुविधाओं की आवश्यकता है।

महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की संख्या :-

खेलों का महाविद्यालय के विद्यार्थियों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि छात्रा अधिक होंगे। तो खेलने वाले छात्र भी अधिक होंगे। यदि छात्रांए भी हैं तो उनके अनुसार खेलों एवं खेल खेलने की सुविधा की व्यवस्था करनी होगी। इस सन्दर्भ में किए गए अध्ययन के आधार पर ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में कुछ छात्र-छात्राओं की संख्या 50018 है। इनमें शासकीय महाविद्यालयों में 37480 (74.94 प्रतिशत) इनमें 17904 (35.79 प्रतिशत) पुरूष एवं 19578 (39.13 प्रतिशत) महिला है। अशासकीय महाविद्यालयों में कुल संख्या का 25.06 प्रतिशत अर्थात 12534 है इनमें 8419 (16.83 प्रतिशत) पुरूष तथा 4119 (8.25 प्रतिशत) महिलाएं हैं। साारणी क्रमांक 6.01 एवं 6.02।

सारणी - 6.1

पुरूष-महिला विद्यार्थियों का ब्यौरा
ग्वालियर चम्बल संभाग के चयनित महाविद्यालयों में

महाविद्यालय	कुल विद्यार्थी	प्रति.	पुरूष	प्रति.	महिला	प्रति.
शासकीय	37480	74.94	17904	35.79	19576	39.13
अशासकीय	12534	29.06	8419	16.83	4119	8.25
योग	50018	100	26323	52.63	23695	47.38

महाविद्यालयों में शिक्षकों की संख्या :-

ग्वालियर चम्बल संभाग में चयनित महाविद्यालयों में कुल 1322 शिक्षक हैं इनमें शासकीय 932 (70.50 प्रतिशत) इनमें 657 (49.70 प्रतिशत) तथा 275 (29.50 प्रतिशत) महिलाए हैं अशासकीय महाविद्यालयों में 390 (29.50 प्रतिशत) शिक्षक हैं। इनमें 264 (19.97 प्रतिशत) पुरूष तथा 126 (9.53 प्रतिशत) महिलाए है। सारणी क्रमांक 6.03।

सारणी - 6.2
शिक्षक-शिक्षिकाओं का ब्यौरा

महाविद्यालय	महासंख्या	कुल शिक्षक	प्रतिशत	पुरूष शिक्षक	प्रतिशत	महिला शिक्षक	प्रतिशत
शासकीय	35	932	70.50	657	49.70	275	20.80
अशासकीय	15	390	29.50	264	19.97	126	9.53
योग	50	1322	100	921	69.67	401	30.33

ग्वालियर चम्बल सम्भाग के चयनित महाविद्यालयों में कुल कार्यालयीन कर्मचारियों की संख्या 634 है इनमें 479 (75.55 प्रतिशत) शासकीय महाविद्यालयों 424 (66.88 प्रतिशत) पुरूष है केवल 55 (8.68 प्रतिशत) महिलाए हैं। अशासकीय महाविद्यालयों में यह संख्या केवल 155 (24.45 प्रतिशत) है। इनमें 134 (21.34 प्रतिशत) पुरूष तथा 21 (3.32 प्रतिशत) महिलाए है। सारणी क्रमांक 6.3

सारणी - 6.3
कार्यालयीन कर्मचारियों का ब्यौरा

महाविद्यालय	कुल कर्म	प्रति.	पुरूष	प्रति.	महिला	प्रति.
शासकीय	479	75.55	424	66.88	55	8.68
अशासकीय	155	24.45	134	21.13	21	3.31
योग	634	100	558	88.01	76	11.99

सारणी से स्पष्ट है कि महिलाओं का कुल प्रतिशत मात्रा 11.99 प्रतिशत दी है।

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी :-

कुल चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी 784 हैं इनमें 593 (75.64 प्रतिशत) शासकीय महाविद्यालयों में तथा 191 (24.36 प्रतिशत) अशासकीय महाविद्यालयों में है। महिलाओं की संख्या संख्या केवल 3.32 प्रतिशत है। सारणी क्रमांक 6.04।

सारणी - 6.4
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों का ब्यौरा

महाविद्यालय	कुल चतुर्थ	प्रति.	पुरूष	प्रति.	महिला	प्रति.
शासकीय	593	75.64	460	58.67	133	16.97
अशासकीय	191	24.36	165	21.04	26	3.32
योग	784	100	625	79.71	159	20.29

महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षक :-

ग्वालियर चम्बल सम्भाग के चयनित महाविद्यालयों में 35 शासकीय महाविद्यालय हैं, इनमें केवल 25 महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षक हैं तथा 10 महाविद्यालयों में शासकीय शिक्षको का स्थान रिक्त है 15 अशासकीय महाविद्यालय हैं इनमें 13 में शारीरिक शिक्षक है में शारीरिक शिक्षक नहीं है इस प्रकार कुल शिक्षकों के 76 प्रतिशत महाविद्यालयो में शिक्षक है तथा 24 प्रतिशत में शारीरिक शिक्षकों के स्थान रिक्त हैं कुल शारीरिक शिक्षकों का 5 प्रतिशत शिक्षक शासकीय महाविद्यालय में हैं।

सारणी क्रमांक 6.5
महाविद्यालयों का ब्यौरा जिनमें शारीरिक शिक्षकों का ब्यौरा

महाविद्यालय	महासंख्या	प्रतिशत	महाविद्यालय जिनमें शिक्षक है	प्रतिशत	महाविद्यालय जिनमें शिक्षक नहीं है	प्रतिशत
शासकीय	35	70	25	50	10	20
अशासकीय	15	30	13	26	02	04
योग	50	100	38	76	12	24

शासकीय महाविद्यालय में केवल 29 शिक्षक हैं इनमें 27 (64. 29 प्रतिशत) पुरूष तथा 2 (4.76 प्रतिशत) महिला शारीरिक शिक्षक हैं। अशासकीय महाविद्यालय में केवल 13 शारीरिक शिक्षक हैं यह सभी पुरूष हैं विस्तृत विवरण सारणी क्रमांक में दिया है। सारणी क्रमांक-6.06

सारणी - 6.6

महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षकों का ब्यौरा

महाविद्यालय	महा.संख्या	कुल शिक्षक	पुरूष शिक्षक	प्रतिशत	महिला शिक्षक	प्रतिशत
शासकीय	35	29	27	64.29	02	4.76
अशासकीय	15	13	13	30.9	–	–
योग	50	42	40	95.95	02	4.76

शिक्षकों की योग्यता :- कुल चयनित 50 महाविद्यालयों में केवल 42 शारीरिक शिक्षक हैं, इनमें 36 (85.72 प्रतिशत) एम.पी.एड. 5 (9. 52 प्रतिशत) पी.एच.डी. तथा 2 (4.76 प्रतिशत) अन्य योग्यता धारक हैं इस प्रकार शासकीय महाविद्यालय में एम.पी.एड शारीरिक शिक्षकों का प्रतिश 69.05 प्रतिशत है, जबकि अशासकीय महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षकों का प्रतिशत 30.95 प्रतिशत है।

सारणी - 6.7

शारीरिक शिक्षकों की व्यवसायिक योग्यता का ब्यौरा

महाविद्यालय	महा.संख्या	कुल शा.शि.	प्रति.	एम.पी.एड.	प्रति.	पी.एच.डी.	प्रति.	अन्य	प्रति
शासकीय	35	29	69.05	26	61.91	03	7.14	–	–
अशासकीय	15	13	30.95	10	23.81	01	2.38	02	4.76
योग	50	42	100	36	85.72	02	9.52	02	4.76

3. वित्त :-

खेलों का वित्त से घनिष्ठ सम्बन्ध है, वित्त की स्थिति अच्दी होने पर ही खेलों पर तथा उन्हें उन्नतिशील बनाने में धन खर्च किया जा सकेगा अतः प्राप्त करने के स्त्रोत एवं धन व्यय करने क्री मदों की जानकारी का अध्ययन नितान्त आवश्यक है।

धन प्राप्ति के सन्दर्भ में ज्ञात हुआ कि सरकार द्वारा क्रीड़ा विकास योगदान के रूप में कोई धन प्राप्त नहीं होता है। स्पर्धा आयोजनों द्वारा भी धन प्राप्त नहीं होता है। धन केवल विद्यार्थियों से प्राप्त क्रीड़ा शुल्क से ही होता है। एक समान है अर्थात् 50 + 70 = 120 रूपया प्रति विद्यार्थी वसूल किया जाता है इस प्राकर चयनित महाविद्यालयो में 50018 विद्यार्थियों से 6002160/- एकत्रित होते है। इनमें से प्रति विद्यार्थी (58. 33 प्रतिशत) को चला जाता है शेष 41.67 प्रतिात धन राशि को आवश्यकतानुसार खर्च किया जाता है।

खर्च :-

यह आवश्यक एवं संभव नहीं है कि प्राप्त सभी धन खर्च कर दिया जावें फिर भी आवश्यकतानुसार धन खर्च किया जाता है। सम्पूर्ण ध- न में से जो धन खर्च होता है उसका 5 प्रतिशत खेलों के मैदान में रख रखाव पर खर्च होता है। खेल सामान खरीदने में खर्च किया गए ध- न का 20 प्रतिशत खर्च होता है। स्पर्धाओं के आयोजनों में भी कुल खर्च का 5 प्रतिशत खर्च हो जाता है। खिलाड़ियों के आवागमन में 40 प्रतिशत खर्च होता है। खिलाड़ियों की पोशाक खरीदने में 30 प्रतिशत खर्च होता है। साहित्य क्रय करने के लिए इन धन राशि में से कुछ भी खर्च नहीं होता है इस के अतिरिक्त साहित्य प्रकाशन में इस धन में से कोई खर्च नहीं होता है।

वित्त प्राप्ति का ब्यौरा :-

वित्त :-

(क) प्रति विद्यार्थी प्रवेश शुल्क

(ख) प्रति विद्यार्थी क्रीड़ा शुल्क रू. 120 = 50 + 70

(ग) सरकार द्वारा क्रीड़ा विकास योगदान नहीं

(घ) स्पर्धा आयोजन द्वारा प्राप्त धन –

(ई) अन्य मदों द्वारा उपलब्ध धन –

4. सुविधा :-

ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में केवल 84 प्रतिशत महाविद्यालयों में भवन है, तथा 16 प्रतिशत महाविद्यालयों में भवन नहीं है 70 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालय है, इनमें 26 प्रतिशत में भवन है तथा 14 प्रतिशत में महाविद्यालयों में स्वयं का भवन नहीं है, 30 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालय हैं इनमें से 28 प्रतिशत महाविद्यालय का अपना भवन हो जबकि 02 प्रतिशत महाविद्यालयो का स्वयं का भवन नहीं है। सारणी क्रमांक 6.08।

सारणी - 6.8

ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में भवन का ब्यौरा

महाविद्यालय	महा.संख्या	प्रति.	भवन हैं	प्रति.	भवन नही है	प्रति.
शासकीय	35	70	28	56	07	14
अशासकीय	15	30	14	28	01	02
योग	50	100	42	84	08	16

सारणी क्रमांक 06.08

ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में भवन का ब्यौरा
ग्वालियर चम्बल संभाग के चयनित महाविद्यालयों में

भवन नही हैं

भवन सुविधा हैं
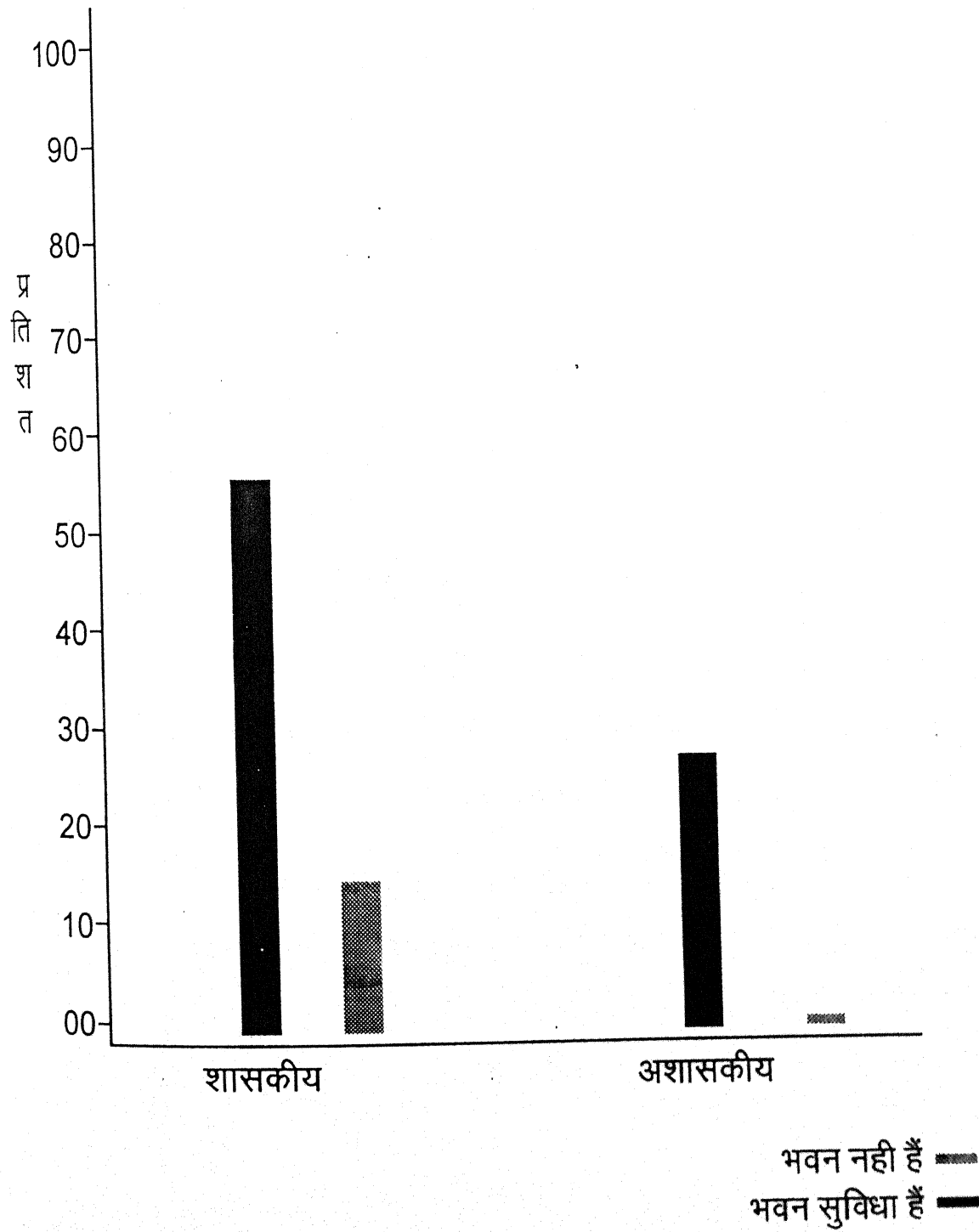
4. (घ) खेल मैदान की सुविधा :-

1. हॉकी मैदान - केवल 38 प्रतिशत महाविद्यालयों में हॉकी खेल मैदान की सुविधा है। इनमें 22 प्रतिशत हॉकी मैदान की सुविधा शासकीय महाविद्यालय में है तथा 16 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में है। सारणी 6.9 एवं 6.10।

2. फुटबाल :- फुटबाल मैदान की सुविधा केवल 52 प्रतिशत महाविद्यालयों में है इसमें से 30 प्रतिशत सुविधा शासकीय महाविद्यालयों में है तथा 30 प्रतिशत फुटबाल मैदान की सुविधा अशासकीय महाविद्यालयों में है। सारणी 6.9 एवं 6.10।

3. क्रिकेट मैदान :- क्रिकेट मैदान की सुविधा केवल 58 प्रतिशत महाविद्यालयोंमें उपलब्ध है इनमें से क्रिकेट मैान की सुविध ा 40 प्रतिशत महाविद्यालयों में उपलब्ध है तथा 18 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में ही क्रिकेट मैदान की सुविधा है।

4. बालीबाल कोर्ट :- बालबाल कोर्ट की सुविधा केवल 68 प्रतिशत महाविद्यालयों में दी है। यह सुविद्या 54 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालयो में तथा 14 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में ही है।

5. बास्केटबाल :- ग्वालियर चम्बल सम्भाग के केवल 38 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही बास्केटबाल सुविधा उपलब्ध है। इसमें से ऐसे केवल 20 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालय ही हैं जहां यह सुविधा है तथा 16 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में बास्केटबाल खेलने की सुविधा है। सारणी 6.10।

सारणी क्रमांक 6.9
ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में खेल के मैदान की सुविधा है/नहीं

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	हॉकी मैदान	फुटबाल मैदान	क्रिकेट मैदान	बालीवाल कोर्ट	बास्केट वाल	थ्रोबॉल मैदान	टेनिस कोर्ट	खो-खो मैदान	कबड्डी मैदान	धावनपथ	तरूणताल	टेनी कोइट
1	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	है	है	है	है	–	–	–	है	है	–	–	–
2	शासकीय कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	–	–	है	–	है	–	–	है	है	–	–	–
3	शास. श्यामलाल पाण्ड. महाविद्यालय, ग्वा.	–	है	–	है	है	–	–	है	–	है	–	–
4	शास. शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर	–	है	–	है	–	–	–	है	–	–	–	–
5	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, ग्वालियर	–	–	–	है	–	–	–	है	है	–	–	–
6	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वा.	है	है	है	है	–	–	–	है	है	–	है	–
7	नवीन कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	–	–	–	–	–	–	है					
8	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है
9	शास. कला एवं वाणिज्य महा.मोहना, ग्वा.	–	–	–	–	–	–	–	–	–	है	–	–
10	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि. महाविद्यालय, ग्वालियर	है	है	है	है	है	है	है	–	है	है	है	–
11	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, गवा.	–	–	–	है	है	–	है	है	है	–	–	–
12	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वा.	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है
13	माधव महाविद्यालय, नई सड़क, ग्वा.	–	–	–	है	है	है	है	है	है	–	–	–
14	जे.सी.मिल्स कन्या महाविद्यालय ग्वालियर	है	है	–	–	–	–	–	है	है	–	–	–
15	महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, ग्वालियर	–	है	–	–	है	–	–	है	है	–	–	है
16	कॉलेज आफ नर्सिग, कैंसर-चिकित्सालय, ग्वालियर	है	है	है	–	–	–	–	–	है	–	–	–
17	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, ग्वालियर	–	–	–	है	है	–	–	है	है	–	–	–
18	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकि. महाविद्या. ग्वा.	–	–	है	–	–	–	–	है	है	–	–	–
19	माधव इंस्टी. आफ टैक्नो. एण्ड साइंस, ग्वा.	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है	–	–

20 कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	है	है	है	है	–	–	–	है	है	–	–	–
21 शास.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	है	है	है	है	–	–	–	है	है	है	–	–
22 शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	–	–	–	–	–	–	–	है	है	–	–	–
23 शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षिक महाविद्या. शिवपुरी	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है	–	–
24 शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	–	–	है	–	–	–	–	है	है	–	–	–
25 शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	–	है	है	है	–	–	–	है	है	–	–	–
26 शास.नेहरूस्नातक महावि.अशोकनगर, गुना	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
27 शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	–	–	–	है	–	–	–	है	है	–	–	–
28 शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	है	है	है	है	–	–	–	है	है	है	–	–
29 शास. महाविद्यालय, राधोगढ़, गुना	–	–	है	है	–	–	–	है	है	–	–	–
30 शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना	–	–	है	है	–	–	–	है	है	–	–	–
31 शास. महाविद्या., चाचौडा, बीनागंज, गुना	–	है	है	–	–	–	–	है	है	–	–	–
32 शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	–	–	–	–	–	–	–	है	–	–	–	है
33 शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	है	है	है	है	–	–	–	है	है	है	–	–
34 पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया	है	है	–	है	–	–	–	है	है	है	–	–
35 शास. स्नातकोत्तर महाविद्या. श्योपुरकलां	है	है	है	है	है	है	–	है	है	–	–	–
36 श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
37 शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना	है	है	है	है	–	–	–	है	है	है	–	–
38 शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	–	–	–	है	है	है	–	है	है	है	–	–
39 शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना	–	–	है	है	है	है	–	है	है	–	–	–
40 शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना	–	–	–	है	–	–	–	–	है	–	–	–
41 अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बाह, मुरैना	–	–	–	है	है	है	–	है	है	–	–	–

42 ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना	–	है	–	–	–	–	–	–	है	–	–	–
43 शास. एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड	है	है	है	है	है	–	–	है	है	है	–	–
44 शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	–	–	–	–	–	–	–	–	है	–	–	है
45 शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, बालाजी, मिहोना, भिण्ड	–	–	है	है	–	–	–	–	–	–	–	–
46 शास. स्नातक महाविद्या.आलामपुर, भिण्ड	–	–	है	है	–	–	–	है	है	है	–	–
47 शास. महाविद्यालय, भिण्ड	–	–	है	–	–	–	–	है	है	है	–	–
48 चौधरी दिलीपसिहं कन्या महाविद्या.भिण्ड	है	है	है	है	है	है	–	है	है	–	–	–
49 चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्या., भिण्ड	–	है	है	है	है	है	–	है	है	–	–	–
50 श्रीरामनाथ सिंह महावि. गोरमी, भिण्ड	है	है	है	है	है	है	–	है	है	–	–	–
योग	12	26	29	34	19	13	07	40	42	16	04	06
शासकीय	11	25	20	27	10	07	07	28	28	15	04	05
अशासकीय	08	11	09	07	08	06	–	12	14	01	–	01

सारणी क्रमांक 6.10
खेल के मैदान की सुविधा का ब्यौरा

महाविद्यालय का नाम	हॉकी मैदान	फुटबाल मैदान	क्रिकेट मैदान	बालीबाल कोर्ट	बास्केट बाल	थ्रोबॉल मैदान	टेनिस कोर्ट	खो-खो मैदान	कबड्डी मैदान	धावनपथ	तरूणपथ	टेनी कोइट
शासकीय-35	11	15	20	27	10	07	07	28	28	15	04	05
प्रतिशत	22	30	40	54	20	14	14	56	56	30	08	10
अशासकीय-15	08	11	09	07	08	06	–	12	14	01	–	01
प्रतिशत	16	22	18	14	16	12	–	24	28	02	–	02
योग-50	19	16	29	34	19	13	07	40	42	16	04	06
प्रतिशत	38	52	58	68	38	26	14	80	84	32	08	12

सारणी क्रमांक 06.10

खेलों के मैदान की सुविधा का ब्यौरा ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालय में
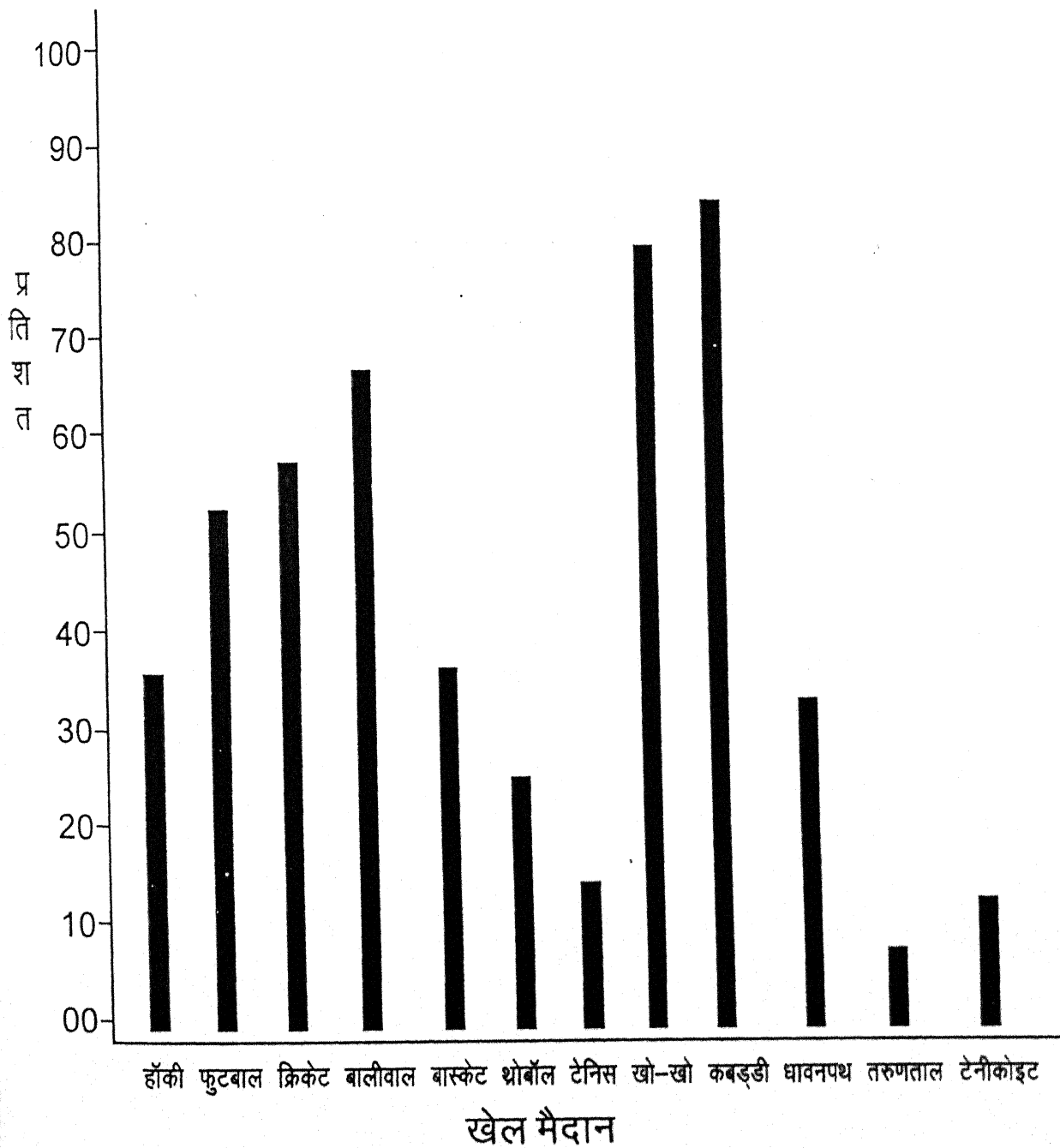
अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख खेल

11. टेनी कोइट :- ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में इस खेल को भी बहुत कम स्थानों पर सुविधा है केवल 12 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही इस की सुविधा है इसमें से 10 प्रतिशत सुविधा शासकीय महाविद्यालयों में है तथा 02 प्रतिशत का योगदान अशासकीय महाविद्यालयों का है।

12. बेड मिन्टन हाल :- ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में बैडमिन्टन हाल की सुविघ केवल 38 प्रतिशत में ही है इसमें से 24 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालयों में बैडमिन्टन हाल की सुविधा है तथा 14 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालय/अन्य महाविद्यालयों में छात्र-छात्रांए इस खेल से वंचित रहते है।

सारणी - 11
खेल मैदान की उपलब्ध सुविधा का ब्यौरा

म.विद्या.	बेडमिन्टन	%	टी.टी.	%	कैरम	%	शतरंज	%	स्कैट्रा	%	जिमनेजियम	%
शासकीय	35	12	24	19	38	27	54	28	56	–	01	02
अशास.	15	07	14	06	12	13	26	13	26	–	02	04
योग	50	19	38	25	50	40	80	41	82	–	03	06

टी. टी. हाल :- टी. टी. हाल की सुविधा 50 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। इनमें से 38 प्रतिशत सुविधा ग्वालियर चम्बल संभाग के शासकीय महाविद्यालयों में है और अशासकीय महाविद्यालय में केवल 12 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही यह सुविधा उपलब्ध है।

कैरम :- कैरम खेलने की सुविधा ग्वालियर चम्बल संभाग के 80 प्रतिशत महाविद्यालयो में है इसका 54 प्रतिशत भाग शासकीय महाविद्यालयों में तथा 26 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में कैरम खेलने की सुविधा है। अर्थात् 20 प्रतिशत महाविद्यालय कैरम खेल की सुविधा से वंचित है। सारणी क्रमांक 6.11

शतरंज :- ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में शतरंज 86 प्रतिशत महाविद्यालयों में खेलने की सुविधा उपलब्ध है इसमें यह सुविध I शासकीय महाविद्यालयों में 56 प्रतिशत तथा अशासकीय महाविद्यालयों में 26 प्रतिशत है। कहीं भी बैठकर खेला जा सकता है। अपितु इसे विशेष प्रोत्साहन प्राप्त है।

स्केट्रा :- यह खेल ग्वालियर चम्बल संभाग के किसी भी महाविद्यालय में नहीं खेला जाता है अर्थात स्कैट्रा खेल की सुविधा न तो शासकीय महाविद्यालयों में है और न ही अशासकीय महाविद्यालयों में। सारणी क्रमांक 6.11

सारणी - 6.12

खेल मैदान की उपलब्ध सुविधा का ब्यौरा

महाविद्यालय	आर्चरी	निशाने	रोलर	बाक्सिंग	प्रति.	ज्यूडो	प्रति.	कराटे	प्रति.
शासकीय	–	–	–	–	–	03	06	03	06
अशासकीय	–	–	–	01	02	01	02	01	02
योग	–	–	–	01	02	04	08	04	08

जिमनेजियम :- ग्वालियर चम्बल संभाग महाविद्यालयों में जिमनीजियम खेल की सुविधा केवल 6 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही है इसमें से 2 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालयों में तथा 4 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में। सारणी क्रमांक 6.12

आर्चरी :- ग्वालियर चम्बल संभाग के शासकीय एवं अशासकीय किसी भी महाविद्यालय में आर्चरी की सुविधा उपलब्ध नहीं है। सारणी क्रमांक 6.12

निशानेबाजी :- ग्वालियर चम्बल संभाग के सभी शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय निशानेबाजी की सुविधा से अछूते हैं। सारणी क्रमांक 6.12

रोलिंग स्कैटिंग :- रोलिंग स्कैटिग की सुविधा, ग्वालियर चम्बल सम्भाग के किसी भी शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में नही है। सारणी क्रमांक 6.12

बोक्सिंग :- ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में बाक्सिंग की सुविधा का भी अभाव है केवल अशासकय महाविद्यालयों में मात्र 2 प्रतिशत महाविद्यालयों में यह सुविधा है। सारणी क्रमांक 6.12

ज्योडो :- ग्वालियर चम्बल सम्भाग के 8 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही ज्योडो की सुविधा है। यह सुविधा शासकीय महाविद्यालयों में 6 प्रतिशत तथा अशासकीय महाविद्यालयों का स्थान 2 प्रतिशत ही है। सारणी क्रमांक 6.12

कराटे :- ग्वालियर चम्बल सम्भाग के केवल 8 प्रतिशत महाविद्यालय ही ऐसे है जहां कराट की सुविधा उपलब्ध है। शासकीय महाविद्यालयों में इस सुविधा का प्रतिशत 6 है। जबकि अशासकीय महाविद्यालया का योगदान केवल 2 प्रतिशत ही है। 6.12

स्पर्धा के दौरान प्रकाश की सुविधा (रात्रिकालीन सत्र हेतु) :- ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में से केवल 42 प्रतिशत महाविद्यालय ही ऐसे है जहां रात्रिकालीन सत्र प्रकाश की सुविधा उपलब्ध है। शासकीय महाविद्यालयों में इस सुविधा का प्रतिशत 24 है तथा अशासकीय महाविद्यालयों में 18 प्रतिशत में ही सुविधा है। सारणी-6.13।

सारणी - 6.13

स्पर्धा के दौरान प्रकाश की व्यवस्था (रात्रिकालीन सत्र हेतु)

महाविद्यालय		प्रकाश की सुविधा है	प्रति.	प्रकाश की सुविधा नहीं है	प्रति.
शासकीय	35	12	24	23	46
अशासकीय	15	09	18	06	12
योग	50	21	42	29	58

दर्शकों को बैठने हेतु स्टेडियम :- ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में दर्शको के बैठने के लिए स्टेडियम की सुविधा केवल 20 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही है। बैठने की यह सुविधा 16 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालयों में तथा 4 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में है। सारणी क्रमांक 6.14

सारणी - 6.14

दर्शकों के बैठने हेतु स्टेडियम की सुविधा

महाविद्यालय	महा. संख्या	सुविधा है	प्रति.	सुविधा नही है.	प्रति.
शासकीय	35	08	16	27	54
अशासकीय	15	02	04	13	26
योग	50	10	20	40	80

महिला खिलाड़ियों के लिए खेलों की स्वतंत्र सुविधा:- ग्वालियर चम्बल संभाग के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में महिला खिलाड़ियों की स्वतंत्र सुविधा केवल 48 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही है। यह सुविधा 34 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालयों में तथा 14 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में ही है। सारणी क्रमांक 6.15

सारणी - 6.15

महिला खिलाड़ियों के लिए स्वतंत्र सुविधा का ब्यौरा

महाविद्यालय	महा.संख्या	सुविधा है	प्रति	सुविधा नहीं है.	प्रति.
शासकीय	35	17	34	18	36
अशासकीय	15	07	14	08	16
योग	50	25	48	26	52

खेल सामान हेतु भण्डार :- ग्वालियर चम्बल संभाग के केवल 66 प्रतिशत महाविद्यालय ही ऐसे है जहां खेल सामान रखने हेतु खेल भण्डार की सुविधा प्राप्त है। यह सुविधा 42 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालयों में है तथा 24 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों में है।

सारणी - 6.16

खेल साहित्य रखने हेतु भण्डार सुविधा का ब्यौरा

महाविद्यालय	महा.संख्या	भण्डार है	प्रति	भण्डार नही है.	प्रति.
शासकीय	35	21	42	14	28
अशासकीय	15	12	24	03	06
योग	50	33	66	17	34

खेल पुस्तकों की सुविधा :- ग्वालियर चम्बल संभाग के समस्त चयनित महाविद्यालयों में खेल सम्बन्धी केवल 715 पुस्तकें ही उपलब्ध है इनमें 83.78 प्रतिशत पुस्तकें महाविद्यालयों में है। तथा शेष 16.22 प्रतिशत पुस्तकें अशासकीय महाविद्यालयों में हैं।

सारणी - 6.17

खेल पुस्तकों का ब्यौरा

महाविद्यालय	महा. संख्या	प्रति.	पुस्तको की संख्या	प्रति.
शासकीय	35	70	599	83.78
अशासकीय	15	30	113	16.22
योग	50	100	715	100

खेल पत्रिकाओं की सुविधा :- ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में खेल पत्रिकाओं की सुविधा बहुत कम अर्थात् 65 पत्रिकाऐं ही हैं इनमं से 64.62 प्रतिशत पत्रिकाऐं शासकीय महाविद्यालय में उपलब्ध है तथा शेष 35.38 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालयों में। सारणी क्रमांक 6.18

सारणी - 6.18

खेल पत्रिकाओं का ब्यौरा

महाविद्यालय	महा. संख्या	प्रति.	पुस्तकों की संख्या	प्रति.
शासकीय	35	70	42	64.62
अशासकीय	15	30	23	35.38
योग	50	100	65	100

अध्याय 7

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपसंहार

निष्कर्ष एवं सुझाव :

मध्यप्रदेश के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन ग्वालियर चम्बल सम्भाग के विशेष सन्दर्भ में किया गया है। ग्वालियर चम्बल सम्भाग मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है इसका क्षेत्रफल 44737.36 वर्ग किलो मीटर है, जनसंख्या 8937798 है इनमें पुरुष अधिाक एवं महिलाओं की संख्या कम है पुरुष 53.99 प्रतिशत (4826001) एवं महिलायें 4601 प्रतिशत (4111797) है। ग्रामीण जनसंख्या 72.19 प्रतिशत है नगरीय संख्या 27.81 प्रतिशत तथा शिक्षित लोग 73.55 प्रतिशत है। महिलायें केवल 25.33 प्रतिशत पुरुष 48.22 प्रतिशत शिक्षित हैं। भौतिक पर्यावरण की दृष्टि से जलवायु एवं भूगर्भिक संरचना का प्रभाव खिलाड़ियों एवं खेलों पर पड़ा है। यह क्षेत्र शीत ऋतु में अधिक ठंडा एवं ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्म हो जाता है तथा धूलभरी आँधिया चलती हैं, भारत वर्ष के अन्य भागों के समान यहां भी तीन ऋतुयें शीत, ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु होती हैं। सामान्य वर्षा 728.83 मि.मी. होती है यह अधिकांश वर्षा ऋतु में ही होती है। वर्षा, भीषण गर्मी के पश्चात् अनिश्चित एवं मूसलाधार होती है। इस क्षेत्र में कांप, मध्यम काली मिट्टी तथा मिश्रित लाल एवं काली मिट्टी है। मिट्टी के विषमता से इस क्षेत्र के निवासियों को प्रभावित होना स्वभाविक है। तीव्र वर्षा ने खड्ड अपरदन कर 3605 वर्ग कि.मी. खड्ड क्षेत्र का विस्तार किया जिनमें कटीली झाड़िया एवं वृक्ष खड़े हैं जो आवागमन में अवरोध है। अतः भौगोलिक दशाओं का पूर्ण नियंत्रण है। इसी के फलस्वरूप लोगों के जीविका साधन नियंत्रित है। अधिकांश लोग कृषि एवं वनों से प्राप्त सामग्री पर आधारित है। उद्योग धन्धों की दृष्टि से ग्वालियर महानगर औद्योगिक केन्द्र रहा है अब यह भी अपने ह्रास की ओर जा रहा है। निकटवर्ती क्षेत्र में उद्योग पनप रहे

हैं। प्रमुख धन्धा कृषि है अतः आर्थिक दृष्टि से लोग मध्यम वर्ग के अधिक हैं। सामाजिक दृष्टि से यहां सभी धर्म के लोग निवास करते हैं हिन्दू 93.51 प्रतिशत है। यह लोग भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से भारतीय खेल जैसे कबड्डी एवं खो-खो में अधिक रुचि रखते हैं। मुख्य भाषा हिन्दी है।

ग्वालियर चम्बल सम्भाग में 120 महाविद्यालय हैं इनमें से 73 महाविद्यालय शासकीय महाविद्यालय है तथा 47 महाविद्यालय अशासकीय हैं। इन महाविद्यालयों में खेल सुविद्याओं की दृष्टि से विश्लेषणात्मक अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 84 प्रतिशत महाविद्यालयों का अपना भवन है। 14 प्रतिशत शासकीय एवं 2 प्रतिशत अशासकीय महाविद्यालयों के पास स्वयं का भवन नहीं है। महाविद्यालयों में मात्र 76 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही शिक्षक है महिला शिक्षिका केवल 4.76 प्रतिशत है। 24 प्रतिशत महाविद्यालयों में शिक्षकों के स्थान रिक्त हैं। जो भी शासकीय शारीरिक शिक्षक हैं उनमें से 95.24 प्रतिशत पूर्ण योग्यता धारक हैं दर्शकों क बैठने हेतु स्टेडियम की सुविधा केवल 20 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही हैं। खेल साहित्य भण्डार की सुविधा 66 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही है। खेल पुस्तिकाओं की सुविधा की दृष्टि सम्भव 715 पुस्तकें ही समस्त 50 महाविद्यालयों में है तथा इनमें खेल पत्रिकाओं की संख्या 65 है। खेल पत्रिकायें केवल कुछ ही महाविद्यालयों में आती है महिला खिलाड़ियों के लिये स्वतंत्र खेल की सुविधा केवल 48 प्रतिशत महाविद्यालयों में ही है। स्पर्धा के दौरान रात्रिकालीन सत्र में प्रकाश की सुविधा 42 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। खेल मैदान की सुविधा की दृष्टि से हॉकी मैदान की सुविधा 38 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। फुटवाल मैदान की सुविधा 52 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। क्रिकेट मैदान की सुविधा 58 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। बालीवॉल कोर्ट की

सुविधा 68 प्रतिशत महाविद्यालयों में है वास्केव वाल की सुविधा केवल 36 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। थ्रो वाल की सुविधा मात्र 26 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। टेनिस कोर्ट की सुविधा 14 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। खो-खो खेल हेतु सुविधा 80 प्रतिशत महाविद्यालयों में कबड्डी खेल खेलने हेतु 84 प्रतिशत महाविद्यालय में सुविधायें उपलब्ध हैं तरूण ताल की सुविधा 8 प्रतिशत महाविद्यालय तथा टेनी कोइट खेल की सुविधा मात्र 12 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। इस प्रकार खेलों से विश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रस्तुतिकरण स्पष्ट है कि ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में भारतीय खेल खो-खो एवं कबड्डी को ही प्रमुख स्थान प्राप्त है।

अन्य खेलों की सुविधाओं की दृष्टि से ग्वालियर चम्बल के महाविद्यालयों में वैडमिन्टन हॉल की सुविधा 38 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। टी.टी. हॉल की सुविधा 50 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। कैरम के सुविधा अधिकांश महाविद्यालयों में है अर्थात यह 80 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। शतरंज भी लोकप्रिय है यह 82 प्रतिशत महाविद्यालयों में खेला जाता है। ग्वालियर चम्बल को किसी भी महाविद्यालय में स्कैंट्रा की सुविधा नहीं है। जिमनेजियम की सुविधा ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में केवल 6 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। आर्चरी, निशानेबाजी तथा रोलर स्केटिंग की सुविधा ग्वालियर चम्बल सम्भाग के किसी भी महाविद्यालय में नहीं है। बॉक्सिंग की सुविधा मात्र 2 प्रतिशत महाविद्यालयों में है। ज्यूडो एवं कराटे दोनों ही मात्र 8 प्रतिशत महाविद्यालयों में है।

निष्कर्ष यह है कि ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में कबड्डी, खो-खो, कैरम एवं शतरंज की सुविधा प्रमुख रूप से महाविद्यालयों में है।

सुझाव :

जिन शासकीय महाविद्यालयों के पास अपना भवन नहीं है उन महाविद्यालयों में शासन को भवन की व्यवस्था करनी चाहिए तथा अशासकीय महाविद्यालय निके पास भवन नहीं है उन महाविद्यालयों के स्वामियों को भवन की व्यवस्था करनी चाहिए। भवन छात्र-छात्राओं के प्रवेश के आकर्षण का आधार होता है। भवन न होने तथा अच्छा भवन न होने का प्रभावन प्रवेश के समय छात्र-छात्राओं के मन में जन्म लेता है।

जिन महाविद्यालयों में खेल मैदानी नहीं है उन महाविद्यालयों में खेल मैदानी की व्यवस्था होनी चाहिए प्रत्येक महाविद्यालय में सभी प्रकार के खेल मैदान अतिवर्षा रूप से होना चाहिये। शासन की इस व्यवस्था में समाजसेवी संस्थ एवं अशासकीय महाविद्यालयों के स्वामिों को सहयोग देना चाहिये। क्रीड़ा से सम्बन्धित तकनीकी सहायक, ग्राउण्ड मैन भी होना चाहिये।

प्रत्येक महाविद्यालय में छात्र संख्या के आधार पर खेल शिक्षकों की नियुक्ति होना चाहिये। प्रत्येक महाविद्यालय में कम से कम एक शारीरिक शिक्षक अवश्य हो, यदि महाविद्यालय में सह-शिक्षा है तो उस महाविद्यालय में एक महिला शिक्षिका भी होना चाहिये।

शारीरिक शिक्षक एवं शिक्षकायें प्रशिक्षित होना चाहिये। वे एम.ए. एम.पी.एड अथवा पी-एच.डी. होना चाहिये।

महाविद्यालय पाठ्यक्रम में खेलकूद अनिवार्य विषय के रूप में होना चाहिये।

अन्य विषयों के समान प्रत्येक महाविद्यालय में खेल विभाग होना चाहिये।

खेल का सामान एवं साहित्य रखने हेतु प्रत्येक महाविद्यालय में एक खेल भण्डार होना चाहिये।

खेलों को प्रोत्साहन हेतु स्टेडियम की सुविधा भी होना आवश्यक है।

महाविद्यालयों में खेल सम्बन्धी पुस्तकें मंगाई जावे और उन पुस्तिकाओं का लाभ छात्र एवं छात्राओं को मिलता रहना चाहिये।

अन्य विषयों के समान ही खेल पत्रिकाओं का भी महाविद्यालय में मंगाया जावे तथा उन्हें नियम स्थान पर वाचनालय में लगवाकर छात्र एवं छात्रओं को लाभावन्वित किया जावे परिवर्तित नियमावली की जानकारी समय-समय पर प्रत्येक महाविद्यालय को मंगाना चाहिये।

महिला खिलाड़ियों के लिये स्वतंत्र खेलने की व्यवस्था होनी चाहिये।

स्पर्धा के दौरान रात्रिकालीन सत्र में प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिये।

खेलों का प्रोत्साहन देने के लिये शासन एवं स्थानीय निकायों द्वारा महाविद्यालयों को धन दिया जावे। प्रत्येक महाविद्यालय में खेल समय सारिणी होना चाहिये। महाविद्यालय में समय-समय पर खेलकूद कार्यक्रम का आयोजन होता रहना चाहिये। ताकि खिलाड़ियों का उत्साह बढ़े। खेल प्रतियोगिता का आयोजन होना चाहिये जिससे उनमें खेल के प्रति रूचि का संचार हो और खेल का माहौल बने।

प्रतियोगिताओं के पूर्व अच्छे प्रशिक्षकों से खिलाड़ियों का प्रशिक्षण दिलवाना चाहिये ताकि खिलाड़ियों कार मनोबल बढ़ जावे।

खेल सम्बन्धी जानकारी महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका में अच्छे खिलाड़ियों के छायाचित्र के साथ प्रकाशित करना चाहिये तथा अच्छे खिलाड़ियों को पुरुस्कृत भी करना चाहिये।

विकास के लिय खेल आधार शिला है इनके द्वारा ही बहुमुखी विकास सम्भव है। खेल के द्वारा ही खिलाड़ियों में समय की पावन्दी, अनुशासन कर्तव्यों का निर्वहन, शिष्टाचार, सहन शीलता, एकजुट होकर सहायोगात्मक भावना, मानसिक बौद्धिक, नैतिक एवं चारित्रिक जैसे आदर्श गुणें का विकास होता है जिससे सुदृढ़ समाज बनता है। इस वैज्ञानिक युग में ऐसे ही व्यक्तियों की आवश्यकता है जो शारीकिर एवं मानसिक रूप से स्वस्थ्य हो और सभी खिलाड़ी जैसे गुणों से सम्पन्न हो। शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वतंत्र रहने एवं सुदृढ़ समाज बनाने के उद्देश्य से ग्वालियर चम्बल सम्भाग के महाविद्यालयों में खेलों का विकास नितान्त आवश्यक है। स्वस्थ समाज ही राष्ट्रीय एवं विश्व के कल्याण का पक्ष प्रशस्त करेगा।

:: सन्दर्भ ग्रंथ ::

अगस्थ्या, आर.ए.	1976	ए हैंडबुक ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, सेकिण्ड एडीशन, बाधवा पब्लिकशिंग हाउस
बुचर-चार्ल्स	1960	ए फाउण्डेशन ऑफ फिजीकल एजुकेशन, थर्ड एडीशन, सेंट लुईस, द सी.व्ही. मोसबी कम्पनी
वारवरकर, जी.डी.	1994	हैंडबुक ऑफ फिजीकल एजुकेशन, देहली, फ्रेंडस पब्लीकेश्न ऑफ इण्डिया
कार्टर, जे.ई.एल.	1982	फीजीकल स्ट्रक्चर ऑफ ओलम्पिक एथलीट्स, लंदन्स कारगर,
शुक्ला, एन.बी.	1996	करेंट रिसर्चेज इन स्पोर्ट्स साइन्स इन इण्डियन, कन्टेक्सट, प्रसीडेंट इण्डियन, सोसायटी ऑफ स्पोर्टस साइंटिस्ट्स, 39, महामनापुरी कॉलोनी, बी.एच.यू., वारायणसी-221005
देवनाथ, कल्पना	1993	वूमेन्स परफार्मेस एण्ड स्पोर्ट्स, न्यू देहली, फ्रेंड्स पब्लीकेशन
वीनबर्ग, आर.एसध एण्ड जी.डी.	1995	फाउण्डेशन ऑफ स्पोर्ट्स एण्ड एक्सरसाइज साइकोलॉजी, कैम्पेन, 11, ह्यूमनकाइनेटिक्स
लोय, जॉन, डब्ल्यू	1978	स्पोर्ट्स एण्ड सोशल सिस्टम, एडीसन-वेसले पब्लिशिंग कम्पनी रीडिंग मैसेकसेट मैनलोपार्क, कैलीफोर्निया
पाण्डे, लक्ष्मीकान्त	1982	भारतीय खेलों की मीमांस
कमलेश, एम.एल.	1985	क्रीड़ा मनोविज्ञान, मैट्रोपॉलिटन बुक कम्पनी प्रा. लि. नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002
शर्मा व्ही.डी. एण्ड सिंह ग्रंथ	1977	प्रयोगात्मक शारीरिक शिक्षा, आर्म बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

अजय भल्ला	1979	राष्ट्रीय खेल कबड्डी साहित्य, केशवकुंज, झण्डे वाला, नई दिल्ली-110055
दुल देवेन्द्र सिंह	1997	शारीरिक शिक्षा तत्व एवं इतिहास व समस्त खेल के मैदान एवं नियम, फ्रेण्ड्स, पब्लिकेशन्स इण्डिया, मुखर्जी मार्ग, नई दिल्ली-110009
सीमा कौशिक धनंजय शा	2000	शारीरिक शिक्षा में पाठ नियोजन शिक्षा पद्धति के सिद्धांत फ्रेंड्स पब्लिकेशन्स इण्डिया
कृष्णन व्ही.एस.	1965	ग्वालियर गजटियर, गव्हर्नमेंट सेंट्रल प्रेस भोपाल
जार्ज ए. लेंडवर्ग	1951	सोशल रिसर्च, लांगमैन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क
गुडे जे. विलियम एवं हाट पालके	1972	मैथड्स इन सोशल रिसच्र, एम.सी. ग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क
मुखर्जी रवीन्द्रनाथ	1998	सोशल रिसर्च एण्ड स्टेटिस्टिक्स विवे प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली-7
अग्रवाल जे.के. एवं पाण्डे डी.एस.	1988	सामाजिक शोध, आगरा बुक स्टोर, पचकुईया, आगरा
गुडे जे. विलियम	1948	मैथड्स इन सोशल रिसर्च, एम.सी. ग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क
पोलिनवी, यंग	1960	सांइटिफिक सोशल सर्वेज एण्ड रिसर्च, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे
मुखर्जी रवीन्द्रनाथ गोपाल एण्ड एच.	1998	सोशल रिसर्च एण्ड स्टेटिस्टिक्स इन इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च प्रोक्योर इन सोशल साइन्स
शुक्ल एस.एम. एवं शिवपूजन सहाय	1994	सांख्यिकी के सिद्धांत साहित्य भवन, आगरा
गोपाल, एम.एच.		एन इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च प्रोक्योर सोशल साइंस

एफोक, आर.एल.		डिजाइन ऑफ सोशल रिसर्च
जोहाद एण्ड कुक		रिसर्च मैथड्स इन सोशल रिसर्च
महरोत्रा श्रीनाथ एवं सक्सेना जे.पी.	1960	मानव भूगोल, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, पुस्तक प्रकाशन, आगरा
तिवारी, शिवकुमार	1971	मानव भूगोल, केदारनाथ रामनाथ मेरठ
प्रमिला कुमार	1987	मध्यप्रदेश का प्रादेशिक भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल प्रथम संस्करण
लाल डी.एस.	1979	जलवायु विज्ञान चैतन्य पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद
वाडिया डी.एन	1966	ज्योलॉजी ऑफ इण्डिया, मैकमिलन एण्ड कम्पनी
थोर्नबरी	1961	प्रिंसिपल्स ऑफ ज्योमार्फोलॉजी, न्यूयार्क
एन.सी.ए.ई.आर		टैक्नो इकोनामिक सर्वे ऑफ मध्यप्रदेश, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे
पापडाकिंस, जे.	1975	क्लाईमेट ऑफ इ वर्ड एण्ड देयर पोटोंशियलिटी
धरमवीर	1990	स्पोर्ट्स एण्ड सोसायटी, रीडिंग इन सोशलॉजी ऑफ स्पोर्ट्स, न्यू देहली क्लासीकल
जोतसिंह	1991	स्टडी ऑफ प्राब्लम्ब्स ऑफ फिजीकल एजूकेशन एण्ड स्पोर्ट्स इन पंजाब, थीसिस : पंजाबी यूनिवर्सिटी
सिविया, जी.एस.	1988	सोसल आस्पेक्ट्स ऑफ स्पोर्ट्स इन इण्डिया, थीसिस : मराठवाड़ा विश्वविद्यालय
पोनोमरयोव, एन आई.	1981	स्पोर्ट्स एण्ड सोसायटी, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को.

:: अन्य ग्रन्थ ::

द्विवेदी हरिहर निवास ''मनीषा'' 1980 ग्वालियर दर्शन, प्रथम चरण

भारत की जनगणना 2001 मध्यप्रदेश श्रृंखला 24, निर्देशक, जनगणना कार्य मध्यप्रदेश डायरेक्ट ऑफ सेनास मध्यप्रदेश भोपाल टेविल डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ पापुलेशन 1991 पृष्ठ 4-7

रामा 1/17

ऋक 9/86/26

अथर्व 20/135/1-2

महासभा पर्व 2/47

महा. अदि पर्व 1/133

:: आर्टीकल्स ::

भुवन डी.	:	गेम्स एज़ इन इन्ट्रेस्टिंग टीचिंग स्ट्रेटेजी, प्राइमरी टीचर 20(3) July 1995 P 38-40
धर्मराज, एम.पी.	:	मोउर्नाइजेशनप ऑफ फिजीकल एजुकेशन एण्ड स्पोर्ट्स इन इण्डिया यूनीवर्सिटी न्यूज 33(18) 1 May 1995 P 12-14
खान, एम. एण्ड अदर्स	:	फील्ड स्टडी आफ लेविल ऑफ एस्पिरेशन ऑफ मेल एण्ड फीमेल नेशनल बास्केट बाल प्लेयर्स एनआई.एस. साइंटिफिक जनरल 12(2) April 1991 P 22-25
मजूमदार बोरिया	:	द वर्नाकुलर इन स्पोर्ट्स हिस्ट्री इकोनामी एण्ड पोलिटिकल वीकली 37(29) 20 July 2002 P 3069-75
ओबेराय सतीश	:	दिस्मल स्टेट ऑफ इण्डियन स्पोर्ट्स सम रेमेडीज, फ्रीडम फसर्ट नं. 408 January-March 1991 P 36-37
रामेश्वरी	:	रोल ऑफ मोटीवेशन एमंग द यूनिवर्सिटी स्पोर्ट्स पर्सनस, यूनिवर्सिटी न्यूज 39(47) 19 नवम्बर 2001 पी 6-8
श्रीनिवासन, सुन्दरम्	:	स्पोर्ट्स मैनेजमेंट यूनीवर्सिटी न्यूज 30(49) 7 दिसम्बर 1992 पी 9-10
श्रीवाटसन, एस.	:	मोटीवेशन इन स्पोर्ट्स परफार्मेंस : द रोल ऑफ फिजीकल एजुकेशन, यूनीवर्सिटी न्यूज, 10 मई 1993 पी 4-6

श्रीवाट्सन, सुन्दरम : फिजीकल एजुकेशन एण्ड स्पोर्ट्स प्रोग्रामस इन कॉलेज एण्ड यूनीवर्सिटीज इन इण्डिया, यूनीवर्सिटी न्यूज, 6 जैनुअरी 1992, पी 5-6

सांधी, किरण : सर्च फॉर रिवचेलेंस इन फिजीकल एजुकेशन, ए नोट ऑन प्रोफेशनल प्रीपेरेशन, यूनीवर्सिटी न्यूज 33(5)30 जैनुअरी 1995 पी 1-3

सत्पथी, एच.पी. : स्पोर्ट्स हॉस्टल्स, ए ब्रीडिंग ग्राउण्ड फॉर मैडल विनर्स उड़ीसा रिव्यू 47(11) जून 1991, पी 34-35

सत्यनारायण, व्ही : एजुकेशन, फिजीकल एजुकेशन एण्ड स्पोर्ट्सः ए क्लासीफिकेशन फॉर सोशल डव्लपमेंट यूनीवर्सिटी न्यूज 38(55)28 अगस्त 2000 पी 17-18

सहगल, एम.एम. : विलेज अवर स्पोर्ट्स कोआपरेटर्स बुलेटिन 45(1) जैनुअरी 2002, पी 10-11

सिंह, मिथलेश के. : स्पोर्ट्स लीडरशिप इन द न्यू मिलेनियम, यूनीवर्सिटी न्यूज 40(6)11 फ्रेबुअरी 2002 पी 10-12

सिविया, जी.एस. : यूनीवर्सिटी स्पोर्ट्स इन इण्डिया, यूनीवर्सिटी न्यूज 32(38) 19 सेप्टेम्बर 1994 पी 3-5

परिशिष्ट

परिशिष्ट-1

नाम : स्वपना सक्सेना

विषय : पी-एच.डी. शोध कार्य हेतु

शोध विषय : म.प्र. के महाविद्यालयों में खेल सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध स्थल : बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.)

:: प्रश्नावली ::

1. सामान्यः

(क) महाविद्यालय का नाम

(ख) स्थापना की तिथि

(ग) कार्यालय का पता

(घ) महाविद्यालय के अध्यक्ष का नाम एवं पता

(ड़) महाविद्यालय के सचिव का नाम एवं पता

(च) महाविद्यालय के प्राचार्य का नाम एवं पता

(छ) महाविद्यालय के क्रीड़ा अधिकारी का नाम एवं पता

(ज) महाविद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या पुरुष महिला योग

(झ) महाविद्यालय के शिक्षकों की संख्या पुरुष महिला योग

(ञ) महाविद्यालय के कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों की संख्या पुरुष महिला योग

(ट) महाविद्यालय के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की संख्या पुरुष महिला योग

(ठ) शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यता पी-एच.डी. स्नातकोत्तर

(ड) क्रीड़ा अधिकारी की योग्यता पी-एच.डी. स्नातकोत्तर

2. वित्त

(क) प्रति विद्यार्थी प्रवेश शुल्क- रु. प्रतिमाह/वार्षिक
(ख) प्रति विद्यार्थी क्रीड़ा शुल्क रु. प्रतिमाह/वार्षिक
(ग) सरकार द्वारा क्रीड़ा विकास योगदान रु.
(घ) स्पर्धा आयोजन द्वारा प्राप्त धन रु.
(ङ) अन्य मदों द्वारा उपलब्ध धन रु.

3. खर्च

(क) मैदान के रख-रखाव में खर्च धनराशि रु. (वार्षिक)
(ख) खेल सामानों में क्रम में खर्च धनराशि रु. (वार्षिक)
(ग) स्पर्धाओं के आयोजन में खर्च धनराशि रु. (वार्षिक)
(घ) खिलाड़ियों के आवागमन में खर्च धनराशि रु. (वार्षिक)
(ङ) खिलाड़ियों के पोषाक के क्रम में खर्च धनराशि रु. (वार्षिक)
(च) क्रीड़ा साहित्य क्रय में खर्च धनराशि रु. (वार्षिक)
(छ) क्रीड़ा साहित्य प्रकाशन में खर्च धनराशि रु. (वार्षिक)

4. सुविधा

(क) महाविद्यालय का स्वत: का भवन है/नहीं
(ख) महाविद्यालय का कुल क्षेत्र (एकड़ में)
(ग) महाविद्यालय में कुल क्रीड़ा क्षेत्र (एकड़ में)
(घ) निम्न मैदान है/नहीं

(1) हॉकी मैदान (2) फुटबॉल (3) क्रिकेट मैदान
(4) वॉलीवाल कोर्ट (5) बास्केटवाल (6) थ्रो बॉल मैदान
(7) टेनिस कोर्ट (8) खो-खो मैदान (9) कबड्डी मैदान
(10) धावन-पथ (11) तरण-ताल (12) टेनी कोइट

(ङ) निम्न सुविधा उपलब्ध - हैं/नहीं

(1) बैडमिन्टन हॉल (2) टी.टी. हॉल (3) कैरम
(4) शतरंज (5) स्कैट्रा (6) जिमनेजियम

(च) निम्न सुविधा उपलब्ध - हैं/नहीं

(1) आर्चरी (2) निशानेबाली (3) रोलर स्केटिंग

(4) बॉक्सिंग (5) ज्यूडो (6) कराटे

(छ) स्पर्धा के दौरान प्रकाश (रात्रिकालीन सत्र हेतु) की व्यवस्था है/नहीं

(ज) दर्शकों के बैठने हेतु स्टेडियम - है/नहीं

(झ) महिला खिलाड़ियों के लिए खेलों की स्वतन्त्र सुविधा - है/नहीं

(ञ) खेल-साहित्य रखने हेतु भण्डार कक्षाा - है/नहीं

(ठ) खेल-पुस्तक, पत्रिकाएँ, एवं शोध पत्र-पत्रिकाा - है/नहीं

(1) खेल पुस्तक संख्या -

(2) खेल पत्रिका संख्या -

हस्ताक्षर 1. प्राचार्च

2. क्रीड़ा अधिकारी

3. शोधकर्ता

पुरूष-महिला विद्यार्थियों का ब्यौरा ग्वालियर चम्बल संभाग के चयनित महाविद्यालयों में

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	कुल	पुरूष	महिला
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	225	100	125
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	1746	-	1746
3.	शास. श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वा.	1148	1120	28
4.	शास.श्यामलाल पाण्उवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वा.	108	74	34
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड़, ग्वा.	456	416	40
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर	800	500	300
7.	बीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड़, ग्वालियर	150	-	150
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	1440	1079	361
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वा.	3907	3350	557
10.	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि.महाविद्यालय, ग्वा.	3907	3350	557
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	7000	-	7000
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	2700	2400	300
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क, ग्वालियर	2600	2400	200
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय, बिरलानगर, ग्वा.	1200	-	1200
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, चारशहर का नाका, ग्वालियर	600	500	100
16.	कॉलेज आफ नर्सिग, कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	165	01	164
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर	719	600	119
18.	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकि. महाविद्यालय, गिरवाई नाका, ग्वालियर	525	403	122
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड साइंस मेलाग्रांउड रोड, ग्वालियर	200	1600	400

20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिचित्सालय, ग्वा.	37	05	32
21.	शास.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	2856	2020	836
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	730	-	730
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय, शिवपुरी	120	120	-
24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	217	217	-
25.	शास. स्नाकोत्तर महाविद्यालय, गुना	2865	-	2865
26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्या., अशोक नगर, गुना	262	190	72
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	302	-	302
28.	शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	296	141	155
29.	शास. महाविद्यालय, राधोगढ़, गुना	238	141	97
30.	शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना	256	132	124
31.	शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा बीनागंज, गुना	325	258	67
32.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	300	-	300
33.	शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	2428	1695	733
34.	पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया	72	52	20
35.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां	700	440	260
36.	श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर	450	368	82
37.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना	1189	937	252
38.	शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	1200	-	1200
39.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना	550	350	200
40.	शास. महाविद्यालय, जौरा मुरैना	231	100	131
41.	अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	1166	821	345
42.	ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना	927	831	96
43.	शास.एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड	1232	1100	132
44.	शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	162	-	162

45.	शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, बालाजी, मिहोना, भिण्ड	514	480	134
46.	शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड	350	300	50
47.	शास. महाविद्यालय, भिण्ड	258	161	97
48.	चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	1150	-	1150
49.	चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिंण्ड	568	495	73
50.	श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड	359	343	16
	योग	50018	26323	23695
	शासकीय	37480	17904	19576
	अशासकीय	12538	8419	4119

कार्यानयीन कर्मचारियों का ब्यौरा
ग्वालियर चम्बल संभाग के चयनित महाविद्यालयों में

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	कुल	पुरूष	महिला
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	25	15	10
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	28	22	06
3.	शास. श्यामलाला पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वा.	32	26	06
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड़, ग्वालियर	05	04	01
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड़, ग्वालियर	06	03	03
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर	150	140	10
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड़, ग्वालियर	04	02	02
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	05	05	-
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर	04	04	-
10.	शास.माह.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि.महाविद्यालय, ग्वा.	15	12	03
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	11	09	02
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	18	18	-
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क, ग्वालियर	25	23	02
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय, बिरलानगर, ग्वालियर	02	03	02
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्या., चारशहर का नाका, ग्वा.	10	09	01
16.	कॉलेज आफ नर्सिंग, कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	03	02	01
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर	23	23	-
18.	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकित्सालय महाविद्यालय, गिरवाई नाका, ग्वालियर	07	05	02
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड साइंस मेलाग्रांउड रोड़, ग्वालियर	20	14	06
20.	कॉलेजा आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वा.	03	03	-
21.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	21	18	03
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	06	05	01
23.	शास. तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय, शिवपुरी	04	04	-

24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिपुरी	03	02	01
25.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	17	17	-
26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, अशोक नगर, गुना	07	07	-
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	06	04	02
28.	शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	03	03	-
29.	शास. महाविद्यालय, राधोगढ़ गुना	06	06	-
30.	शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना	05	05	-
31.	शास. महाविद्यालय, चाचौडा, बीनागंज, गुना	05	05	-
32.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	04	04	-
33.	शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	14	14	-
34.	पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया	03	03	-
35.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां	06	05	01
36.	श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर	05	05	-
37.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना	15	15	-
38.	शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	05	03	02
39.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़ मुरैना	04	04	-
40.	शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना	02	02	-
41.	अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	10	09	01
42.	ऋषि गालब महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	04	04	-
43.	शास.एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड	16	16	-
44.	शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	07	05	02
45.	शास. गांधी स्नातक महाविद्या., बालाजी, मिहोना, भिण्ड	08	08	-
46.	शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड	08	08	-
47.	शास. महाविद्यालय, भिण्ड	04	04	-
48.	चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	06	02	04
49.	चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड	05	05	-
50.	श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड	26	24	02
	योग	634	558	76
	शासकीय	479	424	55
	अशासकीय	155	134	21

परिशिष्ट-4

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों का ब्यौरा ग्वालियर चम्बल संभाग के चयनित महाविद्यालयों में

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	कुल	पुरूष	महिला
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	35	27	08
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	15	09	06
3.	शास.श्यामलाला पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	07	07	-
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	06	06	-
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	05	05	-
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर	200	140	60
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	05	04	01
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	05	05	-
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वा.	04	04	-
10.	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि. महाविद्यालय, ग्वा.	24	22	02
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	51	39	12
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	66	41	15
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क ग्वालियर	10	09	01
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय, बिरलानगर, ग्वालियर	05	03	02
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्या., चारशहर का नाका, ग्वा.	04	04	-
16.	कॉलेज आफ नर्सिग, कैंसर चिकित्सालय ग्वालियर	06	05	01
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर	15	15	-
18.	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकि. महाविद्यालय, गिरवाई. नाका. ग्वालियर	03	02	01
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड सांइस मेलाग्रांउड रोड, ग्वालियर	100	85	15
20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वा.	01	-	01
21.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	12	08	04
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	05	03	02
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्या. शिवपुरी	02	02	-

24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	03	02	01
25.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	18	12	06
26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय अशोक नगर, गुना	04	02	02
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	04	02	02
28.	शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	02	02	-
29.	शास. महाविद्यालय, राधोगढ़, गुना	02	02	-
30.	शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना	02	02	-
31.	शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा, बीनागंज, गुना	02	02	-
32.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	05	04	01
33.	शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	25	24	01
34.	पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया	02	02	-
35.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां	14	11	03
36.	श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर	02	02	-
37.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना	20	20	-
38.	शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	06	04	02
39.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना	02	02	-
40.	शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना	04	04	-
41.	अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	13	12	01
42.	ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना	12	12	-
43.	शास. एम. जे. एस. महाविद्यालय, भिण्ड	22	19	03
44.	शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	06	05	01
45.	शास. गांधी स्नातक महाविद्या., बालाजी, मिहोना भिण्ड	09	09	-
46.	शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड	05	05	-
47.	शास. महाविद्यालय, भिण्ड	06	05	01
48.	चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	05	02	03
49.	चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड	04	04	-
50.	श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड	09	08	01
	योग	784	625	159
	शासकीय	593	460	133
	अशासकीय	191	165	26

ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में भवन का ब्यौरा

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	भवन है	भवन नहीं है
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	है	
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार ग्वालियर	है	
3.	शास.श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वा.	है	
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड़, ग्वालियर	है	
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वा.	है	
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर		नहीं
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	है	
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा		नहीं
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वा.	है	
10.	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि.महाविद्यालय, ग्वा.		नहीं
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	है	
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	है	
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क, ग्वालियर	है	
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय, बिरलानगर, ग्वा.	है	
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्या., चारशहर का नाका, ग्वा.	है	
16.	कॉलेज आफ नर्सिंग, कैंसर चिकित्सायल, ग्वालियर	है	
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर		
18.	वसुन्धराराजे होम्यो, चिकित्सा महाविद्यालय गिरवाई नाका, ग्वालियर	है	
19.	माधव इंस्टी.आफटेक्नो. एण्ड सांइस मेलाग्रांउड रोड, ग्वा.	है	
20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वा.	है	
21.	शास.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	है	
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिपुरी	है	
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय, शिवपुरी	है	

24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	है	
25.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	है	
26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, अशोक नगर, गुना	है	
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना		नहीं
28.	शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	है	
29.	शास. महाविद्यालय, राधोगढ़, गुना	है	
30.	शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना		नहीं
31.	शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा, बीनागंज, गुना	है	
32.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	है	
33.	शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	है	
34.	पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया		नहीं
35.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां	है	
36.	श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर	है	
37.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना		नहीं
38.	शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	है	
39.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना	है	
40.	शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना	है	
41.	अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	है	
42.	ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना	है	
43.	शास.एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड	है	
44.	शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	है	
45.	शास. गांधी स्नातक महाविद्या., बालाजी, मिहोना, भिण्ड		नहीं
46.	शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड	है	
47.	शास. महाविद्यालय, भिण्ड	है	
48.	चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	है	
49.	चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड	है	
50.	श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड	है	
	योग	42	08
	शासकीय	28	07
	अशासकीय	14	01

खेल पुस्तकों का ब्यौरा
ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	संख्या
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	01
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	01
3.	शास. श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	-
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	02
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	06
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर	-
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	01
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	-
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर	-
10.	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि. महाविद्यालय, ग्वालियर	50
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	-
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	-
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क ग्वालियर	08
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय बिरलानगर, ग्वालियर	01
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, चारशहर का नाक, ग्वा.	-
16.	कॉलेज आफ नर्सिग, कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	02
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर	-
18.	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकि. महाविद्यालय, गिरवाई नाका, ग्वा.	-
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड साइंस मेलाग्रांउड रोड, ग्वा.	30
20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	-
21.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	-
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	06
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्या., शिवपुरी	500
24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	05
25.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	-

26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय अशोक नगर, गुना	-
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	-
28.	शास. माधव् महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	-
29.	शास. महाविद्यालय, राधोगढ़ गुना	-
30.	शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना	-
31.	शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा, बीनागंज, गुना	-
32.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	-
33.	शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	-
34.	पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया	-
35.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां	-
36.	श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर	-
37.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना	21
38.	शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	-
39.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना	10
40.	शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना	10
41.	अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	15
42.	ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना	-
43.	शास.एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड	-
44.	शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	-
45.	शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, बालाजी, मिहोना, भिण्ड	-
46.	शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड	10
47.	शास. महाविद्यालय, भिण्ड	58
48.	चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	10
49.	चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड	10
50.	श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड	40
	योग	715
	शासकीय	599
	अशासकीय	116

खेल पत्रिकाओं का ब्यौरा
ग्वालियर चम्बल संभाग के महाविद्यालयों में

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	संख्या
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	-
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	-
3.	शास.श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	-
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर	-
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	01
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	-
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर	-
10.	शास. महा. लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि.महाविद्यालय, ग्वालियर	03
11.	शास. कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	-
12.	शास. आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	-
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क, ग्वालियर	-
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय, बिरलानगर, ग्वालियर	-
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, चारशहर का नाक, ग्वा.	-
16.	कॉलेज आफ नर्सिंग, कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	-
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर	-
18.	वसुन्धराराजे होम्यों, चिकि. महाविद्यालय, गिरवाई नाका, ग्वा.	-
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड साइंस मेलाग्राउंड रोड, ग्वा.	02
20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	-
21.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	-
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	07
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्या., शिवपुरी	10
24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	02

25.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	-
26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय अशोक नगर, गुना	-
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	-
28.	शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	-
29.	शास. महाविद्यालय, राधोगढ़ गुना	-
30.	शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना	-
31.	शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा, बीनागंज, गुना	-
32.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	-
33.	शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	-
34.	पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया	-
35.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां	-
36.	श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर	-
37.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना	05
38.	शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	-
39.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना	01
40.	शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना	-
41.	अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	05
42.	ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना	-
43.	शास.एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड	-
44.	शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	-
45.	शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, बालाजी, मिहोना, भिण्ड	-
46.	शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड	01
47.	शास. महाविद्यालय, भिण्ड	12
48.	चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	05
49.	चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड	05
50.	श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड	05
	योग	65
	शासकीय	45
	अशासकीय	23

स्पर्धा के दौरान प्रकाश की व्यवस्था (रात्रिकालीन सत्र हेतु)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	है/नहीं
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	-
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	है
3.	शास. श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	-
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर	है
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	है
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर	-
10.	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि. महाविद्यालय, ग्वालियर	है
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	-
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	-
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क ग्वालियर	-
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय बिरलानगर, ग्वालियर	है
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, चारशहर का नाक, ग्वा.	-
16.	कॉलेज आफ नर्सिंग, कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	-
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर	-
18.	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकि. महाविद्यालय, गिरवाई नाका, ग्वा.	है
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड साइंस मेलाग्रांउड रोड, ग्वा.	है
20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	है
21.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	-
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	है
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्या., शिवपुरी	है
24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	-

25.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	-
26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय अशोक नगर, गुना	-
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	है
28.	शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	है
29.	शास. महाविद्यालय, राधोगढ़ गुना	है
30.	शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना	-
31.	शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा, बीनागंज, गुना	-
32.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	-
33.	शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	है
34.	पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया	-
35.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां	-
36.	श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर	-
37.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना	-
38.	शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	-
39.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना	-
40.	शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना	-
41.	अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	है
42.	ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना	है
43.	शास.एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड	है
44.	शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	-
45.	शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, बालाजी, मिहोना, भिण्ड	है
46.	शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड	-
47.	शास. महाविद्यालय, भिण्ड	-
48.	चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	है
49.	चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड	है
50.	श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड	है
	योग	21
	शासकीय	12
	अशासकीय	09

दर्शकों के बैठने हेतु स्टेडियम है / नहीं

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	है / नहीं
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	-
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	-
3.	शास. श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	-
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर	है
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	है
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर	-
10.	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि. महाविद्यालय, ग्वालियर	है
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	है
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	-
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क ग्वालियर	-
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय बिरलानगर, ग्वालियर	है
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, चारशहर का नाक, ग्वा.	-
16.	कॉलेज आफ नर्सिंग, कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	-
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर	-
18.	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकि. महाविद्यालय, गिरवाई नाका, ग्वा.	-
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड साइंस मेलाग्रांउड रोड, ग्वा.	-
20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकिंत्सालय, ग्वालियर	-
21.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	है
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	-
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्या., शिवपुरी	है
24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	-
25.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	है
26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय अशोक नगर, गुना	-
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	-
28.	शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	-

खेल मैदान की उपलब्ध सुविधा है/नहीं

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	आर्चरी	निशाने बाजी	रोलर स्केटिंग	बाक्सिगं	ज्यूडो	कराटे
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वा.						
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर						
3.	शास. श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर						
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर						
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर						
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर						
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वा.						
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा						
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर						
10.	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि. महाविद्यालय, ग्वालियर						
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर					है	है
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर					है	है
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क ग्वालियर						
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय बिरलानगर, ग्वालियर						
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, चारशहर का नाक, ग्वालियर						
16.	कॉलेज आफ नर्सिग, कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर						
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर						
18.	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकि. महाविद्यालय, गिरवाई नाका, ग्वालियर						
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड साइंस मेलाग्रांउड रोड, ग्वालियर						
20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर						
21.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी						
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी						
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्या., शिवपुरी						

24. शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी

25. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना — है

26. शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय अशोक नगर, गुना

27. शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना

28. शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना

29. शास. महाविद्यालय, राधोगढ़ गुना

30. शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना

31. शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा, बीनागंज, गुना

32. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया

33. शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया

34. पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया

35. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां

36. श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर

37. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना

38. शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना

39. शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना

40. शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना

41. अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना — है

42. ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना

43. शास.एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड — है

44. शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड — -

45. शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, बालाजी, मिहोना, भिण्ड — -

46. शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड — -

47. शास. महाविद्यालय, भिण्ड — -

48. चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड — -

49. चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड — -

50. श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड — -

योग	10
शासकीय	08
अशासकीय	02

महिला खिलाड़ियों के लिए स्वतंत्र सुविधा है/नहीं

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	है/नहीं
1.	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर	-
2.	शासकीय कन्या महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	है
3.	शास. श्यामलाल पाण्डवीय महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर	-
4.	शास. शिक्षा महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
5.	डॉ. भगवतसहाय महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
6.	गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर	है
7.	नवीन कन्या महाविद्यालय, तानसेन रोड, ग्वालियर	-
8.	वृन्दासहाय शास. महाविद्यालय, डबरा	है
9.	शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोहना, ग्वालियर	-
10.	शास.महा.लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि. महाविद्यालय, ग्वालियर	-
11.	शास.कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर	है
12.	शास.आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर	है
13.	माधव महाविद्यालय, नई सड़क ग्वालियर	-
14.	जे.सी. मिल्स कन्या महाविद्यालय बिरलानगर, ग्वालियर	है
15.	महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, चारशहर का नाक, ग्वा.	है
16.	कॉलेज आफ नर्सिग, कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	है
17.	पी.जी.व्ही. महाविद्यालय, जीवाजीगंज, ग्वालियर	है
18.	वसुन्धराराजे होम्यो. चिकि. महाविद्यालय, गिरवाई नाका, ग्वा.	-
19.	माधव इंस्टी. आफ टेक्नो. एण्ड साइंस मेलाग्रांउड रोड, ग्वा.	-
20.	कॉलेज आफ लाईफ सांइस कैंसर चिकित्सालय, ग्वालियर	-
21.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी	-
22.	शास. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी	है
23.	शास.तात्याटोपे राज्य शारीरिक शिक्षण महाविद्या., शिवपुरी	है
24.	शास. महाविद्यालय, कोलारस, शिवपुरी	-

25.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना	है
26.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय अशोक नगर, गुना	-
27.	शास. कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना	-
28.	शास. माधव महाविद्यालय, चन्देरी, गुना	है
29.	शास. महाविद्यालय, राधोगढ़ गुना	है
30.	शास. महाविद्यालय, आरोन, गुना	-
31.	शास. महाविद्यालय, चाचौड़ा, बीनागंज, गुना	-
32.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया	है
33.	शास. कन्या महाविद्यालय, दतिया	-
34.	पीताम्बरा पीठ महाविद्यालय, दतिया	है
35.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुरकलां	-
36.	श्रीगणेश स्नातक महाविद्यालय, विजयपुर, ग्वालियर	-
37.	शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना	है
38.	शास. कन्या महाविद्यालय, मुरैना	है
39.	शास. नेहरू स्नातक महाविद्यालय, सबलगढ़, मुरैना	-
40.	शास. महाविद्यालय, जौरा, मुरैना	-
41.	अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना	है
42.	ऋषि गालब महाविद्यालय, मुरैना	-
43.	शास.एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड	है
44.	शास. कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	-
45.	शास. गांधी स्नातक महाविद्यालय, बालाजी, मिहोना, भिण्ड	-
46.	शास. स्नातक महाविद्यालय, आलमपुर, भिण्ड	है
47.	शास. महाविद्यालय, भिण्ड	है
48.	चौधरी दिलीपसिंह कन्या महाविद्यालय, भिण्ड	है
49.	चौधरी यदुनाथ सिंह महाविद्यालय, भिण्ड	-
50.	श्रीराम नाथ सिंह महाविद्यालय, गोरमी, भिण्ड	है
	योग	24
	शासकीय	17
	अशासकीय	07